

राजस्थान भारती प्रकाशन

हम्मीरायण

भूमिका लेखक

डा० दशरथ शमा एम० ए० डी० लिट्

सम्पादक

भँवरलाल नाहटा



प्रकाशक

सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर ।

समाप्ति १०००]

स० २०१७

[मू० ३]

प्रकाशक श्री जगन्मोहन - न. न. नन्दि, जयपुर

श्री लालचद कोठारी

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

वीकानेर

मुद्रक

श्री शोभाचद सुराणा

रेफिल आर्ट प्रेस

३१, बडतला स्ट्रीट, कलकत्ता-७

फोन : ३३-७९२३

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसच इस्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिकर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के मुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हम प्रारम्भ से ही मिलता रहा है ।

सत्या द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१ विशाल राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश

इस अवधि में विभिन्न स्रोतों से सत्या लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का सङ्कलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशा के ढंग पर, लक्ष्य समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसका अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी गई हैं । यह एक अत्यन्त विशाल याजना है, जिसकी सतोपजनक क्रियाविति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्राणित द्रव्य साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना संभव हो सकेगा ।

२ विशाल राजस्थानी मुहावरों का कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भण्डार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है । अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरों के दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग करने योग्य रूप में संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इस प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल सगह साहित्य-जगत को दे सके तो यह मस्या के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनयों काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कलाग्रण, ऋतु काव्य । ले० श्री नानुराम मस्कर्ता
२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीमान् जोशी ।
३. वरस गाँठ, मौलिक कहानी संग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

‘राजस्थान-भारती’ में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें, कहानियाँ और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४ ‘राजस्थान-भारती’ का प्रकाशन

इस विस्तृत शोधपत्रिका का प्रकाशन मस्या के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों में प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कठ मे प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है । इनका भाग ५ अङ्क ३-४ ‘डा० लुइजि पित्रो तैरिसितोरी विशेषांक’ बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-मेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है । अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों में लगभग ८०’ पत्र-पत्रिकाएँ हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओं के लिये ‘राजस्थान भारती’ अनिवार्यतः सग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अग्ररचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५ राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रद्धेय साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं स्वमुल्यम कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित भूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से सशुद्धतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (क्यामतला) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सवप्रथम जानकारी 'राजस्थान भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामतरामा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८ राजस्थान के जन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९ मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जसलमेर क्षेत्र के सफ़ा लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, सोरिया और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी बहायतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सवप्रथम 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जन लेख संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११. जमवत उद्योत, मुंहता नैगमी री स्यात और अनोखी ग्रान जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है ।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुमधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सबब में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है ।

१३. जैमलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वग प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं ।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुमधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम में एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है । इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है ।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुडजि पिग्रो तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोक-मान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं ।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएँ और कहानियाँ आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विद्यु नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है । विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है ।

१६ बाहर से स्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है । डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदाम, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० मुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिश्री-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय स्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं ।

गत दो वर्षों में महाकवि पृथ्वीराज राठौड आनन की स्थापना की गई है । दोनो वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ घोर ५० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०,
डू डलोद, धे ।

इस प्रचार सस्था अपने १६ वर्षों के जीवन काल में, ससृष्ट, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस सस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके वायव्यताप्रा ने 'राजस्थान भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि सस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अन्ध्र संदेभ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधना के अभाव में भी संस्था के वायव्यताप्रा ने साहित्य की जो मौन और एकांत साधना की है वह प्रकार में आनन्द पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यन्त पर्यटन ही प्रकार में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनप रत्ना को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तब पत्रिका तथा कृतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अथ महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन कर देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हमें भी पता है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोधन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इन मन्त्र म राजस्थान सरकार को लिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उनकी ही राशि मिलने पर स मित्तपर रु० रु० ३००००) तीस हजार की सहायता. राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है ।

- | | |
|---|---|
| १. राजस्थानी व्याकरण— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| २. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध) | डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल |
| ३. अचलदास खीची की वचनिका— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| ४. हमीरायण— | श्री भंवरलाल नाहटा |
| ५. पद्मिनी चरित्र चौपई— | ” ” ” |
| ६. दलपत विलास | श्री रावत सारस्वत |
| ७. डिगल गीत— | ” ” ” |
| ८. पंवार वश दर्पण— | डा० दशरथ शर्मा |
| ९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली— | श्री नरोत्तमदास स्वामी और
श्री बद्रीप्रसाद साकरिया |
| १०. हरिरस— | श्री बद्रीप्रसाद साकरिया |
| ११. पीरदान लालस ग्रंथावली— | श्री अग्ररचन्द नाहटा |
| १२. महादेव पार्वती वेलि— | श्री रावत सारस्वत |
| १३. सीताराम चौपई— | श्री अग्ररचन्द नाहटा |
| १४. जैन रासादि संग्रह— | श्री अग्ररचन्द नाहटा और
डा० हरिवल्लभ भायाणी |
| १५. सद्यवत्स वीर प्रबन्ध— | प्रो० मंजुलाल मजूमदार |
| १६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमाजलि— | श्री भंवरलाल नाहटा |
| १७. विनयचन्द कृतिकुसुमाजलि— | ” ” ” |
| १८. कविवर धर्मवद्धन ग्रंथावली— | श्री अग्ररचन्द नाहटा |
| १९. राजस्थान रा दूहा— | श्री नरोत्तमदास स्वामी |
| २०. वीर रस रा दूहा— | ” ” ” |
| २१. राजस्थान के नीति दोहा— | श्री मोहनलाल पुरोहित |
| २२. राजस्थान व्रत कथाएं— | ” ” ” |
| २३. राजस्थानी प्रेम कथाएं— | ” ” ” |
| २४. चंदायन— | श्री रावत सारस्वत |

२५ भङ्गली—	श्री अग्ररचन्द नाहटा
।	म विनय सागर
२६ जिनहय प्रयावली	श्री अग्ररचन्द नाहटा
२७ राजस्याज्ञी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण	” ”
२८ दम्पति विनोद	” ”
२९ हीयाली राजस्थान का बुद्धिवधक साहित्य	” ”
३० समयसुन्दर रासत्रय	श्री भवरलाल नाहटा
३१ दुरसा भादा प्रयावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जसलमेर ऐतिहासिक साधन सग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरत्नस प्रयावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासा (प्रो० गोवद्धन शर्मा), राजस्थानी जन साहित्य (ले० श्री अग्ररचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्याम) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि काय की महत्ता एवं गुणता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादन तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास मन्त्रालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और घाट इन एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस महायत्ना के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रकट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। सत्या उनको सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थंडे समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप सस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय वीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन सग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भंडार वीकानेर, मोतीचंद खजांची ग्रन्थालय वीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भंडार वीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, प० हरदत्तजी गोविंद व्य.स जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन अमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनक्वपि भवत्येव प्रमाहतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्बृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुभावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मा भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

वीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
स० २०१७
दिसम्बर ३, १९६०.

निवेदक
लालचन्द्र कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
वीकानेर

दो शब्द

बीरवर चौहान इम्मीर इतिहास प्रसिद्ध महान् व्यक्ति हुए हैं जिनके ह-के सम्बन्ध में "निरिया तेल हवीर हठ, चट्टैन दूजी बार' पर्याप्त प्रख्यात कहावत है। राजस्थान के इस महान् वीर के सम्बन्ध में पैनाचाय नयचन्द्र मूरि का 'इम्मीर महाकाव्य' बहुत बरा पूर्व प्रकाशित हो चुका है, और उसका नवान छाहरण पुराणत्वाचाय श्रीजिनविजयजी के सम्पादित कई वर्षों से छपा पड़ा है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाया। नागरी प्रचारणी समाज कवि जोषरात्र का इम्मीर रामो व 'हमर हठ' ग्रन्थ में बहुत वर्षों पूर्व प्रकाशित हुए थे। प्राकृत पैगम्भ में इम्मीर सम्बन्धी पुस्तक पद्य एवं मैथिल कवि विद्यापति की पुरुषरीत्या में दयावीर प्रबन्ध भी प्रकाशित है, पर हमारे सम्बन्धी प्राचीन राजस्थानी स्वतंत्र रचना प्राप्त न होना क्यों से भवता था। सन् १९५४ में श्री महावीरजी तीर्थकोत्र अनुमानान मन्दिनि प्रयपुर की भारत राजस्थान के जैन गायमठार्य की ग्रन्थ सूत्राका हिन्दी भाग प्रकाशित हुआ जो दिगम्बर जैन बड़ा तेरावंधी मंदिर के गुटका न० २६२ में स० १-३८ में रचित राय न हमीर दे चौपड़' होने की सूचना पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। उक्त गुटका को भंगवा कर उसकी प्रतिलिपि कर ली गई। प्रकाशित सूत्रीय रचयिता के सम्बन्ध में टिप्पण नहीं था पर जैन मंगलाने पर कवि का नाम 'मिश्र मंगल' ज्ञान हो गया और इस रचना का परिषद बह-धारणा ब० ४ अंक ३ में 'महान् वीर इम्मीर दे चौपड़' नामक एक प्राचीन राजस्थानी रचना नामक टिप्पण में दे दिया गया। परन्तु मुनि जिनविजयजी से इस महत्त्वपूर्ण अज्ञान रचना के

विषय में जानचीत होने पर उन्होंने इसे हमीर महाकाव्य के परिशिष्ट में प्रकाशित करने के लिए हमारे करवायी हुई प्रतिलिपि लेली पर वह ग्रन्थ अद्यावधि प्रकाशित नहीं हो पाया। गत वर्ष सादल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट को भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार से प्राचीन राजस्थानी ग्रन्थ प्रकाशनार्थ आर्थिक सहायता प्राप्त होने पर इस रचना को सस्या की ओर से प्रकाशित करना निश्चित किया गया और उस गुटके को पुनः जयपुर से मँगकर प्रसक्तापी कर ली गई। इसी बीच उदयपुर में मुनि कान्तिसागरजी के सग्रह में इस राम की दो प्रतिया होने का ज्ञात हुआ तो श्रीनरोत्तमदासजी स्वामी को उन कृतियों की प्रतियाँ या नकल भेजने के लिए लिखा गया और उन्होंने जो प्रारम्भ त्रुटित प्रति मुनि जी से मिली उसके आधार से पद्यांक १२७ से ३१६ तक का पाठ सम्पादन करके भेजा। मुनिजी के पास से दूसरी पूर्ण प्रति प्राप्त न होने से जयपुर वाली प्रति को ही मुख्य आधार मानकर प्रकाशित किया जा रहा है। स्वामी जी की प्रतिलिपि का भी इसमें यथास्थान उपयोग कर लिया गया है और पृष्ठ ६७ से ७९ तक उदयपुर की प्रतिके पाठान्तर दिये गए हैं।

भाटा व्यास की रचना को अवनक वचाये रखने का श्रेय जैन विद्वानों को है। मुनि कान्तिसागरजी के सग्रह में इसकी जो पूर्ण प्रति का विवरण देखने को मिला उसके अनुसार उस प्रति में भी पर्याप्त पाठभेद है। रचनाकाल व रचयिता के सम्बन्ध में भी पाठ भिन्न है।

१) "हम्मीरायण अति रसाल, भावकलश कहि चरित्र रसाल"

अन्तिम पद्य में भी भाटा की जगह 'भावकलश कहि सुफला फलइ' पाठ है एवं रचना काल पनरइसइ तात्रीसइ जाणि" पाठ है यह प्रति स०
हुई है।

माधकृष्ण रचिन कृष्णम चौपड़ का विवरण भी मुनिजी के विवरण
ग्रन्थ (अप्रकाशित) में देखा गया है। प्रस्तुत रास का प्रति एवं प्रतिलिपि
प्राप्त करने में श्री कस्तूरचन्द्रजी कासलीवाल मुनि कानि सागरजी व
स्वामी नरोत्तमदासजी का सहयोग प्राप्त हुआ, इसलिए हम उनका
आभारी हैं।

यद्यपि जयपुर वाली प्रतिलिपि कृष्ण ने इसका नाम राय हमीर के चौपड़ लिखा है, चौपड़ छंद का प्रचलन हांग में बड़े समय में है पर मूल प्रथकार ने प्रारम्भ व अन्त में हमीरायण शब्द का प्रयोग किया है अतः हमन में इसी नाम को अपनाया है।

यह रचना ३२६ पद्यांकी छोटी सी होना इसका साथ में हमीर सम्बन्धी अन्य फुटकर रचनाओं को देना आवश्यक समझा गया अतः परिशिष्ट न० १ में प्राकृत पैल्लम् के हमीर सम्बन्धी ८ पद्य हिन्दा अनुवाद सहित प्राकृत ग्रन्थ परिपद के प्रथमाङ्क ५ में प्रकाशित प्राकृत पैगलम् के नवीन संस्करण से उद्धृत किये गये हैं इसलिए इस ग्रन्थ के सम्पादक डा० भालाचन्द्र व्यास और प्राकृत ग्रन्थ परिपद के सहायकों के आभारी हैं।

परिशिष्ट न० २ में हमीर सम्बन्धी २१ कवित्त व दोहे अनूप सस्कृत लाइब्रेरी के राजस्थानी विभाग का प्रति न० १०६ (स १७९८ लिखित) से प्रतिलिपि करके दिये गए हैं। और उमा लाइब्रेरी की प्रति न० ९५ में माट खेम रचिन हमीर के कवित्त एव वान (स १७०६ लिखित) प्राप्त हुए उन्हें परिशिष्ट न० ४ में प्रकाशित किये गए हैं। एतदर्थ उपर्युक्त लाइब्रेरी के व्यवस्थापकगण धन्यवादाह हैं।

। कवित्त न० ६, १०, १९ में कुछ पाठ नुत्तित हैं एवम् कहीं कहीं पाठ भी अशुद्ध हैं अतः इसकी अन्य पूरा व पुद्ध प्रति अपेक्षित है।

मैथिल कवि विद्यापति जी 'पुरुष परीक्षा' ग्रन्थ के दयावीर तथा में वीर हम्मीर का वृत्तान्त पाया जाता है। पुरुष परीक्षा ग्रन्थ अब अप्राप्य ना है, इसलिये हमारे ग्रन्थालय के प्राचीन संस्करण ने दयावीर तथा को हिन्दी अनुवाद के साथ परिशिष्ट न० ३ में डे दिया गया है।

हम्मीर सम्बन्धी अप्रकाशित रचनाओं में कवि महेश के हम्मीर रामे की दो वृत्तिन प्रतियाँ हमारे संग्रह में हैं। उस ग्रन्थ की कडे पूर्ण प्रतियाँ राजस्थान प्राच्य विद्याप्रतिष्ठान, जोधपुर आदि के संग्रह में हैं उनकी प्रतिलिपि प्राप्त करने का भी प्रयत्न किया गया पर उन प्रतियों में अत्यधिक पाठ भेद होने ने उसका स्वतंत्र सम्पादन करना ही उचित समझा गया अतः इसमें सम्मिलित नहीं किया गया।

हम्मीरायण नामक एक और काव्य भी प्राप्त है जिसकी एक अशुद्ध-सी प्रति राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान ने और उसके बृहद् रूपान्तर की प्रतिलिपि स्वर्गीय पुरोहित हरिनारायण जी के संग्रह में है, वह ग्रन्थ काफी बड़ा होने से मुनिजिनविजय जी ने श्री अजरचन्द जी नाहटा के सम्पादन में राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान से प्रकाशन करना निर्णय किया है।

हम्मीरदेव वचनिका नामक एक और महत्वपूर्ण रचना की प्रति श्री उदयशङ्कर जी शास्त्री के संग्रह में है, उसका भी स्वतन्त्र रूप में सम्पादन कर रहे हैं इसलिये उसका उपयोग यहाँ नहीं किया जा सका है।

माननीय डा० दशरथ शर्मा ने इस ग्रन्थ की विस्तृत व शोधपूर्ण प्रस्तावना लिख देने की कृपा की है इसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। प्रकाशित रचनाओं का कथासार देने का विचार था, पर उसका समावेश डा० दशरथ जी की भूमिका में हो गया है अतः इस ग्रन्थ के पृष्ठों को अनावश्यक बढ़ाना उचित नहीं समझा गया।



भूमिका

(हम्मीरायण का पर्यालोचन)

राजस्थानी भाषा अपने वीर काव्यों के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध हो चुकी है। कवि सम्राट श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में 'राजस्थान ने अपने रक्त से जो साहित्य निर्माण किया है उसकी जोड़ का साहित्य और कहीं नहीं पाया जाता किन्तु इस 'वेजोड़' साहित्य में से अभी तक कुछ रत्न ही हमारे सम्मुख आ सके हैं। वीर रस के प्रेमी अब रणमल छन्द और का'हडदे प्रबंध से परिचित हैं। रतन महेसदासोतरी की वचनिका और अबलदास खीची की वचनिका के सुसम्पादित संस्करण भी अब हमें प्राप्य हैं। बीरू सुन्ना नगराजोत का राठ 'जइतसी-रठ छन्द' भी मनस्वी इटालियन विद्वान् तेसीनोरी की कृपा से मुद्रित हो चुका है। कुछ प्रकीर्णक रचनाओं का भी प्रकाशन हुआ है। किन्तु यह प्रकाशित साहित्य अप्रकाशित राजस्थानी वीर रसात्मक साहित्य का एक सामान्य अंश मात्र है। शायद ही कोई ऐसा राजस्थानी वीर हो जिसके लिये कुछ न लिखा गया हो। और हम्मीर तो राजस्थान के उन आदर्श वीरों में से है जिसकी कीर्ति का स्थापन कर राजस्थान का कवि समाज कुछ विशेष गौरव की अनुभूति करता रहा है। इन्हीं कवियों में 'भाण्डठ' भी हैं जिसकी कृति 'हम्मीरायण' पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है।

हम्मीरायण का रचयिता

हम्मीरायण के रचयिता के बारे में मन्तेइ के लिए कुछ विद्वान् अवकाश नहीं हैं। जयि ने अपना नाम पद्य १, ५१, ६०, १०६, ११४, १७३, २२२, २४२, २४४, २८८, ३२६, आदि में 'भाड', 'भाण्ड' और 'भाण्ड' रूप में दिया है, जिससे स्पष्ट है कि नाम 'भाडा' या 'भाण्डा' रहा होगा जिसका राजस्थानी में कर्तृ-स्वरक के एक वचन में 'भाडड' या 'भाण्डड' रूप होगा। जिस प्रकार भाण्डा के समानार्थिक रूप 'धीका' को 'धीकड' या 'धीकोडा' कहते हैं। उन्हीं तरह हम्मीरायण के कवि को हम 'भाण्डड' या 'भाण्डोनी' भी कहे तो टोका होगा। हम्मीरायण के कर्ता व्यास थे जिनका मदा ने कथा-वाक्यादि कहना सुन्य व्यवसाय रहा है। अन्त-रामायणादि की कथा के प्रेमी 'भाण्डड' व्यास का वीर-व्रती हम्मीर की ओर आटुष्ट होकर 'हम्मीरायण' की रचना करना स्वाभाविक था।

कवि ने अपने पिता का नाम कहीं नहीं दिया है। डा० माताप्रसाद गुप्त का यह मत कि हम्मीरायण किसी काश्यपराज के पुत्र भाण की रचना है, त्रान्तिमूलक है। वास्तव में वे इस चउपडे का अर्थ ठीक न समझ पाए हैं :—

कान्तिपराड तणठ पुत्र भाण । श्री सूरिज प्रणमड सुविहाण ।

पुहमि रायणि अति मुरसाल । भाड नायो चरिय सुवीसाल ॥४॥

इस चौपाई का भाण तो 'भाणु' या सूर्य है जो कश्यप का पुत्र है। उसी का दूसरा नाम सूर्य है। कवि उसे सुविधान से प्रणाम करता है।

टा० गुप्त ने शायद पृथ्वीराज द्वारा प्रनाथ को प्रपित पत्र व इस पत्र पर ध्यान नहीं दिया है —

पानठ जो पनसाह, बोल मुख हूँता वयण ।

मिहिर पिछ दिस माह, ऊँरी कासपराव टण ॥

मह 'कासपराव टण (पुत्र)' और 'कासिपराठ तणठ' पुत्र एक ही हैं । 'मिहिर' मातृ और मूरिज का समानाधिक है । कवि ने अपनी निजी नाम ता चटपट्ट की दूसरी अर्थात्कि व दूसरे चरण में दिया है, और इसी नाम की आवृत्ति उसने ५१ ६० आदि पदों में भी की है जिनका निदेश हम अभी कर चुके हैं । ममप्र कथा की अच्छी तरह आवृत्ति कर टा० गुप्त यदि कवि का नाम निर्दिष्ट करने का प्रयत्न करते तो उनसे यह भूल न होती ।

हम्मीरायण की कथा

हम्मीरायण का कथा भाग कुछ विनाय लम्बा नहीं है । इस रामायण से मुक्ति किया जाए तो शायद यही कहना पड़े कि इसमें लुब्धाकाण्य मात्र ही है । हम्मीर व भारद्वाज की कथा को खपा छोड़ कर इसकी कथा प्रायः अज्ञात और हम्मीर के सपर उ ही आरम्भ होती है । संभव में कथा निम्नलिखित है :—

अश्वमेध का पुत्र हम्मीरदे बहुभाष रणधर्मोर का राजा था । उसका माह बीरव गुजराज था और तारुंगी रणमल गया रायपाल उमरु प्रधान थे । हम्मीर ने प्रधानों का भाषी पूजा गुजार में और बहुत सी सेना दी थी ।

इसी राज्य में हम्मीरों के दो विद्रोही सरदार, महिमासाहि और गीर 'गामर' उन्टवों की बहुत सी सेना का नाश कर रणधर्मोर भा पहुँच । हम्मीर ने उन्हें शरण दो, और उन्हें दो लाख वन ही नहीं

बहुत अच्छी जागीर भी दी। महाजनों ने इस नीति की कट आलोचना की। किन्तु हम्मीर ने उनकी मलाह पर ध्यान न दिया।

उल्लखों को जब ये समाचार मिले, तो उसने अत्यन्त क्रोध होकर हम्मीर पर चण्डो की कानो कान जिम्मी की खबर भी न लगी। किन्तु अकस्मान् 'जाजट' देवड़ा ठहर में आ निरला। उसने कुछ गुप्तजाननी सेना नाट की और हम्मीर को रणथम्भोर पहुँच कर खबर भी दी। फलतः जब उल्लखों हीराघाट पहुँचा, हम्मीर सुतभेद के लिए तैयार था। हम्मार, महिमानाहि, मीर गामर और हम्मीर के राजपूतों में पगाजित हाकर उल्लखा मैदान में भाग निरला।

अलाउद्दीन को जब यह सूचना मिली तो उसने सब सेना एकत्रित कर रणथम्भोर को आ घेरा, और मोन्हामाट को दून के रूप में भेज कर हम्मीर को कहलाया कि बड़ राजकुमारी देवलदे, धारु और वाह देव्याओ, अनेक गटो और हाथियों को बादशाह की नजर करें। दोनों मीर भाटयो की विशेष रूप में मांग थी। उनके बदले में सुतान हम्मीर को माँदू, उज्जयिनी आदि देने के लिए तय्यत था। किन्तु हम्मीर तो एक दर्भाग्र भूमि माँ देने के लिए तैयार न हुआ। मोन्हा ने कीर्ति और लक्ष्मी रूपी दो कन्याओ को हम्मीर के सामने प्रस्तुत किया था। हम्मीर ने कीर्ति को वरण करना ही उचित समझा।

हम्मीर के पत्र के उत्तर में दाहिमा, कलवाहा, साटो आदि छत्तीस राजकुलो के लोग रणथम्भोर में आकर एकत्रित हो गए। महिमासाहि के नेतृत्व में शाही सेना पर आक्रमण कर उन्होंने निसरखान को मार डाला। अनेक दूसरे मीर भी मारे गए। गड में खूब उत्सव हुआ। बादशाह ने

युद्ध घाट रखा किन्तु साब ही में गढ़ को लेने के अन्य उपाय भी सोचने लगा ।

हमारे एक दिन सिंहासन पर बैठा हुआ युद्ध देख रहा था । महिमामाहि भी यही था । वह चाहता तो बादशाह को अपने बाण का निशाना बना लेता, किन्तु हमारे के मना करने पर उसने कबल अलाहान के मार्गों राजदूत काट दा ? ।

मुल्तान ने रणधम्मारे का दमन करने का अब एक और उपाय किया । उसने रण की 'खाइ का लकड़ियों से पाटो' का प्रयत्न किया । किन्तु हमारे के मुनिकों ने लकड़ियाँ जला दी । उसके बाद अलाहान की भाषा से मुनिकों ने बालू से उसे मरना शुरू किया । बालू से बाण का स्थान मरने पर उसके सैनिकों के हाथ गढ़ के कंगूरी तक पहुँचने लगे । हमारे विज्यातुर हुआ । किन्तु गढ़ के अधिष्ठाता ने ही शृषा से जमा पानी भाया कि सब बाण बह गई ।

गढ़ में फिर आनन्द होने लगा । धार और बारू नाम की व्यापक जमा करने की उसकी समाधि मुल्तान को पीठ दिखाकर टोपी । मुल्तान ने महिमामाहि के गढ़ को हँसी कर लिया था । उसने जमान में युद्ध हावर एक ही मार में उन दोनों व्यापकों को मार गिराया । बादशाह ने उसे बहुत इनाम दिया ।

बादशाह ने लकड़ें युद्ध चला रहा । अन्य में मुल्तान ने सन्धि की बात भीत आरम्भ की । रायपाल और रणपाल को अन्यत्र विरह्य समस्त कर हमारे ने मुल्तान के पास भेजा । अभी तक उनके पास आधी बूंदी की खागीर थी । पूरी बूंदी का प्राप्ति का आश्वासन मिलने पर इन लुट

प्रधानों ने सुल्तान को वचन दिया कि सेना के प्रयोग के बिना ही वे उसे दुर्ग दिलवा सकेंगे ।

गट में पहुँच कर इन दुष्टों ने मूठ मूठ ही बातें बनाते हुए राजा से कहा, “सुल्तान देवलदेवी को मांगता है ।” कुमारी भी आत्मोत्सर्ग के लिए तैयार हुई । किन्तु हम्मीर ने उसकी बात पर ध्यान न देकर अपनी सेना तैयार करनी शुरु की । अपने प्रधानों की दगावाजी को अब भी वह न समझ सका । दुर्ग के धान्यरत्नक से मिल कर इन्होंने सब धान्य इधर उधर करवा दिया । फिर अलाउद्दीन पर हमला करने के बहाने से हम्मीर से सेना लेकर वे शत्रु से जा मिले । हम्मीर को अब कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई न दे रहा था जिसके हाथ में वह इधियार दे । इसलिए प्रजा को बुला कर उनसे कहा, “मैं राजा हूँ, तुम मेरी प्रजा हो” कड़ो, मैं तुम्हें कहां पहुँचाऊँ ? और जात्रा तुम तो परदेगी पाहुणे हो, तुम अपने घर जाओ ।” किन्तु जाने के लिए कोई तैयार न हुआ । महिमानाहि ने तो यह भी कहा, “यदि हमें देने से गढ़ बच सके तो इसे बचाओ ।” हम्मीर के लिए यह असम्भव था ।

मीरो के कहने पर हम्मीरने धान्यागारों की देखभाल करवाई तो मालूम हुआ कि वे सब खाली हैं । अब जौहर के सिवाय उपाय ही क्या था ? उसकी तैयारी हुई । राजा ने वश रक्षा के लिये वीरम को गट से जाने के लिये कहा । किन्तु जब वह तैयार न हुआ तो उसने कंवर को तिलक दिया और विदा करने से पूर्व उसे उचित शिक्षा दी ।

हाथियों और घोड़ों को राजपूतों ने मार डाला । जमहर (जौहर) की चिताएँ जल उठीं । सवा लाख का संहार हुआ । फिर सब स्थानों से

विदा मांगता हुआ जब हम्मीर कोठारों में गया तो उन्हें मरा पाया। किंतु उसे अब जीने की इच्छा न रही थी। उस समय वीरमदे हम्मीर दे, मार और महिमासाहि भाट और पाहुणा जाजा केवल ये व्यक्ति दुर्ग में बतमान थे। उचित स्थान पर अपनी अत्येष्टि और दोनों भीरों को दफनाने का काम हम्मीर ने भाट को सौंपा। सबसे पहले मीरा ने, फिर देवड़ा जाजा न और उसके बाद वीरम ने युद्ध किया। हम्मीर ने अपने हाथों ही अपना गला काटा। यह सब सप्ताह जानता है कि सवत् १२७१ ज्येष्ठ अष्टमी शनिवार के दिन राजा मरा और गढ़ टूटा।

सुनह रणक्षेत्र में बादशाह पहुँचा। उसने रणमल से पूछा इनमें तुम्हारा साहिब कौन है। मल से मस्त उस अँधे ने पेर से राव को दिखलाया। उसी समय नरह भाट ने हम्मीर की विस्दावला का उच्चारण किया और भलाउद्दीन की भी प्रशंसा की। उसने एक एक सिर दिखा कर सब भीरों का घणन किया। 'रणथमौर जलहरा है जिसमें हम्मीर शिव स्थान पर बतमान है। अजलदे देवड़ा जाजा' ने उस साहिब की अपने शिर में पूजा की। यह राजा का बंधुवर वीरमदे है। यह तुम्हारे पर क मीर महिमासाहि और गामरू हैं। वह शरणागतों की रक्षा करने वाला हम्मीर है।

बादशाह ने नरह भाट को मुहमांगा दान मांगने को कहा। नरह ने स्वामिद्वेषियों के घात की प्रार्थना की। सुल्तान न रणमल, रायपाल और कोठारी की अँगूठे तक खाल निकलवा डाली। भाट प्रसन्न हुआ। राजपूता को दाग दिया दोनों मीरा को दफनाया, और राजा को गङ्गा में प्रवाहित किया और फिर भाट की प्रार्थनानुसार उसे भी मरवा दिया भाटने हम्मीर का बदला लेकर अपना नाम रखा।

'भाण्डव ने' यह कथा सामवार के दिन कार्तिक सुदी सप्तमी सवत् १५३८ के दिन कही (पृष्ठ ३२५)

अर्थ-विषयक कुछ मतभेद

इम इस प्रस्तावना को प्रायः समाप्त कर चुके थे। उम समय श्री अगस्त्यजी नाहटा से हमें 'इमीर टे चठपई' पर हिन्दुस्तानी (१९६०, जनवरी-मार्च) में प्रकाशित डॉ० माताप्रसाद गुप्त का लेख मिला। डा० गुप्त ने हर्म्मारायण की कथा पर काफी रोशनी डाली है, जिस अर्थ पर हम पहुँचे हैं और जो अर्थ डा० गुप्त ने दिया है, उनमें अनेकज. पर्याप्त मतभेद हैं। अतः कुछ और लिखने से पूर्व उन स्थला पर कुछ विचार करने के लिए हम विवश हुए हैं। क्या कं सत्यासत्य की परीक्षा उमका अर्थ निश्चित होने पर ही हो सकती है।

डा० माताप्रसाद कृत अर्थ

प्रस्तावित अर्थ और सुझाव

(१) "वह (कवि) अपने को काश्यप राव का पुत्र भाण बताना है।"

(१) काश्यपराज का पुत्र मानु है। उन श्री सूर्य को मैं सविधान प्रणाम करता हूँ।" हम ऊपर बना चुके हैं कि कवि का नाम 'भाट', भाटउ या 'भाण्डउ' व्यास है।

(२) "गढ के परकोटे में चार प्रमुख पोलिया थी और प्रत्येक पौली पर नौलखी चट्टिका होती थी।"

(२) चौपाई इस प्रकार है —

कोटि जिसो हुबड इन्द विमाण,
च्यारि पोलि निणि कोटि प्रवान ।
पोलि चटि नवलखीज होड,
चडरासी चहुटा नितु जोड ॥९॥

इसमें प्रत्येक पौली पर नौलखी चट्टिका होती थी। ऐसा अर्थ तो इसमें कहीं दिखाई नहीं पडता। वास्तव में नौलखी तो एक पौली विशेष है जो अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है।

(३) 'राजा का आवास
त्रैलोक्यमन्दिर का नाम
का था, भार गढ़ के पर
कोट में एक अल्टून पौली
थी जिसके बीच में एक
मुटिन रणस्तम्भ था ।'

(३) चौपाइ इस प्रकार हैं —

त्रैलोक्यमन्दिर राय आवास
सीला ऊन्हा धवलहरि पासि ।
भूखी पालि अछइ तिणि कोटि
रिणनइ धम्म विचर उइ त्रोटि ॥१७॥

यहाँ टा० गुप्त और अधिक चूके हैं । त्रैलोक्य
मन्दिर एक प्रासाद विनोय की सजा है । ऐसी ही
सजाएँ श्रीकानेर और राणकपुर के त्रैलोक्य दीपक
प्रासादों में भी अनुसंधेय हैं । किन्तु इन टा० गुप्त
के पहले पक्षिक अध को यथा तथा ग्राह्य भी मान
ते । ना भी हमारा पक्षिक के अर्थ में महामत जाना तो
असम्भव है । यह समझ में नहीं आता कि 'पौलिके
बीच में मुटिन रणस्तम्भ' का अर्थना ही क्या कर
सकें ? वास्तव में 'रण' दुर्ग की निकटस्थ प्रसिद्ध
पहाड़ी है जिसका उल्लेख प्रायः सभी इतिहासकारों ने
किया है । 'स्तम्भ' से यह पहाड़ अभिप्रेत है जिस पर
दुर्ग है । इनके बीच में गहरा खण्ड है (हमें आगे
हमारा रणमत्तार का भौगोलिक चित्र) । कवि ने
इसी मध्य का रिण नद धम्म विचर उइ त्रोटि कह
कर प्रकटित किया है । रिण का नाम चण्ड में
भाग भी है ।

(८) “पहले उलुगखा ने इनमें पाँच लखिया मांगी थीं, किन्तु इन्होंने उसे आधी लखि भी नहीं दी, फिर भी बादशाह के यहाँ इनका मान था, इसलिए ये उलुगखा की सेना में बने हुए थे।”

(४) टा० गुप्त का यह अर्थ हमारे विचार से अस्पष्ट है और अशुद्ध भी। लखि का पारिभाषिक अर्थ एक ज्ञान विशेष है जो इस प्रसंग में उपयुक्त नहीं है, यदि ‘लखि’ को हम ‘प्राप्ति’ के अर्थ में लें तो आधीलखि और पाँच लखिया अर्थ समझाने की आवश्यकता है। हमीरायण के उद्धरण ये हैं :—

अलुखान जि मगियट, अम्ह तीरड पंचाय ।

घणा दिवस म्हे ऊलभ्या, लेउ न दीधट आय ॥४०॥

अम्हनड मान हुतउ एनलड, घरि वैठा लडना कणडलड ।

पातिमाह नड करता सलाम, कटक उलगना

अलुखान ॥४५॥

इन पद्यों का वास्तविक अर्थ मुसलमानी इतिहासों को देखने से ज्ञात होता है जिनके अवतरण हमने आगे उद्धृत किए हैं। इस्लाम जानून के अनुमार लट का कुछ भाग सुल्तान का और कुछ सैनिक का होना है। उलुगखा ने गुजरात से आते समय इस राज्य मार्ग को, जो यहाँ ‘पंचाय’ (पञ्चार्य) के रूप में प्रस्तुत है बलात् सिपाहियों से वसूल किया था। मुहम्मद शाह और उसके साथी ‘अर्ध’ भी देने के लिए तैयार न थे, क्योंकि उन्होंने बहुत दिन तक सेवा की थी। वे उलुगखा के दुर्व्यवहार से असंतुष्ट थे।

उससे पूरे उनका समान इतना था कि घर बैठे उन्हें प्रति मिलनी थी व बादशाह का सलाम करते और उलुगखां का फौज में नौकरी बजाते। उलुगखां के दुवचनों से दुखी होकर उन्होंने कालु मलिक को मार दिया, कटक में कोलाहल किया और जग देखते बहा आए थे —

इणि वचनि दुहविया स्वामि

कालु मलिक मारुयल तिणि ठामि।

कटक माहि कुलाहल किया,

जग देखत इहाँ आविया ॥४६॥

॥ (५) जाजा देवड़ा उस समय अखाड़े में था। और बीकन बहा घाड़ा ले कर आया था।

(५) जिस चउपड़ का अर्थ टा० गुप्त ने किया है वह यह है —

हेडाठ जाजठ देवडठ घोड़ा ले भायु बीकणउ ।६८।

अखाड़े के लिए यहाँ कोई शब्द नहीं है। शायद टा० गुप्त ने हेडाठ का अर्थ अखाड़ा कर दिया है। 'हेडाठ' राजस्थानी का विकृत शब्द है। "हेडाठ मीरा का ख्याल अब भी होली के समय होना है। हेडाठ हेम बणजार की कथा भी प्रसिद्ध है। श्री मनोहर शर्मा ने इस दोहे की ओर भी मेरा ध्यान आकृष्ट किया है —

लारें सरिमा लख गया, अनड सरीसा आठ।

हेम हेडाठ सारसा बले न आया वाट ॥

‘वीकन वहाँ घोडा लेकर आया था’ अर्थ भी प्रसङ्गानुकूल नहीं है। सीवा अर्थ तो यही है कि हेटाड जाजा विक्री के लिये घोड़े लाया था। पाँच सहस्र घोड़ों से आक्रमण एक अश्वों का व्यापारी हेटाड ही कर सकता था।

(६) “छावनी बीड़ी
खाकर सोई हुई थी।”

(६) इम्मीरायण का पाठ है —

“छाडणि सुतो वीटि खानी ॥७१॥

उस समय के किसी ग्रन्थ में हमने नहीं पढा कि छावनी बीड़ी खाकर सो जाती थी। यह दुर्य्य फिर प्राचीन राजस्थानी के ‘वीटि’ शब्द का अर्थ न समझने से हुआ है। वास्तविक अर्थ है :—

“खानने मोती छाडणि (म्हाडेन नगर) को
घेर लिया।

(७) तदनन्तर उसने
वाली नगर में पडाव किया

(७) मूल पाठ है—

‘वाली नगर टाही अडिठाण’

अर्थात् उसने नगर को जलाकर अविस्थान-राज्यस्थान तथा प्रधान स्थानों को डहा दिया। वाली का अर्थ ‘जला कर’ राजस्थानी भाषा में प्रसिद्ध है।

(८) ‘इम्मीर ने सूभार
की कोठी लूटी।’

(८) यहाँ इम्मीर का राज्य था अतः सूभार की कोठी यदि कोई होती तो अपने ही राज्य की होती। मूल में ‘कोठी सूभार’ शब्द है इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है। सम्भवतः शाही शिविर को इम्मीर ने

लूटा है। सुजन चरित में इस बात का उल्लेख है कि हम्मीर ने शाही कै प को लूटा और अलाउद्दीन ने दूत द्वारा इस पर अपना रोष प्रकट किया।

(९) वह करमदी बीटि में आधी रात को पहुँच गया।

(९) पाठ है — करमदा बीटी आधी राति ॥६७॥
'बीटी' का अर्थ वही घर लिया है। उसने आधी रात करमदा को घेर लिया। 'बीटा' शब्द हम्मीरायण में अनेक प्रयुक्त है।

(१०) मीर मुहम्मद नाम का बड़ा पठान था जो सुरासान से आया था।

(१०) चउपइ यह है —
मुहिमद मीर मोटा पठान, वे ऊमट्टी आव्या सुरसाण ।
मुगले काफर ते अति घणा, मलिक मीर मीया नहमणा
॥९९॥

इसमें सरहदी अनेक जातिर्या के नाम हैं जो सुतान की सेना में सम्मिलित हुई थीं। मोहमंद, पठान, सुरसाण मुगल काफिर आदि के नाम स्पष्ट हैं। मोहम्मदी मीर, माट पठान, सुरसाण सभी उमड़ कर आए थे।

(११) "नगर की समस्त जनता से मिल कर उसने बधावा किया।"

११ चउपइ यह है —
नगर लोक सहु मिल्या, बदावइ चहुभाण
गठ बधावइ अति घणठ, भरि भरि अखि अयाण ॥१०॥
अर्थ यह है, 'नगर के सब लोग मिले। वे चौहाण (हमीर) को बधाई देने लगे। अज्ञानी (बेसमझ) लोग आस भर भर गठ को भी भयान्त बधाई देते थे।'

यह न्व राजपूनी प्रथा है । गढ के पृजन के लिए १९१ वीं चौपाड़े देखें । आगे गढ को विदा भी है ।

(१२) केटि—क्रीडा १५०

१२. केटिमा यह क्रीडा अर्थ उपयुक्त नहीं है । 'केटि' का अर्थ पाँछे या पञ्चात होता है गुजराती और राजस्थानी में टम शब्द का प्रचुर प्रयोग पाया जाता है ।

(१३) "यह हम्मीर है जो कि दुर्ग के दृढ कपाट टे कर अट गया है, रण-थम्मीर दुर्ग से भिड कर ही तू उसका समतुल्य जान सकेगा ।

१३. छपद की अन्तिम दो पंक्तियाँ ये हैं :—
रे अलावटीन हम्मीर यह, दिटकिमाट भाडट खरउ ।
रिणथमि दुर्ग लगतटा, द्विव जाणीयड पटन्तरट ॥१५०॥

यहा वास्तव में हम्मीर दृढ कपाट है । वह कपाट टे कर अड़ नहीं गया है । 'भटकिवाट' चारणी नादित्य का प्रसिद्ध शब्द है (भटकिवाड शब्द के लिए, नेणसी की ख्यात, भाग २, पृष्ठ २७७ भी देखें) । पटान्तर अर्थ शायद अन्त सत्त्व हो ।

(१४) हमीर ने कहा है कि नगर के नाम को मलिन कर वह दोनों भमीरों को न देगा और न शायी-घोड़े या गढ को अर्पित करेगा ।

१४ यहाँ मूल पाठ 'न परणावठ टीकरी को गुप्तजी ने 'नयर णाव ऊटीकरी' लिखा है और 'नगर' के नाम को मलिन कर' अर्थ करने की कष्ट कल्पना की है । देवलदे पुत्री के लिए बादशाह की माँग थी जिसके उत्तर में हम्मीर ने कहलाया कि "पुत्री नहीं परणाऊंगा"

१५ छत्तीस राज
पूत जातियों के नाम ।

१६ युद्ध के आरम्भ
में मुत्तानी सेना के आगे
हम्मीर की सेना में मगदद
पड़ गई जब नुसरतखान
ने हम्मीर के नौ लाख
निक मारे ।

१७ शत्रु दल में
हलचल पड़ गई और
शाह-ए आलम गढ़ पर
बढ़ पड़ा ।

१५ इनमें खाइडा महुवडा और रणमा जाति
नाम नहीं है । इसके लिये उदयपुर की प्रतिका
पाठान्तर दृष्टव्य है ।

१६ यह फिर दुरय है । चउपड़ यह है —
माया मीर मलिक आम,
सगला दल माहि पच्छठ भगण ।
नवलखि माहा निसरखान,
बयारथ पच्छठ तेणि ठाणि ॥१७२॥

वास्तविक अर्थ यह है —

‘जब उड़ोने मीर और मलिकों को मारा
सब (सुलताना) सेना में मगदद पड़ गई । नवलखी
(द्वार) के पास नुसरतखान को जब राजपूतों ने
मारा, तो उस म्यान में चीखना चिल्लाना शुरू हो
गया

नुसरतखान का मृत्यु के लिए आगे दिया एति
हासिक वृत्त लेखें ।

१७ दाहा यह है —

कटरु माहि हल हल हुद हुउ दपामे घाउ ।
सुभट सनाह लेइ भला, घडिउ आलम साह ॥१७४॥
अर्थ यह है —

‘कटरु में हलचल हुद । दपामा पर चोट पड़ी ।
वीरोधिग अत्ता कषय धारण कर शाह-ए-आलम
(अम्लाठरीन) ने गढ़ पर बढाई की ।

१८. “हम्मीर के योद्धा तलवार सेल और सींगनियों से वाण चला रहे थे, जब कि मुल्तानी सेना के ओर से यंत्र, नालें और टॉकुरलिया चल रही थीं और पैयार मार काट कर रहे थे (१८६-१८७)

१९ “पहिले दिन का युद्ध समाप्त होने पर लोग भोजन बनाने के लिए लकड़ी जला रहे थे कि बादशाह का ‘फर्मान वहाँ से हटने के लिए हुआ और सभी लोग अपना सीधा सामान लेकर वहाँ से हट गए” ।

१८. इन चौपाइयों में कहीं यह निर्देश नहीं है कि इस पक्ष के योद्धा इन अस्त्रों को और विपक्ष के योद्धा उनसे भिन्न अस्त्रों को प्रयुक्त कर रहे थे ।

१९ इतिहास और भूगोल दोनों पर बिना ध्यान दिए जायद यही अर्थ मन्त्र हो ।

दोनों चउपद्व ये हैं —

पहिलउ रिण पूरउ लाकड़े, टेइ भाग वाल्यउ तिय मड़े ।
फटक सहू नइ हुयउ फुरमाण, बेलू नख।उ तिणि
ठाणि ॥१९८॥

सुथण तणी वाधइ पोटली, मीरमलिक बेलू आणइ मरी ।
न करइ कोई न्क गटवाल, बेल आणइ सहि पोटली
॥१९९॥

इसके वास्तविक अर्थ के लिए पाठक गण ऐतिहासिक अवतरणों को देख लें । उससे उनको निश्चय होगा कि चौपाइयों का वास्तविक अर्थ निम्नलिखित हैं :—

पहिले उहोंने रिण (की खाइ) को लकड़ी से भरा किन्तु उसे (इम्मीर के) सैनिकों ने जला डाला । (फिर) सब सेना को ब्याज़ा हुई उस स्थान पर बालू ढलवाओ सूधण (पायजामे) की पोटली बांध बांध कर भीर और मलिक बालू भर कर लाते । गढ क घेरने वाले कोइ युद्ध न कर रहे थे । सभी पोटली भं बालू ला रहे थे ।'

गुप्त जी की भूल का कारण यहाँ बेल का अथ बालू न करके ब्यालू (भोजन) समझना है जिससे व दुरर्था कर सके हैं अथवा यहाँ भोजन और सीधा सामान का प्रसंग ही क्या था ? यह शाही सेना थी न कि भोजनभट्ट ब्राह्मणों की मटली, जो सीधा सामान उठा कर चली गई ।

फरिदता ने 'रिण की खाई नाम देकर सब घटना का वर्णन किया है । इसामी की फुतूहुस् सलातीन और इम्मीर महाकाव्यादि से सब क्या पढ़ी जा सकती है ।

२० इसके बाद राजा

निल्य पाल पर आता ।

२०, घउपइ का अंश यह है —

राठ भागलि निन पाण्ड पदइ' (२००)

यहाँ राजा पाल पर नहीं आता । उसक सामने 'पालउ पड़ना है । 'पाला' का अर्थ 'अखाड़ा' है सम्भवत 'पाला पड़ना यहाँ मञ्जलिउ लगने क अर्थ में है ।

२१- धीरे-धीरे छट्टा महीना समाप्त हो गया और गढ़ के लोग चिन्ना तुर हो उठे (२००) हम्मीर भी चिन्तित हुआ और उसने गढ़ देवना से युद्ध का परिणाम जानना चाहा (२०१)

२१ पर्याय निम्नोक्त है :—
छट्टई मामि मवूरण मरगड, ते देखा लोऊ मनि दरगड
कोमीमड जइ पहुना हाथ, तुरका नणी नमो छट वान्छ
२००
राय हमीर चिनातुर दृयड, रिण पूयड दुर्ग द्विव गयड
गट देवति लड़ी परमाव,आणी कुची दीधी हाथि २०१
इसमें रिण के पूरा भर जाने पर गढ़ के कोमीनों तक हाथ पहुँचने लगे जिनसे हम्मीर चिन्नातुर हुआ । गढ़ के अधिष्ठातृ देव ने परमार्थ (वाम्निधि स्थिति) को समझ कर हम्मीर के हाथ में चामी दी । राय ने तब चारीलघाडी और अधिष्ठातृ देव की माया से पानी बह निकला । पानी से बालू बह गई, वह झील फिर खाली हो गया ।

२२ 'चार वर्ष (या वर्ष दिन ?) हो गए ।'

२२ 'या वर्ष दिन' अर्थ के लिए यहाँ कोई अवकाश नहीं है । युद्ध का समय चउपड़े २१२, २१६, और २१- में 'चार वरिस' है । चाहे युद्ध इतना न चला हो, हम्मीरायण के लिए यही अर्थ उपयुक्त है । मद्र के २१ वें कवित्त में भी युद्ध का काल 'वरिस दुवादस' है । इससे 'चार' का ठीक अर्थ स्पष्ट है ।

२३ 'जीमने में वह हमें अपने पैरों के पास बिठाता है ।'

२३ जीमने में पैरों के पास बिठाने में कौन संमान है ? पर्याय यह है :—

‘जिमणइ गोडइ व सारइ पासि” (२२४)
यहा जिमणइ का अर्थ ‘जीवणा’ या ‘दाहिना-
अधिक उपयुक्त है। राज दरबार में राजा के निकट
दाहिनी ओर बैठना सदा में प्रतिष्ठा सूचक रहा है।
(देखो मानसोल्लास या बीकानेर, उदयपुर आदि
राज्यों की दरबारी रीति रिवाजों पर कोई पुस्तक)।

२४ पद्यांश यह है —

‘त मोटउ अगजित राव’

इसका अर्थ है, ‘तू बड़ा अजित राजा है।’

(अजित शब्द के महत्व को गुप्त सम्राटों की
मुद्राओं पर देखें)

२४ पहले तुमने
बड़े बड़े राज्यों को
बीता है।’

२५ ‘यह तब
समझा जायगा कि कोई
बल प्रधान तुम्हारे पास
आया था जब तुम हमें
सम्मान देकर वापस करोगे’

२५ पद्यांश यह है।

तउ तुम्हि आव्या बड़ा प्रधान।

पर मुकलावउ अम्ह नइ देइ मान ॥ २२५ ॥

“यह तब समझा जायगा अर्थ न प्रासङ्गिक है
और न शाब्दिक।

२६ उसे बल से
क्यों नहीं ले लेते हो ?

२६ पद्यांश यह है —

“अधवगइ नवि लीजइ प्राणि।”

इससे अगली पंक्ति में प्रधान कहते हैं कि यदि
उन्हें पूरी धूँदी दी जाय तो वे बल प्रयोग के बिना
गठ दिला सकते हैं। इसलिए उपयुक्त अर्थ होगा—

‘इसे बल के प्रयोग से नहीं लिया जा सकता।’

२७. 'कोठारी' से उन्होंने कहा, "धान्य फेंक कर तुम भी सब के समान निश्चेष्ट पड जाओ ।"

२७ पर्याग यह है .—

कोठारी न६ बोव्यट विरट,

धान नखावि सहु तट परट ॥२३४॥

उससे अग्रिम चटपट में हमें यह सूचना भी मिलती है । 'तिणि नीचि नाख्या सहु धान ।' किन्तु दुर्ग में उस समय तक कोई निश्चेष्ट था ही नहीं । उसलिये निश्चेष्ट पड़ने का कोई प्रश्न ही नहीं है । धान नखावि (नखाव) सहु तट परट का अर्थ यही है कि 'तू सब (सहु) धान्य दूर (परे, परट) फिक्का डे (नखाव) ।'

२८ 'बं राजा को यह विश्वास दिलाते रहे कि ठगकी सेना के आगे शत्रु निरंतर क्षीण पडना जा रहा है, केवल एक बार [और] उसे परिग्रह को [रणक्षेत्र में] देने की आवश्यकता थी ।'

२८. चटपट यह है .—

रिणमल रटपाल मागइ पसाटः एक वार परघट व्यड राट,
कटक कीलट ब्रां थनि मलट, जे में तुरक पाडां
पातलट ॥२३६॥

वास्तविक अर्थ यह है .—

“रिणमल और रायपाल ने यह प्रसाद (favour) मांगा, “एक वार राय हमें परिग्रह (सेना) दें । हम कटक में मली क्रीडा करेंगे, जिससे हम तुकों को कमजोर कर सकें ।

अपभ्रंश और राजस्थानी के जानकार 'पसाट' 'परघट', 'कीलट' 'पातलट' आदि शब्दों से अच्छी तरह परिचित हैं । 'पातलट' पातला (पतला) है ।

२९ 'इन दोनों ने

प्रच्छन्न रूप से एसा कुछ
किया कि सवा लाख
(सपादलक्ष) का परिग्रह
स्वामिद्रोह करके यादशाह
से जा मिला ।”

(२०) जाजा ने कहा,

“पर वह जाव जो माना
पिता के अतिरिक्त तीसरे
का जन्मा हो ।”

(३१) महिमासाहि ने

कहा कि ता वह कोठार के
घाय और गढ की रक्षा
करगा ।

२९ चउपड़ यह है —

‘राय तणइ मनि नहीं विशेष, द्रोहे कीधउ काम अलेख
सवालाख परिघउ (यइ) राउ द्रोहे मिन्या जाइ
पतिसाहि ॥२७॥

अलेख' का अर्थ 'अलेख्य है । इसी 'अलेख्य'
काय को कवि ने २२२ वीं चउपड़ में मा इंगित किया
है । द्रोह का उत्तरदायित्व शायद कवि ने प्रयाना पर
ही रखा है ।

(३०) पर्याश यह है —

‘जाजउ कहइ ति जाउ,
जे जाया तिह जण तणा ॥२८॥

समवत 'तिह जण' का अर्थ डा० गुप्त ने नीसरा
जन किया है । वैसे “तिह जण” का अर्थ 'वह (अत्र
कव्य) पुरुष' अर्थात् जार प्रनीत हाता है । मल्ल क
कवित्त में इसी प्रसंग में 'तसँ जण है (पृष्ठ ४९
दृढ़ा ३)

(३१) चउपड़ यह है —

महिमासाहि इमिठ कहइ निसुणि राय हमीर ।
धान जोधाहि कोठार ना गउ राखा तउ मीर ॥२५८॥
अर्थ यह है —

महिमा साहि ने कहा है राय हमीर, मनो ।
छुम कोठार के घाय को दिखवाभा ।’
(‘घाय होगा) तो हम गढ़ रंगे ।’

इससे अग्रिम चौपाई में यह वर्णित है कि राज ने कोठारी से पृछा कि कोठार में कितना धान है । बनिये ने मव अंवार खाली दिखा दिए ।

(३२) उसने भृत्य माहे-
खरी को प्रधान बनाने
तथा दोनों अभीरो को
सम्मान देने के लिए कह
कर कुमार को विदा
किया ।

(३२) मूल पर्याय 'रखे महेमरी करट प्रधान (२२५) में 'रखे' शब्द का अर्थ टा० गुप्त ने गलत किया है यह अव्यय है और फलितार्थ निषेधात्मक है श्री जिनराजसूरि और श्रीमद् देवचन्द्रजी आदि राज स्थानी तथा गूजराती के कवियों ने इसका प्रचुरता से प्रयोग किया है । गूजरात में तो आज भी बोलचाल में निषेव पर बल देने के लिए यह शब्द पर्याप्त प्रचलित है । अतः यहा माहेखरी प्रधान बनाना निषिद्ध किया है । आगे महेमरी ना वाटिज्यो कान भी निषेव का ही समर्थक है ।

(३३) मुकलावइ = मुक्त
किया । (२७४)

(३३) मुक्त के स्थान पर 'विमर्जन करना या विदा देना अधिक उपयुक्त है ।

(३४) "जमहर (जौहर)
करने के लिए हम्मीर ने
घोडा पलाणा ।"

(३४) चउपडे यह है:—

जमहर करी छड़ट हुयउ, इमीर टे चहुआण ।

सवालाख समरि वणी, घोडई दियइ पलाण ॥२७९॥

हम्मीर ने जौहर करने के लिए नहीं अपितु जौहर कार्य से विरत होने पर घोडा पलाणा । जमहर स्त्रियों के लिए था पुरुषों के लिए जौहर के बाद आमरणान्त युद्ध ।

(३५) "[यह सुनकर]
राजा ने अपने भगप ही
अपना गला काट डाला ।"

(३५) पचाश यह है —

राव पवाडठ कौयठ मलठ
आपणही सारयठ जँ गलठ ॥२९३॥

राजा ने यह बड़ा पवाड़ा किया कि अपने ही
हाथ अपना गला काट डाला ।

'पवाड़ा के अर्थ पर हमने आगे विचार किया है ।

३६ उसने मांगा कि
रणमल, रायपाल तथा गढ
के कोठारी की खाल एक
अगूठा मोटी निकलवा ला
जाय ।

(३६) यह अर्थ सगत नहीं कहा जा सकता ।
मनुष्य की खाल और एक अगूठा मोटी १ वह गेंडा
तो नहीं है । 'अगूठा यकी का अभिप्रेत अर्थ
'अगूठा मोटी' न होकर अगूठे तक की (अर्थात् समस्त
शरीर की) खाल है । अंग्रेजी में इसे *Flaying
skin* कहते हैं ।

हम्मीर महाकाव्य से तुलना

हम्मीर महाकाव्य में भी हम्मीर की कथा का विशद वर्णन है । हम्मीरायण
का रचना समय स० १५३८ है । हम्मीर महाकाव्य की रचना ग्वालियर के तब
राजा वीरम के समय हुई जिसकी ज्ञात निश्चित तिथियाँ स० १४५८ और
१४७९ हैं (तारीख मुबारकशाही, १७७ प्रशस्ति संग्रह, महावीर ग्रन्थमाला,
द्वितीय पुष्प, जयपुर, पृ० १७३, पंक्ति २४) । हम्मीर महाकाव्य में हम्मीर की
सब जीवनी का वर्णन है उसकी जानकारी कुछ अधिक परिपूर्ण और प्राचीन
आधारों पर आधारित प्रतीत होती है । अलाउद्दीन से सघन के बारे में ही हुई
दोना काव्यों की सूचनाओं में जो अंतर है उसे कोष्टक रूप में हम इस प्रकार
प्रस्तुत कर सकते हैं —

हम्मीरायण

१, जयनिगढ़े का पुत्र हम्मीर टे जब रणथम्भोर में राज्य कर रहा था, अलखान के विद्रोही सरदार महिमासाहि और मीरगाभरु ने हम्मीर की शरण ली। महाजनो ने उनके व्यय आदि को ध्यान में रखते हुए राजा को उन्हें निकाल देने की सलाह दी। किन्तु राजा ने इस पर ध्यान न दिया। इस पर अलखान बहुत बड़ी सेना लेकर रणथम्भोर पर चढ़ आया। (१८-६६)

(२) अलखान की चुपचाप चढाई का किसी को पता न था। किन्तु रास्ते में माग्यवशात् जाजा देवड़ा भी वहाँ आ उतरा जहाँ अलखान की कुछ सेना का पड़ाव था। जाजा ने उसकी सेना को नष्ट किया और खबर

हम्मीर महाकाव्य

(१) जैत्रसिंह के पुत्र हम्मीरदेव ने गद्दी पर बैठते ही दिग्विजय का निश्चय किया और मालवा, मेवाड़, आवृ, वदनोर, अजमेर, सांभर, मरोठ, खडोला, चम्पा, ककराला, तिहुनगढ़ आदि पर विजय प्राप्त कर रणथम्भोर वापस आया। तदनन्तर उसने कोटि यज्ञ किया और पुरोहित के कहने पर एक मास का मौनव्रत धारण किया। उनी समय उल्लूखान को अलाउद्दीन ने कहा, 'रणथम्भोर का राजा हमें कर दिया करता था। उसका पुत्र हम्मीर तो हम से वान भी नहीं करता। इस समय वह व्रत में स्थित है। तुम जाकर उसके देश का विनाश करो' (सर्ग ९, १-१०४)

(२) उल्लूखान वनास के किनारे पहुँचा। घाटी के अन्दर घुसने में अपने को असमर्थ पाकर वह वहीं ठहरा। सेनापति भीमसिंह और मन्त्री धर्मसिंह ने उसकी फौज पर आक्रमण किया। मुसलमानी फौज हारी। इधर-उधर लूटपाट कर धर्मसिंह तो रणथम्भोर की ओर लौट गया। किन्तु दरें से प्रवेश करती समय भीमसिंह के सिपाहियों ने मुसलमानों से छीने हुए नगरों को वजा डाला। उसे अपनी जय का सकेत समझकर तिनर-वितर हुए मुसलमानी

रणथम्भोर में दी। उर अल्लखान बढ़कर हीरापुर घाट पर जा उतरा। हममारदे ने महिमासाहि और अनेक क्षत्रियों की सेना के साथ अल्लखान पर आक्रमण किया। अल्लखान पराजित होकर भागा और बादशाह तक पुकार हुआ। (१७-८२)

३ अलाउद्दीन ने खुद होकर बहुत बड़ी सेना एकत्रित की और रणथम्भोर को जा घेरा। मोल्हठ घाट के मुख से की हुई देवलदेवी, गढ़ हाथी आदि की मार्ग हम्पीर ने ठुकरा दी।

सिपाही एकत्रित हो गए। भीमसिंह वीरता से युद्ध करता हुआ मारा गया।

ग्रन्थ के पूरा होने पर हम्पीर ने धर्मसिंह को नपुंसक अथा आदि कहते हुए उसे शासन में शरीर से अथा और नपुंसक बना दिया। धर्मसिंह का पद उसने खांडापर भोज को दिया। किन्तु कुछ दिन बाद धन की आवश्यकता पड़ने पर उसने अथे धर्मसिंह को फिर अपने पुराने पद पर नियुक्त कर दिया। प्रजा को अनेक करा से पादित कर उसने राजा के विरुद्ध कर दिया। भोज को भी राजा और धर्मसिंह ने इनना तग किया कि वह और उसका भाइ पीथसिंह यात्रा के बहा। दिल्ली जाकर अलाउद्दीन क नौकर हो गए। भोज के चले जाने पर हम्पीर न दण्ड नायक का पद रतिपाल को दिया (सम ९१०६-११०८)

३ भोज की सलाह से अलाउद्दीन की सेना १ फसल कटने से पहले रणथम्भोर पर आक्रमण किया। अल्लखान जब हिन्दूवाट पहुँचा तो हम्पीर के सेनानियों ने आठ ओर से उस पर आक्रमण किया पूर्व से धीरम ने पश्चिम से महिमासाहि न जाजदेव ने दक्षिण से, उत्तर से गभरूक ने, आग्नेय दिशा से रतिपाल ने, धायव्य से तिचर ने, इशान से रणमल्ल ने और नैर्ऋत से वैचर ने। मुसलमानी सेना घुरी

महिमासाहि और इम्मीर के राजपूतों ने मुसलमानी ईसैन्य को रोंद डाला और निसरखान को मार डाला । (८४-१७३)

४ अब सब प्रान्तों और देशों की फौज लेकर अलाउद्दीन ने आक्रमण किया । इम्मीर ने भी इस अवसर पर छत्तीस कुलके राजपूतों को बुलाया । युद्ध आरम्भ हुआ, बादशाह उसे एक ओर खडा देखता । बादशाही सेना हारी । बहुत से मीर और मलिक मारे गए । खबर लेने पर मालूम हुआ कि सवा लाख आदमी समाप्त हुए हैं । (१७४-१९२)

तरह पराजित हुई और उल्लूखान जान लेकर भागा । रतिपाल ने बन्दी मुसलमानी स्त्रियो से गांव-गांव में छाछ निकवाई । राजा ने रतिपाल को खूब पुरस्कृत किया (१०-१-६३)

इसी समय इम्मीर से आज्ञा प्राप्त कर महिमासाहि आदि ने भोज की जागीर पर आक्रमण किया और उसके भाई को सकुटुम्ब पकड़ कर ले आए । एक तर्फ से रोता धोता भोजदेव और दूसरी ओर से पराजित उल्लूखान अलाउद्दीन के दरवार में पहुँचा ।

अलाउद्दीन ने इम्मीर का समूल उच्छेद करने का निश्चय किया और राज्य के प्रत्येक प्रान्त से सेनाएँ मंगवाई (१०-६४-८८) सुल्तान के भाई उल्लूखान और निसुरत्तखान ने इम्मीर को पराजित करने के लिए प्रयाण किया । दरों को पार करना कठिन था इसलिए दोनों भाइयों ने सन्धि-मन्त्रणा के वहाने मोल्हण को इम्मीर के पास भेजा, और छल से दरें में प्रवेश कर मुण्डी, प्रतौली और श्री मण्डपदुर्ग एवं जैत्रसर आदि के चारों ओर अपनी सेना के पड़ाव डाल दिए (११-१-२४)

मोल्हण यथा तथा दरवार में पहुँचा, और उसने इम्मीर से लाख स्वर्णमुद्राओं चार हाथियो, तीन सौ घोडों और राजकन्या की माग की । विशेषतः

मांग चार मुगलों की थी जिन्होंने उन माइया की भाइया भग की थी (११,५९ ६०)। इम्मार ने उसे धमकाया हुआ कहा, यदि तुम दम रूप में न आये होते तो मैं तुम्हारी जीम निकलवा दालना। जिस तरह हाथी आदि के जीवित रहते कोई हाथी के दाँत, मय की मणि और सिंह की केसर-पंक्ति को नहीं ले सकता, इसी तरह चौहान व घन को उनके आते काइ प्रहण नहीं कर सकता। शरणागत शत्रुओं की सामान्य पुण्य भी रखा करते हैं। मुझ से मुगलों को मरिने वाले तुम्हारे स्वामी तो सखा मूग हांग। मैं एक विश्व व प्रजाति को भी देने के लिए तैयार नहीं हूँ। जो तुम्हारे स्वामी से बन पड़े वह कर (११ २५ ६८)

हमीर १ उमर बाद पूरी तैयारी की मुस्मान सेनापतिया के दुग प्रहण के और प्रजाति को उमी विफल किया। एक दिन युद्ध में दुग से चलाया हुआ एक घोड़ा शत्रु के गोठे से भिदकर उदला और उससे त्रिगुणितान मारा गया। (११ ६९ ९०)

त्रिगुणितान का अन्तर्द्वय कर इस बार भलाग्दीन स्वयं स्वयंसेवक पहुँचा। अन्तर्द्वय का ही हमीर ने आशय किया। दिन भर घेर युद्ध हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन भी सर्वत्र युद्ध में

बीता। इस युद्ध में मुसलमानी फौज के ८५,०००
योद्धा काम आए। (१२-१-८९)

५. एक दिन हम्मीर
सिंहासन पर बैठा था।
उसके आदेश से महिमा-
साहि ने अलाउद्दीन के
सातों छत्र काट डाले।
सुल्तान ने लकड़ों से खाई
को भरने का यत्न किया।
जब हम्मीर के सैनिकों ने
लकड़ियाँ जला दी तो
सुल्तान ने बाल से खाई
को भर कर गढ़ लेने का
प्रयत्न किया। किन्तु गढ़
के अविष्ठातृ देव की माया
से ऐसा पानी आया कि
बाल बह गई।

(१९३-२०२)

हम्मीर के सामने
धातु और बाल नर्तक,
कियाँ सुल्तान को पीठ
दिखाकर नाचती थी।
सुल्तान ने बन्धनमुक्त
महिमासाहि के चाचा
द्वारा उन्हें एक बाण में
ही मरवा डाला।

५. एक दिन हम्मीर की मजलिस जमी थी।
गाना हो रहा था। उसी समय सुन्दरी धारादेवी
नर्तकी ने वहाँ आकर नृत्य शुरु किया। मयूरामन
बन्ध से नृत्य करते हुए उसने ताल-त्रुटि के समय
सुल्तान को पश्चाद्-भाग दिखाया। इससे खिन्न
होकर अलाउद्दीन ने कहा, "क्या कोई ऐसा व्यक्ति है
जो इसे बाण से मार गिराए। सुल्तान के भाई ने
उत्तर दिया, 'तुमने उद्दानसिंह को कैद में डाल रखा
है। वही यह काम कर सकता है।' बादशाह ने
उद्दानसिंह की वेडियाँ कटवा दी और उस पर कृपा
दिखाई। उस दुष्ट ने बाण से धारा को मार कर
दुर्ग की उपत्यका में गिरा दिया। महिमासाहि ने
बादशाह को मारना चाहा, किन्तु हम्मीर के मना
करने पर उसने उद्दानसिंह को ही मारा। उसके
विनाश से चकित होकर अलाउद्दीन ने अपना डेरा
तालाब के दूसरी ओर कर दिया। (१३-१-३८)

सुल्तान ने खाई को पूलियों, उपलों, और लक-
ड़ियों के टुकड़ों से भरवा दिया और एक और गढ़
के निकट सुरग पहुँचा दी। किन्तु हम्मीर ने खाई
सामान को अग्नि के गोलों से और सुरग के आदमियों

बारह वय तक इस तरह युद्ध चला (पृष्ठ २१२) (२०३ २१२)

६ दिल्ली से वापिस आने की अन होने लगी। तब बादशाह ने हम्मीर को कहला कर भेजा, 'बारह वय युद्ध की सीमा है। हम पर्याप्त रण क्रीड़ा कर चुके हैं। अब मुझे विदा दो। मैं तो तुम्हारा महमान हूँ।' लोगों की सलाह से हम्मीर ने अपने दो अत्यन्त विश्वस्त प्रधानों को बात चीत के लिए भेजा। बादशाह ने उन्हें खूब मान दिया। उन्हें पूरी धृष्टी और कुछ भय प्राप्त का भी आश्वासन देकर बादशाह ने उन्हें अपनी ओर मिला लिया (२१३ २३०)

७ जब हम्मीर ने पूछा तो मन भाइ बात बना दो कि बादशाह तो

को लाख के तेल से जला दिया। इस प्रकार से उसने बादशाह के अनेक उपार्यों को व्यय किया।

(१३ ३९ ४८)

६ वर्षों का गड़। यथा तथा सधान की इच्छा से अलाउद्दीन ने दूतों द्वारा रतिपाल को बुलाया। उसे खूब प्रमन्न किया। और उसके सामन अचल पसार कर कहने लगा 'मैं उस दुग को लिए बिना गया तो मेरी सब कीर्ति उत हो जाएगी। किन्तु मेरे सौभाग्य से तुम आ गए हो। मैं तो क्वल विजय का इच्छुक हूँ। यह राज्य तो तुम्हारा ही होगा। सुतान ने उसे खूब मदिरा पिलाइ। बादशाह को बचन देकर रतिपाल वापस लौटा।

(१३ ४९ ८२)

७ रणधमोर लौट कर रतिपाल ने राजा को भड़कात हुए कहा, 'अलाउद्दीन कहता है कि यह मूल्य अपनी लड़की को न देगा तो मैं उसकी स्त्रियों को

डेवलडे को मागता है। डेवलडे ने कहा, “मुझे देकर तुम अपने को ख़ुशचालो। ममम्क लेना कि मैं पैदा ही नहीं हुई, या छोटी अवस्था में ही मर गई। किन्तु हम्मीर ने इस बात पर ध्यान न देया। (२३१-२३३)

र
र
र
र
र
र
र

८ कोठारी से मिल कर उन्होंने सब धान दूर गिरवा दिया। उनसे कहा, हमें पूरी बँदी मिली है इस तुझे प्रधान बनाएंगे। फिर रिणमल और रत्तिपाल ने हम्मीर से पूना मांगी। उन्होंने कहा, इस ऐसी रणक्रीडा करोगे कि शत्रु कमजोर पड़

भी छीन लूंगा। इस पर मैं उसे मत्तना दे कर मैं चला आया हूँ। रणमल आप से नाराज है। इसलिए पाँच सान आदमी ले जा कर आप टमे राजी कर लें।” जब वीरम के पाम हो कर रतिपाल निम्ला तो शराब की गत्र से उसने अनुमान कर लिया कि रतिपाल शत्रु से मिल गया है। किन्तु राजा ने रतिपाल के विरुद्ध कार्य करना उचिन न समझा। उधर रानियों के कहने से डेवलडेवी पिता के पाम पहुँची और अनेक नीतियुत वाक्यों से उसे अपने प्रदान के लिए ममकाया। किन्तु इससे प्रचन्न होने के स्थान पर हम्मीर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। उनसे पुत्रों की बातों का समाधान कर उसे वापस अपने स्थान पर भेज दिया। (१३-८४-१२९)

८ उधर रतिपाल ने रणमल के पाम जाकर कहा, भाई! यहाँ मे भागो। राजा तुम्हें पकड़ने आ रहा है। तुम्हें अभी विश्वास न हो तो सायकाल के समय जब वह पाँच सान आदमियों के साथ आए तो मेरा वचन सत्य मान लेना।” राजा को उसी तरह आता देख रणमल गढ़ से उतर कर शत्रु से जा मिला। उनकी दुश्चेष्टा से खिन्न होकर जब राजा ने कोठारी जाहड से अन्न के बारे में पूछा तो सन्धि

जाएगा ।' सशय रहिन
राजा ने उन्हें सब सेना
दी । व बादशाह से जा
मिले । गट में कोई एसा
व्यक्ति न रहा जिसके हाथ
में हम्मीर हथियार दे ।

(२३४ २४०)

९ हम्मीर ने शेष
लामों का बुलाया और
कहा, 'मैं तुम्हारा ठाकुर
हूँ, तुम मेरा प्रजा । कहो
मैं तुम्हें कहाँ पहुँचाऊँ ?'
किन्तु व जाने को राजी
न हुए । तमने जाजा से
कहा, जाजा तुम जाओ ।
तुम परदेगा पाहुणे हो ।'
किन्तु जाजा न भी यह
कहते इकार किया कि
एसे समय में वही लाग
आएंगे जो एसे वैसे व्य
क्तियों की सन्तान है ।
दोना मीरों ने तो यह भी
कहा कि यह उनका
समपण कर दुग का उद्धार
करे । किन्तु हम्मीर इसके
लिए तैयार न हुआ ।

की इच्छा से उसने कहा कि अन्न है ही नहीं ।

(१३० १३० ३७)

९ इस सार्वजनिक कृतघ्नता से खिन होकर
उसने महिमासाहि को बुलाया और कहा तुम विदेशी
हो । तुम्हारा यहाँ रहना उचित नहीं है । जहाँ कहो
मैं तुम्हें पहुँचा दूँ । हम तो क्षत्रिय हैं । अपनी
जमीन के लिए प्राणों की आहुति देना हमारा तो धर्म
है । इन वचनों से मर्माहत होकर महिमासाहि घर
पहुँचा और स्त्री, बालकादि सब को तलवार की धार
न्यार कर हम्मीर से कहन लगा 'तुम्हारा माभी
जाने से पूर्व एकबार तुम्हारे दगन करना चाहती है ।'
राजा वहाँ पहुँचा और घर के उस भीमत्स दृश्य को
देख कर गूँठिन हो गया । सचेतन होते ही महिमा
साहि के गट लग कर अपने को धिकारना हुआ वह
विलाप करने लगा ।

(१३८ १६६)

दुर्ग रक्षा का फिर विचार होने लगा। किन्तु हम्मीर ने जब कोठारी में वान्य के बारे में पूछा तो उसने जा कर खाली कोठे दिखा दिए (२११-२५५)

१०. राजा ने अब जमहर (जौहर) करने का निश्चय किया। वीरमंदे ने उसने जाने के लिए कहा किन्तु वह राजा न हुआ। तब उसने कुमार को तिलक दिया, उचित शिक्षा दी, और उसकी मां के माथे उसे वहाँ से निकाल दिया। हाथियों और घोड़ों को हम्मीर के अनुयायियों ने मार डाला। घर घर में लोगों ने जमहर किए। तमाम रणधमोर ऐसा जला मानो इनुमान् ने लका में अति लगाई हो।

इसके बाद हम्मीर ने फिर कोठे देखे तो उन्हें वान्य से परिपूर्ण पाया।

१०. वहाँ से लौट कर जब उसने कोठारागार को देखा तो उसमें उसे अन्न से परिपूर्ण पाया। जादू ने उठ खोलने का कारण भी बनाया। 'नेरी बुद्धि पर बल पड़े', इन्हें हुए राजा ने बाहर जाने के इच्छुक नागरिकों के लिए मुक्ति द्वार खोल दिया और बाकी को जौहर की आज्ञा दी। स्वयं दानादि दे और भगवान् जनार्दन की अर्चना कर वह पक्षर के किनारे पर बैठ गया। रंगदेवी आदि रानियों ने अपने को सुभूषित किया। राजा ने सतुष्ट हो कर अपनी केशपट्टिका काट कर उन्हें दी। फिर देवलदेवी को गले लगा कर वह रो पड़ा। रानिया हम्मीर की केशपट्टिका हृदय पर रख कर अग्नि में प्रवेग कर गई। उन्हें अन्त्याञ्जलि देकर राजा ने जब जाजा को भेजा तो वह नौ हाथियों के सिर काट कर राजा के पास पहुँचा और कहने लगा, जिस प्रकार राण ने शिव की अर्चना की थी, वैसे ही मैं तुम्हारी अर्चना करता हूँ। ये नौ सिर हैं, और दसवाँ सिर मेरा होगा।"

जाजा वीरमदे और दानों मीर गढ़ की रक्षा के लिए तैयार थे, किंतु हम्मीर ने कहा "अब अनर्थ हो चुका है। अब जान संभल लाम।"

(२७० २७७)

११ गढ़ में जबल यह रहे-वीरमदे हम्मीरदे, मार (गाम्), महिमा साहि भाट और पाहुणा जाजा। हम्मार घाड़ पर चढ़ा किंतु वीरम को पैदल देख कर घोड़े से उतर पड़ा और घोड़े का अपने हाथ से मार डाला। दोनों मीर, फिर जाजा उसके बाद वीरम ने युद्ध किया हम्मीर ने स्वयं अपना हाथ गला काट कर अपनी मह लीला समाप्त की।

संस्कृत १३७१ ज्येष्ठ

वीरम ने राज्य को निरस्त कर दिया, तब राजा प्रसन्नना पूर्वक जाजदेव को राज्य दिया और स्वधनागत पद्मसर के आशानुसार उसने सब नव्य पद्मसर में डाल दिया। फिर हम्मीर की आज्ञा से वीरम ने छाहड़ का सिर काट डाला (१३ १६९ १९२)

११ वीरम सिंह, टाक गदाधर चारण मुगल बाबु और क्षेत्रसिंह परमार इन वीरों के साथ हम्मीर युद्ध में उतरा। पहले वीरम काम आया। फिर शत्रु-बाणों से महिमासाहि को मृच्छिन देख कर हम्मीर आगे बढ़ा और अनेक शत्रुओं का वध कर स्वयं अपने हाथ में ही मरा। उसके लिये यह अमृत्य था कि शत्रु उसे जीता पकड़े। युद्ध का तिथि श्रावण शुद्ध पत्ती रविवार था। (१३ १९२ २०५)

सूरवशी रतिपाल को और रणम को धिक्कार है। अभिनय वह जाजा है जिसने हम्मीर की मृत्यु के बाद भी दो दिन तक दुःख की रक्षा की। दो न न कहने से हाँ का अर्थ बनता है यह सोचकर जिसने हम्मीर के 'जा, जा' का अर्थ 'उठर जा किया और स्वामि की आज्ञा का भङ्ग किए बिना उसका सेवा की वह जाजा धिरजयी हो। अहङ्कार निकेतन उस महिमासाहि का वणन तो क्या किया जाए जिसने प्राणान पर भी शत्रु के सामने सिर न झुकाया। उस वीर महिमासाहि की बराबरी कौन कर सकता है जो पकड़े जाने पर पैर को भागे दिखाना हुआ

अष्टमी शनिवार के दिन हम्मीर काम आया और गढ टूटा । (२७८-२९४)

अलाउद्दीन की नमा में घुना, और जिसने यह पूछने पर कि यदि मैं तुम्हें जीवित छोड़ दूँ तो तुम मेरे लिए क्या करोगे, यह उत्तर दिया, 'वही जो तुमने हम्मीर के लिए किया है ।' (१४-१-२०)

१२. युद्ध के बाद अलाउद्दीन रणक्षेत्र में आया । जब उसने हम्मीर के विषय में पूछा तो रणमल ने पैर से उसे दिखाया । इनने में भाट नल्ल ने हम्मीर की चिखदावली पटी और बादशाह को सब सिर दिखाए—जाजा का जिसने जलहरी रूपी रणवंशोर में स्थित अपने स्वामीरूपी महादेव की अपने सिर से पूजा की थी, वीरम का गामरु और महिमानाहि का और हम्मीर का भी । जब बादशाह ने उसे वर देना चाहा तो उसने यही प्रार्थना की कि स्वामिन्द्रोही रतिपाल आदि को प्राण-दण्ड दिया जाए और उसके बाद उसकी भी इह-लीला समाप्त की जाए । बादशाह ने रायपाल, रणमल, और बनिए की खाल निकलवा कर भाट को प्रसन्न किया । भाट का इनन कर उसने उसकी इच्छा पूर्ति भी की । राजा, मीर आदि की उसने उचित अन्त्य-क्रिया की । (२९५-३२३)

१३ पूछने पर जिमने रणक्षेत्र में पड़े हम्मीर के सिर को पैर से दिखाया, और पूछने पर राजा से प्राप्त कृपाओं का भी वर्णन किया, उम रतिपाल की अलाउद्दीन ने जो खाल निकलवा डाली वह ठीक ही किया । (इससे मारों उसने यह उपदेश दिया कि) कोई स्वामिन्द्रोह न करे । (१४-२१)

काव्य कथाओं में सत्यासत्य का विवेचन

हम ऊपर हम्मोरायण का सार दे चुके हैं । किन्तु तुलनात्मक दृष्टि से विषय के अध्ययन के लिए कोष्ठकों में किसी अंश में उसकी पुनरावृत्ति आवश्यक हुई है । उन्हें देखने से यह स्पष्ट है कि हम्मोरायण और हम्मोसमहाकाव्य की कथाओं में पर्याप्त समानता है । हम्मोसमहाकाव्य के अनुसार हम्मोस की मृत्यु के बाद कवियों ने हम्मोस विषयक अनेक छोटी मोटी रचनाएँ की हैं । शायद यहाँ रचनाएँ हमारे काव्यों की मूलस्रोत हों । किन्तु यह भी असम्भव नहीं है कि 'भाण्डव' यास ने हम्मोसमहाकाव्य को सुना और उसका कुछ आश्रय भी लिया हो ।

विशेषतः कथाओं का अन्तर विवेच्य है । जहाँ दोनों कथाओं में भिन्नता है, उसमें कौन प्राय्य है और कौन अप्राय्य ? न केवल यह कहना पर्याप्त है कि यह कथा कल्पित प्रतीत होती है, या यह अधिक प्रमाणिक है क्योंकि इसमें अधिक विस्तार नहीं है' । और न हम पारस्परिक कथाओं को केवल अन्य कथाओं के मौन के आधार पर ही एकान्तत तिलांजलि दे सकते हैं । जो बात हमें एक स्थान पर न मिली है वह शायद अन्यत्र मिल सके । समसामयिक आत प्रयों और अभिलेखों के विरुद्ध जानेवाली परम्परा का हमें अवश्य त्याग करना पड़ता है । किन्तु वहाँ भी आप्रता आवश्यक है । पूर्वाग्रह वहाँ भी हो सकता है । मुसलमान इतिहासकार यदि हिन्दू राजा के विषय में कुछ लिखें या चारण और माट किसी सुल्तान, अमीर आदि के विषय में तो दोनों के लेखों की कुछ परीक्षा करनी पड़ती है । इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए हम अभिलेखों, खजाइन, फुतूह, सारीखे फिरोजशाही, फुतूह-ए-सलतान, सारीखे फरिश्ता आदि तबारीखों

और चारणी साहित्य की अनेक पुस्तकों का विषय विवेचन में यथामग्य प्रयोग करेंगे ।

हम्मीरायण ने हम्मीर के पिता का नाम जयतिगढ़ दिया है और हम्मीर महाकाव्य ने जैत्रसिंह । हम्मीर के वि० १३८५ के शिलालेख में जैत्रसिंह नाम ही है, किन्तु यह सम्भव है कि बोलचाल की भाषा में जैत्रसिंह का नाम जैतिग ही रहा हो । हम्मीरायण ने युद्ध का केवल मात्र दर्शन कारण दिया है कि हम्मीर ने विद्रोही मुगल सरदार महिनाशाह और गर्भहर को शरण दी थी । हम्मीरमहाकाव्य को भी यह कारण अज्ञान नहीं है । किन्तु उसने मुख्यता अन्य राजनैतिक कारणों को दी है । एक दिन में दो दिग्विजयी नहीं हो सकते । अलाउद्दीन को यह बात खलनी थी कि रणथंभोर उसे कर नहीं दे रहा था, वहीं रणथंभोर जो हिन्दू समय दिल्ली के अमीन था उधर हम्मीर कोटिमखी था उसे अपने बल का गर्व था । भोज के प्रतिशोध की कथा बाद में आती है उससे काव्य में रोचकता अवश्य बढ़ी है किन्तु यह समझना भूल होगा कि हम्मीरमहाकाव्य ने उसे प्रमुखता दी है । वास्तव में उसका दृष्टिकोण प्रायः वहीं है जो नारीखे फिरोजशाह का । उसे भी मुहम्मदशाह की कथा ज्ञान थी, तो भी प्रमुखता उसने अलाउद्दीन की दिग् विजयी को ही दी है । और वास्तव में यह बात है भी ठीक । इन दोनों उच्चामिलायी व्यक्तियों से युद्ध अवश्यन्मावी था चाहे मुहम्मदशाह हम्मीर के दरबार में शरण ग्रहण करता या न करता । उत्तु के अन्य राज्यों में कौन मुहम्मदशाह पहुँचे थे जो अलाउद्दीन ने उनपर आक्रमण किया ? विरोधाभि तो अलाउद्दीन के समय से पहले ही ज्वलित हो चुकी थी । उसमें मुहम्मदशाह को शरणदान ने एक प्रबल आहुति देकर

पूणन प्रज्वलित कर दिया। इसके अतिरिक्त अन्य घटनाएँ भी हुई जिनसे अलाउद्दीन को रणधम्मोर लेने के लिए और भा दृढ़प्रतिज्ञ होना पड़ा। अत विवेचना से सिद्ध है कि युद्ध के कारण दोनों फायों में ठीक हैं। किन्तु इम्मोरायण ने क्वल तारनालिक कारण देकर मनोप किया है। इम्मोरमहाकाव्य की दृष्टि और कुल गहराइ तक पहुँची है^१।

युद्ध का घटनाओं के वर्णन में कुछ अंतर है किन्तु मुसलमानी तथा रोखा को पढ़ने से प्रजात होता है कि इम्मोरमहाकाव्य ने तालुद्दीन के समय का कुछ घटनाएँ सम्मिलित की हैं। भीमसिंह का मृत्यु और धर्मसिंह का अश्रीकरण शायद सन् १२९१ के लगभग हुए हों। धर्मसिंह पर पुन दृष्टा सन् १२९१ और १२९८ के बीच में हुए होगी। इम्मोरायण आदि में इन घटनाओं का अभाव सम्भवतः तब सन् १२९८ के पूर्व होने के कारण है। किन्तु भाजादि की कथाएँ कल्पित नहीं हैं। खाशधर या खदधर भोज मारनाथ एतिल्ल का प्रसिद्ध व्यक्ति है। उसने तन मन से अलाउद्दीन की सेवा का और वह अतन का हृदय और सामल के विरुद्ध युद्ध करता हुआ मारा गया^२। यही भोज सम्भवतः खेम के पदार्थ कवित्त का भोज है, और यह भी बहुत सम्भव है कि मत्र के दशवें पद्य में भी (जिसमें आधार पर खेम का पन्द्रहवा पद्य लिखा गया है) भोज का नाम रखा हो। श्री

१—अलाउद्दीन का नीति के लिए देखें तारीखे फिरोजसाही, जिन्द ३, पृष्ठ १४८ (इलियट और डाउसन का अनुवाद) भागे दिए हुए मुस्लिम तबाराखों के अवतरण, “अली चौहान डाइनेस्टीज पृ १०८ १०९ और प्रस्तावना के अन्त में प्रदत्त इम्मोर की जीवनी।

२—देखें महभारती, भाग ८, पृ ११० ११४

अगरचन्द्रजी को प्राप्त प्रति में यह कवित्त द्रुष्टित है। भोज का मादे पीथम या पृथ्वीसिंह उन्नी तरह मल्ल के कवित्त ९ का 'प्रिथीराज हो सकता है जिसके रणथम्भोर से प्रयाण और बादशाह से मिलने का स्पष्ट निदेश, "प्रिथीराज परवाण क्रियौ, पनिमाहा भेलो" शब्दों में है। ११ वें पद्य में फिर यही 'पीथल' के रूप में वर्तमान है। इसलिए यदि हम्मीरमहाकाव्य की प्रामाणिकता के लिए भोजादि व्यक्तियों का 'अविनादि' में निदेश अभीष्ट हो, तो वह निदेश भी वर्तमान है।

धर्मसिंह की कथा को कल्पित क्यों माना जाय? उनमें न अमगति है और न अलौकिकता। विद्यापति आदि ने उसका नाम न लिया है तो उसके अनेक कारण हैं। उनकी कथा अत्यन्त सक्षिप्त है। वह उन अमात्यों में भी न था जो भागकर अलाउद्दीन से जा मिले थे। वह हम्मीर के पतन का कारण बनता है, किन्तु केवल ऐसे रूप में जिम्मा अनुमान मात्र किया जा सकता है। ठोक पीट कर देखने में मालूम पड़ता है कि नयचन्द्र को नाम घड़ने की आदत न थी और उसे इतिहास की अच्छी जानकारी थी। और तो क्या उसकी तित्तियाँ तक ठीक हैं। नयचन्द्र ने रणथम्भोर पर अलाउद्दीन के आक्रमण का कारण उसकी दिग्गिगीदा, और रणथम्भोर के पतन का कारण 'सुहयत' हम्मीर की गलत आर्थिक नीति को समझा है। नयचन्द्र ने वास्तव में जिम रूप से कथा को प्रस्तुत किया वह उसे काव्यकार के ही नहीं, इतिहासकार के पद पर भी आसूट करता है। अलाउद्दीन से विप्रह्वन्ध चुका था। बहुत बड़ी सेना, विजोपतः बुइसवारों को रखना आवश्यक था। अतः धर्मसिंह को अपना अर्थ-सचिव बनाकर उसने प्रजा पर खूब कर लगाए। यह आर्थिक उत्पीड़न हम्मीर के पतन का मुख्य

कारण बना। यही तथ्य हम्मीरायण के कर्ना 'माण्डठ' को भी ज्ञात था। हम्मीरायण के महाजन भी सैनिक व्यय के विरुद्ध आवाज उठाते हैं किन्तु सब व्यय के विरुद्ध नहीं अपितु उस व्यय के जो भीर भाइयों के वेतन के कारण उन पर लद गया था।^१

हम्मीर महाकाव्य और हम्मीरायण दोनों ही जाजा को प्रमुखता देते हैं, किन्तु दोनों के स्वरूप में कुछ अन्तर है। हम्मीरायण का जाजा प्राहुणा है। वह छोड़े बेचने निकला है, और दैववशात् उसी स्थान पर पटुच जाता है जो उल्लूखों न घेरा है। उसके सवार मुस्लिम सेना विनाश करत हैं और वह उल्लूखा के भाने की सूचना रणथम्भोर पहुंचाता है। हम्मीर उसे बहुत धन देता है। जब उल्लूखा हीरापुरघाट होकर छाड़णी (फाईन) नगर को जलाकर उसके राज्य स्थान को दहाकर बढ़ना है और हम्मीर महिमासाहि और गामरू को साथ लेकर रात के समय मुसलमानी सैन्य पर आक्रमण करता है हम्मीरायण के जाजा का इसमें कुछ विशेष हाथ नहीं है।

हम्मीर महाकाव्य में जाजा हम्मीर के वीर सेनानी के रूप में वर्तमान है। वह हम्मीर के आठ प्रधान वीरों में एक है। वह उन सेनानियों में से

१ मुसलमानी तबारीखों में धमसिंह का नाम नहीं है। किन्तु उन्होंने दिल्ली सल्तनत का इतिहास लिखा न कि हम्मीर के राज्य का। अन्य बातों में भी हिन्दू साधना पर अनतिहासिकता का आरोप करत समय लेखकों को मुसलमानी इतिहासों की अपूर्णता और उनके पूर्वाग्रहों का भी ध्यान रखना चाहिए। उनमें परस्पर विरोध भी पर्याप्त है।

जिन्होंने अलाउद्दीन के प्रसिद्ध सेनापति उलखाना के छत्रके छुड़ा दिए थे। हम्मीर शम्भु तो जाजा उसके लिए मिर अर्पण करने के लिए नसुयन रावण है।^१ जाजा वह वीर है जो अन्तिम गहरोध में अभिषिक्त होकर स्वामी की मृत्यु के बाद भी टांडे दिन तक गह की रक्षा करता है। वंद जाति से 'चौहान' है।

हम्मीरायण ने भी आगे जाकर जाजा के शौर्य की पर्याप्त प्रशंसा की है। उसमें भी एक स्थान पर रणधम्मीर को जलदरी, हम्मीर को शम्भु जाजा को मिर प्रदान करनेवाले भक्त ने उपमित किया गया है (३०५) किन्तु उसके कुछ नयन हम्मीर महाकाव्य के विरुद्ध पड़ते हैं। वह सर्वत्र प्राहुणे के रूप में वर्णित है। वह देवड़ा भी है जो चौहानों की आखा विशेष है। देवड़े चौहान ह, किन्तु उन्हें देवड़ा कहकर ही प्रायः सम्बोधित और वर्णित किया जाता है। इससे अधिक खटमनेवाली बात यह है कि वह विदेशी के रूप में वर्णित है :—

जाजा तु घरि जाइ, तु परदेशी प्राहुणठ ।

म्हे रहीया गह माहि, गह गाठउ मेतहा नहीं ॥ २८७ ॥

हम्मीर गट में रहेगा, वह उसकी चौज है, उस द्वारा रक्ष्य है। किन्तु जाजा परदेशी अतिथि है। उसे गह की रक्षा में प्राणोत्सर्ग करने की आवश्यकता नहीं। वह अपने घर जाए तो इसमें कोई दोष नहीं। यही बात सामान्यतः परिवर्तित शब्दों में 'कवित्त रणधम्मीर रै राणै हमीर हडालै रा' में भी वर्तमान है (पृ० ४९, दोहा १-२)। किन्तु उसका कर्ता कवि मल्ल 'भाण्डउ' से एक कदम और आगे बढ़ गया है। उसने जाजा को बड़

गूजर बना दिया है (पृ० ४६, पद्य) । इससे अधिक कत्रा का विकास 'माट्ट सेम रचित राजा हम्मीरदे कवित्त' में है जिसके अनुसार 'जाजा वह गूजर प्राहुणा (मेहमान) होकर आया था । उसे राजा हमीर ने अपना बेटी दवलदे विवाही थी । वह सुकुटयद ही मरा । दवलदे राणी तालाव म डूब कर मर गई (दसरे 'दान', पृ० ६४)

किंतु जाजा विषयक प्राचीन सूचनाओं में तो उसका परदेशित्व आदि कहीं सूचित नहीं होता । प्राचुर्यपेद्गलम् के अंतगत जाजा सम्बन्धी पद्यों में हममार उनका स्वामी है (पृ० ३९, पद्य ३), और वह उसका अनुयायी मन्त्रि वर है^१ (पृ० ६०, पद्य ४) वह प्राहुणा नहीं, हम्मीर का विश्वस्त याद्व है । पुस्त्य परीक्षा^२ में भा हम्मीर जाजा को चला जान के लिए कहता है किंतु इसका कारण जाजा का विदेशित्व नहीं है (दसरे परिशिष्ट ३ पृ० ५४) । हम्मीर विषयक प्राचीन प्रसर्धा में विदेशित्व का महिमासाहि आदि तक ही परिमित हैं । हम्मीर महाकाव्य में हम्मीर महिमासाहि से कहता है —

प्राणानपि सुसुक्ष्मो वयमात्मक्षिते किल ।

क्षत्रियाणामय वर्मा न युगात्तेऽपि नरवर ॥ १४९ ॥

युय वदेशिकास्तद्व स्वातु युक्त न सापदि ।

वियासा यत्र कुत्रापि त्रुत्त तत्र नयाभि यत् ॥ १५१ ॥

१ पुर जज्जला मतिवर चलिअ वार हम्मीर ॥

डा० माताप्रसाद गुप्त 'मल' पाठ को विशेष उपयुक्त ममकने हैं ।

इस पाठ पर हम अन्यत्र विचार करेंगे ।

“हम अपनी भूमि के लिए प्राण त्याग के लिए भी इच्छुक रहते हैं । यह क्षत्रियों का वह धर्म है जो प्रलयकाल में भी प्रलुप्त नहीं होता । तुम विदेशी हो, इसलिए आपत्तियुक्त इस स्थान में तुम्हारा रहना उचित नहीं है । जहाँ कहीं जाने की इच्छा हो, कहीं मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँ ।”

पुरुष परीक्षा का कथन और भी ध्येय है । जब हम्मीर जाजादि से चले जाने के लिए कहता है तो वे उत्तर देते हैं :—

“आप निरपराध राजा (होते हुए भी) शरणागत पर कृपाकर संग्राम में मरण को अङ्गीकृत करते हैं । हम आपकी दी हुई आजीविका खानेवाले हैं । अब स्वामी आपको छोड़कर हम कैसे कापुरुषों की तरह आचरण करें । किन्तु कल सुवह महाराज के शत्रु को मारकर स्वामी के मनोरथ को पूर्ण करेंगे । हाँ, इस विचारे यवन को भेज दीजिए ।” यवन ने कहा, “हे देव ! केवल एक विदेशी की रक्षा के लिए आप अपने पुत्र, स्त्री और राज्य को क्यों नष्ट कर रहे हैं । राजाने कहा, ‘यवन, ऐसा मत कहो । किन्तु यदि तुम किसी स्थान को निर्भय समझो तो मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँ ।’ (परिशिष्ट ३, पृ० ५४) । उक्ति-प्रत्युक्ति से स्पष्ट है कि हम्मीर के योद्धा-समाज में केवल एक विदेशी है, और वह जाजा नहीं, अपितु महिमासाहि है ।

‘भाण्डव’ ने न जाने क्यों जाजा पर विदेशित्व का ही आरोपण नहीं किया, अपितु महिमासाहि के लिए प्रयुक्त युक्तियों को भी जाजा के लिए प्रयुक्त किया है । महिमासाहि को जो वचन हम्मीर ने कहे थे उन्हें हम अभी उद्धृत कर चुके हैं । भाण्डव की कृति में हम्मीर प्रायः वही शब्द जाजा से कहता है :—

जाजा तु घरि जाह, तु परदेसि प्राहुणउ ।

म्हे रहीया गढ़ माहि, गट गाडउ मेल्हा नहीं ॥

एक उक्ति मानों दूसरे का भाषानुवाद है । जाजा क विदेशित्व के स्वीकृत होने पर कथा जिस रूप में बड़ी हम ऊपर उसका निशेध कर चके हैं ।

प्रसङ्गवश जाजा के विषय में इतना लिख कर^१ हम फिर इन दोनों काव्यों में वर्णित घटनावली पर विचार करेंगे । यह सप्रसम्मत है कि अलाउद्दीन स्वयं रणथंभोर के घेरे के लिए पहुँचा । किन्तु हम्मीरायण में हम्मीर क रात्रि के आक्रमण क अनन्तर ही सुल्तान रणथंभोर आ पहुँचता है । हम्मीर महाकाव्य का घटना क्रम कुछ भिन्न है । उतुगखां की पराजय क बाद मीर भाइया ने भोज की जगरा पर आक्रमण किया । भोज वहाँ न था । किन्तु उसका भाइ और दूसरे कुटुम्बी मुहम्मदशाह क हाथ पड़े । भोज ने जाकर अलाउद्दीन के दरबार में पुकार की । किन्तु इस बार भी अलाउद्दीन स्वयं न आया । उसने उल्ख और निसुरतखान (उल्खखां और नुमरतखां) को ही युद्ध के लिए भेजा । सिंध का बहाना कर अथ की बार ये घाटी को पार कर गए । मुण्डी और प्रनौली में नुमरतखां और मण्टप

१ जज्जल के महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व पर हमने आज से बारह वष पूर इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली १९४९, पृष्ठ २९२-२९५ पर एक लेख प्रकाशित किया था । डॉ० हजारीप्रसादजी द्विवेदी की 'हिन्दी साहित्य क आदिकाल की आलोचना' में आलोचना करत समय भी हमने यह भी सिद्ध किया था कि प्राकृत काल का जज्जल कवि नहीं अपितु हम्मीर का सेनापति जाजा है ।

में उल्लूखों की सेना जा पहुँची, और वहाँ से उन्होंने मोहण को अपना दूत बनाकर इम्मीर के पास भेजा। इम्मीरायण में स्वयं अलाउद्दीन मोहटा को भेजता है। मुसलमानी तारीख फुतूह-उस्सलतानीन के आगर पर हमें इम्मीरमहाकाव्य का ही कथन मान्य है। दोनों की भाँग में कुछ अन्तर है। इम्मीरमहाकाव्य में यह भाँग लाख स्वर्णमुद्राओं, चार हाथियों, चार सुगलों, राजकन्या, और तीन सौ घोड़ों के लिए है। इम्मीरायण में अलाउद्दीन कुछ भाँगता ही नहीं, अपनी भाँग के स्वीकृत होने पर माह, उज्जयिनी, नाभर आदि भी देने के लिए तैयार है। उसमें शायियों की सख्या अनिश्चित और सुगलों की दो हैं, जो गायक ठीक हैं। साथ ही इसमें बाह और बाह नाम की नर्तकियों के लिए भी भाँग भी गटे हैं। दोनों काव्यों का उत्तर एक ना। ऐसा ही उत्तर 'सुर्जन चरित' में भी वर्णित है, और इसकी नत्यप्रत्ययना फुतूह-उस्सलतानीन द्वारा समझित है।

नुसरतख़ाँ की मृत्यु या प्रसंग दोनों काव्यों में हैं। किन्तु नुसरतख़ाँ किस तरह मरा इसका ठीक वर्णन तो इम्मीरमहाकाव्य में है। तारीखे फ़िरोज शाही से भी हमें ज्ञान है कि जब नुसरतख़ाँ पानीव और गट गज तैयार कर रहा था, दुर्ग पर की किमी मगरिबी या गोला उसे लगा और वह बुरी तरह घायल हो कर तीन चार दिन में मर गया। इम्मीरमहाकाव्य में और तारीखे फ़िरोजशाही में भी अलाउद्दीन इमी के बाद मनेन्य रणयमोर पहुँचता है। उसके पीछे दित्री में विद्रोह हुआ और अन्यत्र भी किन्तु सुल्तान रणयमोर के सामने से न हटा।^३

-
१. फुतूह-उस्सलतानीन का अवतरण आगे देखो।
 २. " " " " "
 ३. तारीखे फ़िरोजशाही का अवतरण आगे देखें।

फरिश्ता ने हम्मीरमहाकाव्य के इस कवन का भी समर्थन किया है कि हम्मीर ने दुग से निकल कर मुसल्मानों को बुरी तरह से हराया। यह पराजय इतनी करारी थी कि एकबार तो मुसल्मानों से सैन्य को घरा उठा कर म्हाइन के दुग में आश्रय लेना पड़ा।^१ हम्मीरायण में मारी गयी मुसल्मानों सेना का सत्या सना लाख और हम्मीरमहाकाव्य में ८५,००० है। वास्तव में मारे गए मुसल्मानों सेनिका का सत्या ८५,०० से भी पर्याप्त कम रहा हागी। एक दो दिन की लड़ाई में उन दिना इतने आदमियों का हत होना असम्भव था।

हम्मीर का नर्तकी धार क मारे जाने की कथा दोनों काव्यों में है। हम्मीरायण ने वारु नाम और बढ़ा दिया है। मल्ल और रोम की कविताओं में भी एक ही बातकी है। वारु, वारुजना का ही पर्याय है। माण्डव ने उसे अलग मसम्भ लिया मालम नेता है। इस कथा का वास्तविकता का कोई निश्चय नहीं किया जा सकता। प्रायः एसी ही कथा का-हट्टे-प्रबंध में भी है।

गढ़ राध क वणन में भी समानता है। हम्मीरमहाकाव्य में अलाउद्दीन के खाई को पुलियों और लकड़ी के टुकड़ों से भरन और दुग तक सुर्य पहुँचाने क प्रयत्नों का वणन है। जिस तरह हम्मीर ने इन प्रयत्नों को विफल किया उसका भी इसमें निर्देश है। यह वणन मुसल्मानों इतिहासकारों द्वारा समर्थित है। हम्मीरायण में खाई का बालू के धेलों से पाट क और उहाँ क बृहत् ढेर पर चढ़ कर गढ़ के कमरों तक पहुँचने का मनोरंजन वणन है। मुसल्मान इतिहासकारों ने लिखा है कि अलाउद्दीन ने बाहर से मँगवा कर सेना में घेले घँटाए थे। 'माण्डव ने उनके पायजामों की ई बालू की पोटलिया बनवा दी है। इस वणन में हम्मीरमहाकाव्य औ

हम्मीरायण ने एक दूसरे की अच्छी अनुपूर्ति की है और दोनों का ही वर्णन तत्कालीन इतिहासों ने समर्थित है। बोरी पर बोरी टालकर मुसल्मान सैनिकों ने एक पाशीव तैयार की। जब यह पाशीव दुर्ग की पश्चिमी बुर्ज की ऊँचाई तक पहुँची, तो उन्होंने उस पर मगरिवियाँ रखीं और उनसे किले पर बड़े-बड़े मिट्टी के गोले चलाने शुरू किए, चौहानों ने अपनी मगरिवियों के गोलों से पाशीव को नष्ट कर दिया। मुरग बनाने वाले सिपाहियों को रालयुक्त तेल के प्रयोग से चौहानों ने मार डाला।^१

दोनों ओर की यह झपट कई दिन तक चलती रही। किन्तु हम्मीरायण का उस समय को बारह वर्ष बतलाना अशुद्ध है। चारणी शैली में गढ़ रोव को बारह वर्ष तक पहुँचाना सामान्य-सी बात रही है। अलाउद्दीन ने राजस्थान के अनेक दुर्गों को लिया। प्रायः हर एक गढ़रोध का समय बारह साल है, चाहे वास्तव में बारह महीने से अधिक समय दुर्ग को इस्तगत करने में न लगा हो।

दोनों काव्यों में लिखा है कि अन्नतः अलाउद्दीन गढ़रोध से थक गया। यह कथन किसी अंग में मुसल्मानी इतिहासों द्वारा समर्थित है। दिल्ली और अवध में विद्रोह के समाचारों से मुसल्मानी सिपाहियों की हिम्मत टूट रही थी। किन्तु उनके हृदय में सुल्तान का इतना भय था कि किसी को इतना साहस न हुआ कि वह रणथंभोर को छोड़कर चला जाए।^२

अलाउद्दीन से बातचीत का वर्णन दोनों काव्यों में है। किन्तु हम्मीरा-

१. तारीखे फ़िरोज़शाही इ० डी० ३, पृ० १७४-५

२. वही, पृ० १७७

रण के वणन में गुरु से ही रतिपाल (रायपाल) और रणमल्ल (रिणमल) अलाउद्दीन के दरबार में पहुँचते हैं। हम्मीरमहाकाव्य में रणमल्ल का विद्रोह रतिपाल की कारिस्तानी का फल है। किंतु इनमें से कोई भी कथन ठीक हो, यह तो निश्चित ही है कि हम्मीर के ये दोनों प्रधान सेनानी शत्रु से ज्ञा मिले थे।^१

हम्मीरायण और हम्मीरमहाकाव्य में काठारी के विश्वासघात या मूर्खता के कारण हम्मीर को यह झूठी सूचना मिलती है कि दुर्ग में धान नहीं है। किंतु खज़ाइनुल फ़तूह के वणन से तो प्रतीत होता है कि दुर्ग में अन्न का वास्तव में अकाल पड़ चुका था। अमीर खुसरो ने लिखा है, “हाँ उनका सामग्री समाप्त हो चुकी थी। वे पत्थर खा रहे थे। दुर्ग में धान का अकाल इस स्थिति तक पहुँच चुका था कि एक चावल का दाना दो स्वणमुद्राओं से ब खरीदने को तैयार थे और यह उन्हें न मिलता था।^२ अलाउद्दीन को इस अन्नाभाव की सूचना देकर रतिपाल और रणमल्ल ने माना दुर्ग के पतन को निश्चित ही बना दिया। हम्मीरायण और हम्मीरमहाकाव्य का यह कथन कि वास्तव में भण्डार अन्न परिपूर्ण थे, सम्भवतः ठीक नहीं है। इसी अन्नाभाव के कारण सम्भवतः हम्मीर की बहुत सी सेना उसे छोड़कर चली गई थी।

दुर्ग में जौहर की कथा सभी प्रयोगों में वर्तमान है। मुसलमानों ने भी इसकी ज्वालाओं को देखा और अनुमान किया कि गद्दरोध समाप्ति पर

१ हम्मीर के कवित्त में भी (देखो पृ० ४७) में अनेक स्वाभिद्रोहियों के नाम हैं। इनमें वीरम को झूठ मूठ समेट लिया गया है।

२ हबीब (अनुवादक), खज़ाइनुलफ़तूह, पृ० ४०।

है।^१ यह कथा दोनों ही काव्यों में वर्तमान है कि गहिमानाहि ने अन्त तक हम्मीर का साथ दिया। किन्तु हम्मीरमहाकाव्य में सुहम्मदशाह के अपने बाल-बच्चों और स्त्री को अस्तिमात् करने की कथा अधिक है। एक मुसल्मान वीर के लिए सम्भवतः जौहर का यही उचित स्वल्प था। बाकी का जौहर का वर्णन आज कठ की Scorched earth Policy की याद दिलाती है जिसमें हम लक्ष्य में कि कोई वस्तु शत्रु के हाथ में न पड़े, सभी वस्तुएँ भूमिसात कर दी जाती हैं। जौहर में स्त्रियों की आहुति ही न होती, हाथी, घोड़े आदि उपयोगी जीव मार दिए जाते, और सार द्रव्य प्रायः वावड़ी, कुएँ आदि ऐसे स्थानों में फेंक दिए जाते जहाँ से शत्रु उनको न प्राप्त कर सकें। रणयभोर के दुर्ग में भी इसी नीति का अनुसरण किया गया था।

जौहर से पूर्व राजवंश के एक कुमार को गद्दी देकर बाहर निकालने की कथा हम्मीरायण में वर्तमान है। हम्मीरमहाकाव्य के अनुसार राजा ने प्रसन्नतापूर्वक राज्य जाजा को दिया। इस विरोध का परिहार शायद किया जा सकता है। हम्मीर ने एक स्ववशज कुमार को बाहर निकाल दिया; किन्तु अपनी मृत्यु के बाद भी दुर्ग के लिए युद्ध करने का भार जाजा को दिया। जालोर में यही कार्यभार कान्हडदे के वीर पुत्र वीरम ने समाला था।^२

हम्मीरायण ने अन्तिम युद्ध में ६ व्यक्तियों की उपस्थिति लिखी है

१ देखें हमारी पुस्तक Early Chauhan Dynasties

पृ १६६, टिप्पण ५८

२ वही पृ ११४।

हम्मीर महाकाव्य में हम्मीर के देहावसान के बाद दो दिन तक जाजा के युद्ध का वर्णन है। “प्राकृतपद्मलम्” आदि में जो अनेक उक्तियां जाजा के सम्बन्ध में हैं, उन में कुछ का जाजा के इस अन्तिम युद्ध से सम्बन्ध हो सकता है। जाजा हम्मीर के लिए क्या नहीं करने को तय था, सेना में सबसे अग्रसर हो युद्ध करने के लिये, सुल्तान के सिर पर अंगूले बट कर तलवार चलाने, सुल्तान के क्रोधानल में आहुति देने, और अपने स्वामी की शिर-कण्ठ द्वारा पूजा करने के लिए, स्वामिमक्ति के इतिहास में जाजा का नाम अग्रगण्य है। हम्मीरायण ने गढ़ पतन की तिथि संवत् १३७१ रखी है जो सर्वथा अशुद्ध है। अमीर तुमरो की टी हुई तिथि १० जुलाई, सन् १३०१ (वि० स० १३५८) है और हम्मीर महाकाव्य की तिथि १२ जुलाई वैश्वती है जो जाजा के राज्य के दो दिनों को सम्मिलित करने से ठीक ही बँठती है।

हम्मीरायण और कान्हडदे प्रबन्ध

हम ऊपर इस बात का निर्देश कर चुके हैं कि हम्मीर महाकाव्य और हम्मीरायण के मूल खोन सम्भवतः कई ऐसे फुटकर काव्य हैं जिनकी रचना हम्मीरदेव के देहावसान के थोड़े समय के अन्दर हुई थी। ‘भाण्डट’ व्यास और हम्मीर महाकाव्य की कथा में साम्य का यह कारण हो सकता है। किन्तु स्थान-स्थान पर यह भी प्रतीत होता है कि भाण्डट व्यास ने हम्मीर महाकाव्य से कुछ बातें ली हैं ; और ऐसा करना अस्वभाविक भी तो नहीं है।

कान्हडदे प्रबन्ध और हम्मीरायण में भी काफी समानता है। कथा का

विन्यास प्राय वही है। जालोर और रणथमार का वणन, सेना का प्रयाण, महमद अहमद काफर और माफर जैसे शब्दों की सूची, राजपूत जातियों के नामो-लेख और यज्ञ का शृङ्गारादि अनक अर्थ एकमे वणन हम्मीरायण के पाठ को काहड़दे प्रबंध की याद दिलाते हैं। नाचे हम कुछ समान शब्दावली का उदाहरण भी प्रस्तुत कर रहे हैं। इनके आधार पर कोई बात निश्चिन्त रूप से तो नहीं कही जा सकती, किन्तु यह विचार कभी कभी उत्पन्न होता है कि भावत ने शायद काहड़दे प्रबंध मुना हो। किन्तु यह ध्यान भा रहे कि यह साम्यना विषय व साम्य और प्रचलित सामान्य प्रणाली के कारण भी हो सकता है।

काहड़दे प्रबंध

हम्मीरायण

- | | |
|---|--|
| १ घट मुक्त निर्मल मति ११ | १ क्या करता मो मति देहि १ |
| २ मुडोधानी कुँअरी घणी,
अतउरी कान्हड़दे तणी ४ ५२ | २ उलग करइ मोटोघा घणी । १९
मोटा राय तणी क्यूरी
परणी पांसइ अतेउरी । २० |
| ३ टांका बावि मया घी तेल
बरस लाग्य पुठुषइ दावण ॥४ ३६ | ३ घीव तेल रा बावटि त्रिमो ।
जीमता नहो के मृन्मी ॥७४॥ |
| ४ इवि परि राचवंस जे सवइ
लइइ ग्राम ग्राम भोगवइ ॥४ ४५॥ | ४ जे मुळवना भाग लइ सुर,
निह नइ घ२ प्रास तणा सवि पूर २१ |
| ५ अगा टोप गगाळि पाका ॥१ १८९ | ५ अगाटोप रिगावली तणा ॥२३॥ |
| ६ काइ तणइ छरनि इसा,
त्रिसी इंदपरि रिदि ॥१ ९ | ६ पुइवा इद्र कहीजइ सोइ
इद्रमया हम्मीरा होइ ॥६॥ |

७. अहि महिमद नड् हाजीऊ ॥४.९५, ७. अहमद महमद महर्वा कीया १०५
हाजी फाल ऊंवरा बड़ा ॥१०४॥
८. घाची मोची मूडे सूतार ॥४.१९॥ ८. मोची, घाची नडे तेरमा, ११०
गाछा छीपा नड् तेरमा ॥४ २० नूडे सूतार तणी नहो मणा ॥१०९॥
९. दल चलन वरणी कांपड, ९. टीली थफड चाल्यु सुरनाण,
सेपन म्हालड मार । सेपनाग टलटलीया नाम ।
सायर तणां पूर ऊलटियां, टगर गुडड समुद्र म्हालड,
जेहवा रेलणहार २६३ त्रिमुवन कोलादल ऊलड ॥१५४॥
१०. मारड देस, फिरड घण फोजड । १०. सनालाख माहि दीधी वाड,
अनड लस्यड धान । लमड ववड माणस आट,
बोलड ठोरवार सपराणा । टाहड पोलि नगर प्राकार,
माणस म्हालड वान ॥१ ७०॥ देश माहि बलि फिर्या अपार ॥१११॥
११. कटक तणी सामगरी दीठी, ११. भाज अम्हारड जिव्यड प्रमाण,
सातल करिड वपाण । हुँ मलड ऊपनड चहुआण ।
वन्य वन्य दिन भाज अम्हारड, रिणयभोर हड होवड राय,
जे आव्यड सुरनाण । २ १०७ मुक्त घरि टीली आव्यड पतिसाइ ।
॥१३२॥
१२. तरल त्रिकलसा म्हालड दे, १२. गोवन कलस टंट म्हालड ।
धन वरोड विनाल । ३.१५४ ऊपरि थकी धजा लहलड ॥११॥
१३. माली तम्बोली सोनार, १३. तबोलीय मालीय कलाल,
चालड घाट घडा मोनार ४.८४ नाचणी मोची नड लोहार ॥१०९॥
१४. नाम्हा सींगणी तीर विछूड, १४. सींगणी तणा विछूड तीर ११८६
निरता वडड नलीवार । २.१२५ यत्र नालि वडड डीकुडी ॥१८७॥
१५. राडलि विहूँ सिखावण कही । १५. राय सिखावणि दीवी मली ॥२६०॥
॥४ १४३॥

हम्मीरायण के स्वतन्त्र प्रयोग

हम्मीरायण में कुछ ऐसे प्रसङ्ग भी हैं जो कादम्बरि काव्य से ही नहीं हम्मीर महाकाव्य से भी सवधा स्वतन्त्र हैं। महिमासाहि और मीर गामरु को शरण मिलने पर महाजर्ना का हम्मीर के पास पहुँच कर उसे इस नाति के विरुद्ध समझाना ऐसा ही प्रयोग है। कादम्बरि प्रबंध में महाजन का हृदये के पास अवश्य पहुँचते हैं किंतु उनका व्यवहार इनसे सवधा भिन्न है। उनमें स्वात्मिकता तो इनमें स्वाय है जब मुसलमानों सेना रणमोर पर आक्रमण करता है तो सहायता प्रदान न कर व दुःखाना में बठ हैंसते हैं। अन्त में एक वर्षिक जौहर का कारण बनता है। किंतु सांसारिक दृष्टि से महाजर्ना की सलाह ठीक थी, और भाण्ड ने उसे बहुत सुंदर शर्तों में दिया है —

विष बन्नी उगतही, नह न खग जे (होइ)

इणिवलि जे फल लागिस्य देखललट मरुवइ कोए ॥ ८१ ॥

इणि बन्ना जे फल लागिसइ, थोटा दिन माहि ते दोसिमइ

निहरा सिमा हुस्यइ परिषाक स्वादि जित्या हुस्य ते राख ॥ ८२ ॥

जब मुसलमानों सेना रणमोर की ओर बढ़ती है तब सा टनी रूपक को प्रयुक्त करते हुए कवि ने कहा है —

हाट बइया इसइ थानि सा, बलिगना फल जोभठ मयाणिया ॥ ७३ ॥

जाता को बिगना प्राहुजा बइकर इस बाग का भत तक निवाइ करना भा भाण्ड स्वाम का हा एक प्रमाण होता है। विषय होने

पर नगर में उत्तम के वर्णन हम्मीर महामन्त्र्य में हैं, और कान्हड़दे प्रबन्ध में भी । किन्तु वर्णन के वर्णन में भाण्डत ही कह सका है :—

रणमववरि वधावड मरड, ते मूरिख मनि हरख जि भरड”

नाण्डभाट का अलाउद्दीन के दरवार में जाना, अलाउद्दीन से उत्तर प्रत्युत्तर करना, और अन्त में अलाउद्दीन द्वारा स्वामिद्रोहियों को मरवाना भी सम्भवतः भाण्डत की ही मूल है । वीर भाट जाति की युद्ध में उपस्थिति और उसके महत्त्वपूर्ण कार्य का यह एक पर्याप्त पुराना उदाहरण है ।

कान्हड़दे प्रबन्ध में अनेक राजपूत जातियों की सूची है । किन्तु हम्मीरायण की सूची में संदा, वदा, कछवाहा मेरा, मुक्त्रिआण, बोटाणा, नाटी, गौट, तेवर, सेल, डामी, डाडी, पयाण, रुण, गुदिलत्र, गदिल, भिबल, मंडाण, चंदेल, खाडडा, जाडा, और निकुंद नाम अतिक्र है । सख्या भी जोड़ने पर पूरी हत्तीम बैठती है । घरे के वर्णन में भी सामान्यतः कुछ नडे बातें हैं जिनका ऊपर निर्देश हो चुका है । रणमडल और रायपाल किम चाल से एक लाख मैनिओ को किले से निकाल ले गए—यह भी कुछ नवीन सूचना है ।

हम्मीर के अन्तिम युद्ध के वर्णन में भी भाण्डत ने अच्छी सफलता प्राप्त की है । ये पद्य पठनीय है :—

जमहर करी छडउ हुयड, हमीर टे चहुयाण ,

सवालाख सभरि धर्णी; घोड़इ दियड पलाण ॥ २७९ ॥

छत्रीसड राजाकुली, ऊलगना निसि दीनः

निणी वेला एको नहीं, उवाडउ लेवहु ईम ॥ २८० ॥

हाथी घोड़ा घरि हूँता, उलगाणा रा लाख ,

सान छत्र धरता तिर्हा कोइ न साइइ बाग ॥ २८१ ॥

अन्त में इम्मीर की राजलक्ष्मी के अन्त से भी माण्डव ने एक अपने
दग का नवीन निष्कय निकालत हुए लिखा है —

(ए) खाज्यो पीज्यो विलसज्यो, ज्यारइ सपइ होइ ।

माइ म करिज्यो लरमी तणउ भजरामर नहिं कोइ ॥ २८७ ॥

(ए) खाज्यो पीज्यो विलसज्यो धनरउ ऐज्यो लाइ ,

कथि ' भांडव असउ कहइ देवा लांबी बाइ ॥ २८८ ॥

मोल्हा माट ने भी जिस रूप से अलाउद्दीन का सन्देश इम्मीर के
सामने पेश किया है उसमें अच्छा उक्ति वैचित्र्य है । ' माट ने कहा
ह राजा सुनो लक्ष्मी और कीर्ति तुझे वरण करने के लिए आई है ।
मच कह तू किस से विवाह करेगा । तू बर है, वे दोनों सुन्दर तरुणियाँ
हैं । सुल्तान ने स्वयंवर रचा है । हे इम्मारदे, जिसे तू ठीक समझे
ग्रहण कर । राजा ने कहा, ' हे चारहट कीर्ति और लक्ष्मी में कौन मली
है ? लक्ष्मी स बहुत द्रव्य घर आएगा । कीर्ति देश, विदेश में होगी ।'
मोल्हा ने कहा ' मुझ सुल्तान ने भेजा है । उससे तू कुमारी देवलदे का
विवाह कर और उसक साधर्म धार और बाळ को भेज । सुल्तान ने ब्रह्म
से हाथी और दो मीर भी मंगे हैं । इतना करने पर वह तुम्हें निहाल
कर देगा । वह तुझे भांडव उर्ज्जन, और सवालाख सांभर देगा ।
य चारों बातें पूरी कर अनन्त लक्ष्मी का भोगकर । राजा सुनो, कीर्ति दुलम

१—यह अर्थ सवथा स्पष्ट नहीं है । वास्तव में ये स्थान उस समय न
बादशाह के अधीन थे, और न इम्मीर के ।

होती है। यदि तू नमन न करेगा तो तुझे दुःख ? (विपद्) की प्राप्ति होगी। यदि तू शरण न देगा तो तुम्हें कीर्ति भी प्राप्ति न होगी।” (१४६-१५२) इसका जो उत्तर हम्मीर ने दिया, वह उनके चरित्र के अनुरूप ही है।

वीरों की गाथा के गायन को मध्यकालीन कवि पवित्र मानते रहे हैं। पद्मनाभ ने कान्हड़दे प्रबन्ध को पवित्र ग्रन्थों और तीर्थों के समान पवित्र समझा है। माँडड व्यास को भी अपने ग्रन्थ की पवित्रता में विश्वास है :—

रामायण महाभारथ जिसड, हम्मीरायण तीजड तिमड •

पढइ गुणइ संभलइ पुराण, तियां पुग्पां हुड गग मनान ॥ ३२४ ॥

सकल लोक राजा रंजनी, कलियुगि कथा नवी नीपनी •

मणतां दुख दालिद सहु टलइ, भाँडड कहइ मो अफलां फलइ ॥ ३२६ ॥

प्रतीत होता है कि रामायण नाम को ध्यान में रख कर ही माँडड व्यास ने अपने ग्रन्थ का नाम हम्मीरायण रखा है।

रणथंभोर का भौगोलिक वृत्त

रणथंभोर की चढाई के वर्णन को उसकी स्थिति के ज्ञान के बिना अच्छी तरह समझना असम्भव है। इसीलिए शायद भाण्डड व्यास ने रणथंभोर का कुछ वृत्त दिया है जो भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टि में महत्त्वपूर्ण है। उस नगरी में अनेक विषम घाट बापी, और सरोवर थे (७),

और चार मुख्य फाटक थे। इनमें पहले दरवाजे का नाम नवलखी था, जो अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है (९)। कलाध्वजादि से मंडित उसमें अनेक मन्दिर थे, उसमें कोटिध्वज अनेक व्यापारियों की दान शालाएँ थी, नगर में अनेक जमी, बना रहते। हजारों वेदियाएँ भी उसमें थी। राजा श्रीलाक्यमन्दिर शैली के बने महल में रहता। पास ही गरमी और सर्दी के लिए उपयुक्त महल भी थे।

रिण और धम के बीच में नीची जमान थी (१७)। जब अलाउद्दीन रणधमोर पहुँचा तो इम्मीर ने चारों दरवाने सजाए (१३५) गढ़ को सेना के बल से लेने में अपने को असमर्थ पाकर उसने गढ़ की बनावट को ध्यान में रखते हुए उसे लेने के अर्थ उपाय किये थे (१९३)। हम ऊपर बता चुके हैं किम प्रकार रिण पर पानीब बनाने का प्रयत्न किया था। भाण्डव ने इसका उत्तम रूप मनोरञ्जक बनाया है। कहा जाता है कि अलाउद्दीन ने सब फौज का आज्ञा दी कि वह उस झील को बालू से भरे। मुसलमानी फौजिया ने लड़ना छोड़ दिया सूयन की पोतली बनकर उस से बालू ला लाकर व वहाँ ढालने लगे। छठे महीने यह काम पूरा हुआ। वगैरों तक अब मुसलमानी फौज के हाथ पहुँचने लगे उसमें राजा इम्मीर का अत्यन्त चिन्ता हुई (१९८-२०१)। किम प्रकार यह प्रयत्न विफल हुआ यह ऊपर बताया जा चुका है।

इम्मीर महाकाव्य में रणधमोर के पद्मसर का वणन है (१३९२)। यह तालाब अब भी पद्मसा के नाम से प्रसिद्ध है। अजुलफजल ने इस प्रसिद्ध दुग के बारे में लिखा है 'यह दुग पहाड़ी प्रदेश के बीच में। इसलिए लोग कहते हैं कि दूसरे दुग नगे हैं, किंतु यह बहुरवाद है।

इसका वास्तविक नाम रन्त-पुर (रण की घाटी में स्थित नगर) है, और रण उस पहाड़ी का नाम है जो उसकी ऊपरी ओर है (अकबरनामा, २, पृ-४९०), रणथंभोर के दुर्ग को हस्तगत करने के लिए अकबर ने रण की घाटी के निकट ऊंची सवात बनाई और रण की पहाड़ी पर से यथा तथा सवात के सिर तक पत्थर फेंकनेवाली तोपें पहुँचाई ।

वीरविनोद में भी लिखा है, “ऊपर जाकर पहाड़ की वलन्दी ऐसी सीधी है कि सीढियों के द्वारा चढना पडना है और चार द्वाजे आते हैं । पहाड़ की चोटी करीब एक मील लम्बी और इस कद्र चौड़ी है, जिस पर बहुत संगीन फसील बनी हुई है । जो पहाड़ की हालत के मुवाफिक ऊंची और नीची होती गई है और जिसके अन्दर जा बजा दुर्ज और मोर्चे बने हुए हैं ।”

इम्पीरियल गजेटियर में भी प्रायः यही बातें हैं । साथ ही यह भी लिखा है कि पूर्व की ओर नगर है जिसका दुर्ग से सम्बन्ध पैड़ियों द्वारा है ।

डा० ओम्हा का भी यह टिप्पण पठनीय है, “रणथंभोर का किला अंडाकृति वाले एक ऊँचे पहाड़ पर बना है, जिसके प्रायः चारों ओर अन्य ऊँची ऊँची पहाड़ियाँ आ गई हैं जिनको इस किले की रक्षार्थ कुदरती वाइरी दीवारें कहें, तो अनुचित न होगा । इन पहाड़ियों पर खड़ी हुई सेना शत्रु को दूर रखने में समर्थ हो सकती है । इनमें से एक पहाड़ी का नाम रण है जो किले की पहाड़ी से कुछ नीची है और किले तथा उसके बीच बहुत गहरा खड्डा होने से शत्रु उधर से तो दुर्ग पर पहुँच ही नहीं सकता ।” (उदयपुर का इतिहास, भाग १, पृ० ४)

नागरा प्रचाग्निा पत्रिका भाग १५, पृष्ठ १५७-१६८, में श्री पृथ्वीराज चौहान का 'रणधमोर' पर लेख भा पठनीय है। इसके मुख्य तथ्य निम्नलिखित हैं —

- (१) मोरकुण्ड से पहाड़ी का चढ़ाव है। यहाँ से कुछ चढ़ कर पक्का परकोटा और मोर दरवाजा नाम की एक पोली है।
- (२) यहाँ से उतर कर और फिर उतार चढ़ाव के बाद दूसरा परकोटा है जिसका नाम बड़ा दरवाजा है।
- (३) इससे उतर कर एक बड़ा मैदान है जिसके तीन तरफ पहाड़ियाँ और चौथी ओर रणधमार का दुग है। इसी मैदान में पगला तालाब है, छोटा पगला दुग में है।
- (४) आध कोस चलने चलो पर किले पर चढ़ने का फाटक आता है जिसे नौलखा कहते हैं। किले का पहाड़ ओर से छोर तक दीवार की तरह सीधा खड़ा है। उस पर मजबूत पक्का परकोटा और बुज बने हुए हैं।
- (५) नौलखा दरवाजे से ऊपर तक पक्की सीढ़ियाँ बनाई गई हैं, जिन पर तीन फाटक बीच में पड़ते हैं।
- (६) किले में पाँच बड़े तालाब हैं।
- (७) दिना दरवाजे पर शंकर का मन्दिर है। यहीं राव इम्मीरदेव का सिर है जो मनुष्य के सिर के बराबर है। कहते हैं राव इम्मीर जब अलाउद्दीन का परास्त करने आए ता गढ़ में रानियाँ को न पाया। वे सथ भस्म हो गई थीं। राव का इससे इतनी ग्लानि हुई कि उहाँने आत्मघात करने का निश्चय कर लिया, लेकिन कुछ विचार कर गिब के मन्दिर में गया और पूजन कर कमल काट कर शिव पर चढ़ा दिया।

(८) गढ केवल साठे तीन कोस के घेरे में है, पर है सीधे खड़े पहाड पर । किले के तीन ओर प्राकृतिक पहाडी खाई और झुरमुट हैं । खाई के उस ओर वैसा ही खडा पहाड है जैसा किले का । उस पर परकोटा खिंचा है । फिर चौतरफा कुछ नीची जमीन के बाद तीनरे पहाड का परकोटा । इस प्रकार किला कोसों के बीच में फैला हुआ है ।

हम्मीरायण के १२५ वें पद्य 'सनपुड़ा' का नाम है यह बड़ पर्वतमाला है जिस में से निकल कर वनास दक्षिण प्रवाहिनी बनती और चम्बल नदी से जाकर मिलती है । सनपुड़ा के अद्रिघट्टो को पार करना अमान न रहा होगा ।

हम्मीरायण का चरित्र-चित्रण

हम्मीरायण में कुछ पात्रों का अच्छा चरित्र-चित्रण हुआ है । इमीरदे शरणगन रक्षक (३०७), 'रण अभंग' (२९) 'अगजिन राव' (२१६) और कीर्तिवनी (१४८) हैं । अलाउद्दीन की मांगों को ठुकराते हुए वह सुल्तान के दूत मोल्दण से कहता है ।

कीरनि मोल्दा वरिजि मइ, लाछी तुं ले जाइ ;

डाम अग्रि जे उपडड, ते न आपडं पतिसाह "१५३"

जइ हारडं नड हरि मरणि. जइ जीपडं तड डार,

राड कइइ वारइट, निसुणि, विहुँ परि मोनइ लाइ "१५६"

हम्मीर कीर्ति का प्रेमी है लक्ष्मी का नहीं । बादशाह ने उसके गढ मांगा था, वह उसे दर्माग्र भी देने को तैयार नहीं है, उसे जय और पराजय दोनों में ही लाभ दिखाई पडना है, जय में अपनी वान रहेगी, युद्ध में

मृत्यु हुई तो वकुण्ठ की प्राप्ति होगा। स्वार्थी महाजन और सुल्तान ऐसे-
 वार को शरणागतों को समर्पित करने के लिए राजी या विवश न कर सके
 ता आश्चर्य ही क्या है? किन्तु हम वीर राजपूत में नौकरों की पूरी
 पहचान नहीं है इसलिए यह अपने प्रधानों से धाखा खाना है। अपनी
 आण की रक्षा में स्वयं को या प्रजा का भी कष्ट सहना पड़े ता इसकी उसे
 चिन्ता नहीं है। शत्रु के भाग झुकना तो उसने सीखा ही नहीं —

मान न मेल्यत आपणत नगी न दोषउत्तम ।

नाम हुवउ अविचल मही, चद सूर दुय जाम ॥३०८॥

हमौर महाकाव्य में हममार के चरित में कुछ विकास भी है। अन्तिम
 युद्ध के समय में अपन भाई के प्रेम के कारण घोड़े से उतर कर लहू लहान
 पैरों में युद्ध में अग्रसर हात हमौर का दृश्य हृदयद्रावक है। यहाँ करुण
 और धार रसों का एक विचित्र मेल है जो अन्यत्र नहीं मिलता।

हमारा मुख्य चरित्र महिमासाहि का है। यह अद्वितीय धनुर्धर,
 स्वाभिमानी और दृढ़प्रतिज्ञ है हमौर ने उसे भाई के रूप में स्वीकार
 किया है और दोनों इस भ्रातृत्व की भावना का अन्त तक निर्वाह करते हैं।
 किन्तु हमौरायण में महिमामाहि (मुहम्मदशाह) के चरित्र की उदात्तता
 पूणतया प्रस्फुटित न हो सकी है।

रणमल्ल और रायपाल हममार के कृतन स्वामिद्रोही अमात्य हैं जिन्हें
 अन्त में अपनी करणा का फल भोगना पड़ता है। स्वार्थी महाजनों का भी
 'माण्ड' ने अच्छा खाका खींचा है। परिचर्यों में नातह भाट का चरित्र
 अच्छा बना है। जाजा के विषय में हम ऊपर पर्याप्त लिख चुके हैं। उसका
 चरित्र प्रस्तुत करने में 'कवि' ने सफलता प्राप्त की है। हमौर को इश और

उसे भक्त के रूप में देखने के रूपक को अन्न तक निवाहते हुए भाण्ड ने लिखा है :—

‘जाजठ’ सिर सिर ऊपरि क्रीयत, जाणे ईश्वर तिणि पृजीयत ॥२९५॥

‘वीरमठे’ रट मायउ ठेठि, वेउ मीर पय्या पग हेठि ॥२९६॥

जाजा का मस्तक हम्मीर के सिर पर था, नानों ईश्वर का उसने अपने सिर से पूजन किया हो ।

देवलटे सरल स्वभाव की राजपूत कन्या है जो पिता को बचाने के लिए अपना बलिदान देने के लिए उद्यत है । शायद कई अन्य राजपूत कन्याओं ने भी इसी प्रकार कहा हो :—

देवलटे (इ) कहइ सुणि वाप, मो बडइ टगारि नि आप,

जाणे जणी न हुती घरे, नान्हीं घकी गई त्या मरे ॥ २३२ ॥

प्रतिनायक अलालदीन का चरित्र खींचने में भी भाण्ड ने कुछ कौशल से काम लिया है । वह दिग्विजयी है । (८३) उसे यह सद्य नहीं है कि उसका अपमान कर कोई मनुष्य सजा पाये बिना रह जाय (८६-८८) किन्तु वह देश की व्यर्थ लूट पाट के विल्द है (११८-११९) किन्तु हम्मीर के भाट का वह सम्मान करता है । उसमें वह चालाकी और फरेब भी है जिससे एक शत्रु को वग में कर वह दूसरे को नष्ट कर सके । किन्तु वास्तव में वह कृतघ्नता का विरोधी और स्वामिभक्ति का आदर करता है । हम्मीर की मृत्यु होने पर वह स्वयं पेंदल रणक्षेत्र में आता है हम्मीर आदि के वारे में पूछ कर उनकी उचित अन्त्य क्रिया करवाता और स्वामिद्रोही रणमल्ल आदि को उचित दण्ड देता है । हम्मीर की मृत्यु से उसे कुछ दुःख है :—

सौमणी गुण तोड़इ सुरताण आलम साह न खाड (न) खाण (२६८)
 उलूख्वाँ आदि के चरित सामायत ठीक हैं। वणन बहुल होने के
 कारण अन्य अनेक प्राचीन काव्यों की तरह यह काव्य चरित्र के विकास
 पर विशेष धन न दे सका है।

सामन्तशाही जीवन और मैन्य सामग्री

उस समय के जीवन क अनेक पहलुआ पर, विशेषत तत्कालीन
 सामन्तशाही जीवन और साथ सामग्री पर हमें इस काव्य से पर्याप्त सामग्री
 मिला है। राजा का मुख्यता तो स्वीकृत ही है। उस की नीति पर
 सब कुछ निर्भर था और यह नीति शान्ति की भी हो सकती थी और
 विग्रह की भी। किन्तु नीति का निर्धारण करने पर भी उसके लिए यह
 आवश्यक था कि वह समाज के दो प्रभावशाली वर्गों, सामन्तों और महा
 जनों को अपनी ओर रखे। यही उसकी जन शक्ति और धनशक्ति के
 आधार थे। सामन्तों का और सामन्ता के प्रति राजा के व्यवहार का इस
 काव्य में अच्छा वणन है। राजा क सामन्तदल न सवालाख घोड़े थे
 (१९)। कुलवान् और अच्छे गुर यत्तियों को राजा पूरा वेतन (ग्रामादि)
 देता। समय पड़ने पर व उसका काम निकालते। वह उनका कमी
 अपमान न करना (२१)। व कमी किसीका प्रणाम (जुहार) न करते, घर
 बैठ भंडार खाते, युद्ध म वे किसी से भी न टरते। भगवान् से भी लड़ने
 के लिए तैयार रहते (२२)। उनके पास ऋच और अनेक प्रकार के
 शस्त्रास्त्र थे। सुर वश के रणमल और रायपाल हमीर क प्रधान थे।
 उन्हें आधी बूंदी ग्रास (जागीर) में मिली थी। जब मुहम्मदशाह और

उसका भाई रणथमोर पहुँचे तो राजा ने उन्हें भी अन्त्री जागीर दी और साथ ही नकद वेतन भी दिया (५१-२)। युद्ध का आरम्भ होते ही इन वीरो के पास मंदेश पहुँचना —

लहना ग्रास अम्हारड घणा । द्विव अन्नर दाखड आपणा (७७)

और ये सब नियत स्थान पर आकर एकत्रित हो जाते (देखें ७७-७९, १६६-१७१) इनमें सभी राजकुलों के लोग रहते। यह त्रान्तिमात्र है कि परमारवंशी राजा के अनुयायी परमार और चौहान के चौहान ही होते। रणमल्ल और रतिपाल सूर वंश के थे। हम्मीर के अन्तिम मंग्राम में उसका साथ देनेवाले चार राजपूतों में एक टाक, एक परमार, एक चौहान और एक अज्ञातवंशीय राजपूत था।

दूसरी शक्ति धनी महाजनो की थी। युद्ध के आर्थिक साधन इन्हीं के हाथ में थे। इसलिए राजनीति में भी इनका दखल था। हम्मीरायण में महाजनो को हम्मीर के पास पहुँचना और स्पष्ट शब्दों में हम्मीर की नीति को अपरीक्षित और अयुक्त कहना—इसी महाजनी प्रभाव का प्रमाण है। उनका असहयोग उनके पतन का एक मुख्य कारण भी है। जालोर में इसी वर्ग का समर्थन कान्हडदेव के अनेक वर्षीय सफल विरोध की नींव बन सका था^१।

स्वयं राजा के पाँच सौ हाथी और 'सहस एक सह 'पंच' घोड़े थे और वह सवालख सामर का प्रभु था (१९-२०)। अनेक प्रकार के योद्धाओं के और हाथी घोड़ों के तनु-त्राण आदि उसके पास थे उसके कोष्ठागारों में धान्य का सग्रह था (२३-२४)। उसके ५०० मन सोना और करोड़ों

का धन था। कहने का तात्पर्य यह है कि तत्सामयिक राजा दुर्गों में इन सब सामग्री को तैयार रखते। दुर्ग को अच्छी तरह सज्जित रखना तो उस समय राजपूतों के लिए सर्वथा आवश्यक था ही। यही मध्यकालीन राजपूतों के स्वातंत्र्य संग्राम के साधन और प्रतीक थे। इन्हीं के सामने से मुसलमानी सेनाओं को हताश होकर अनेक बार पीछे लौटना पड़ता था। जब तक जल और धान्य की कमी न होनी, दुर्गस्थ सेना प्रायः लड़नी ही रहती। कई बार रात में सहसा दुर्ग से निकल कर ये शत्रु पर आक्रमण करते (७९)। शत्रु को चिढ़ाने के लिए कगुरा पर छोटी पताकाएँ लगाते दरवाजों का शृङ्खल करके और युर्ज-युज पर निशान बजाते। गाना बजाना भी होता। दोनों ओर से बाण छूटते। मगरिबी नाम के यंत्रों में नीच की संज्ञा पर गोले बरसाए जाते। टैंकलियों से भी पत्थर फेंके जाते। नलियारों का भी हम्मीरायण और हम्मीर महाकाव्य में बर्णन है। (११३-१८७)

खज्राड गुलफुतुह पत्थर बरसाने वाले यंत्रों में से इरादा, मजनीक और मगरिबी के नाम हैं। जिस प्रकार के पत्थर फेंके जाते थे, उन्हें कई वर्ष पूर्व मैंने चित्तौड़ में देखा था। दायद अब भाव अपने स्थान पर हैं। दुर्ग से राल पिछे तैल जलत हुए बाण, और दूसरी भाग लगाने वाली वस्तुओं का भी प्रयोग होता। खज्राडगुलफुतुह में रणधमोर के घेरे के बर्णन से स्पष्ट है कि मुसलमानी सिपाहियों को कदम कदम पर भाग में से बढ़ना पड़ा था। ऊपर से पायकों ने बाणों की वर्षा की। अन्ततः मुसलमानों को हताश होकर वापस लौटना पड़ा।

दुर्ग लूने के उपायों का भी हम हम्मीरायण में पाते हैं। गढ़ को जलनी सुरी तरह से पराजित करना कि उसमें से कुछ न भा जा सक :—

सब गाढउ विद्युत्त सुरताणि, को सलकी न सकइ तिणि ठामि ।

माँहो माहि मरइ लखकोड़ि, पानिसाइ नवि जाए छोड़ि ॥२११॥

ऐसी अवस्था में दुर्ग में प्रायः अन्न का कर्मा पढ जानी और उसे आत्मसमर्पण करना पड़ना । अन्दर के लोगों में से किसी को लालच देकर फोड़ लेना दूसरा साधन था । राजपूतों के अनेक दुर्गों को इमी साधन के प्रयोग से मुसलमानों ने प्रायशः हस्तगत किया था । सुरंग लगा कर रणथंभोर लेने के प्रयत्न का हमीर महाकाव्य में वर्णन है । पाशीव या शीवा बना कर रणथंभोर को हस्तगत करने की भी कोशिश की गई थी । पाशीव बनाने में लकड़िया डाल-डाल कर एक ऊँची बुर्ज तैयार की जाती और जब उसकी उँचाई प्रायः दुर्ग की उँचाई तक पहुँच जाती तो उस पर मगरिवियां रख कर दुर्ग के अन्दर के भागों पर गोलाबारी की जाती । बालू की बोरियों से भी पाशीव तैयार हो सकता था । हमीरायण (१६८-२००) और खजाइनुलफुतूह के अस्पष्ट वर्णनों से प्रतीत होना है कि अलाउद्दीन ने कुछ ऐसा ही प्रयत्न किया था, किन्तु वह कृतकार्य न हुआ । हमीरायण ने जलप्रवाह से बालू बहजाने पर घाटी का रिक्त होना लिखा है (२०२), किन्तु खजाइनुलफुतूह ने मुसल्मानी सेना को रोकने का श्रेय वीर दुर्गस्थ राजपूतों को ही दिया गया है । उनके अग्निबाणों में से हो कर जाना आग में से गुजरना था । साथ ही ऊपर से बाणों की वर्षा और मगरिवियों की निरन्तर मार भी थी ।

यंत्र नालि बइइ ढोंकुलि, सुभट राय मनि पूजइं रलि ।

मरइ मयंगल आवटइ अपार, आहुति लइ जोगिणि तिणि बार ॥१८७॥

(देखें खजाइनुलफुतूह, जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री ८, पृ० ३६१-३६२)

इसी तरह बर्नी ने भी इस उपाय के निष्फल होने का निर्देश किया है। युगमग होने पर हथियार न डालना, राजपूतों की विशेषता थी। इसी कारण से शत्रु यथाशक्ति अन्य उपायों द्वारा ही युग को हस्तगत करने का प्रयत्न करते। दुर्ग में सीधा घुसना तो सर्प के मुँह में हाथ डालना था। *

सामाजिक जीवन

हम्मीरायण आदि काव्यों के आधार पर तात्कालिक सामाजिक जीवन के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। सक्षेप में ही ब्राह्मणों के प्रति आदर, महाजनों की दृढ़ आर्थिक स्थिति वीरों का धमगत भेद होने पर भी परस्पर सौहार्द, बेइया प्रथा का प्रयास प्रचार, नाट्य वृत्य सगीतादि में जनता की रुचि और दानशीलता आदि कुछ ऐसे विषय हैं जिनका हमें इस काव्य से अच्छा ज्ञान होता है। विशेष रूप से नारद भाट का चरित पठनीय है। चारण और भाट मध्यकाल में प्रायः वही महत्त्व रखते हैं जो सामन्त और सरदार। चौदहवीं शताब्दी के महान् कवि पण्डित ज्योतिरीश्वर के वर्णरत्नाकर का निम्नलिखित भाग का वर्णन इतना सजीव और मध्यकालीन स्थिति का परिचायक है कि पाठकों के समक्ष उसे उपस्थित करना हम उचित समझते हैं, वर्णन निम्नलिखित है —

अथ भाट वर्णना—मारपरिकली परिहने । सारु मोनाक टाड चारि परिहने । खडनीक पाग एक मया बचने । सान सूचीक करामो एक । देषगिरिभा पछेमोला एक फाण्ड बचने । तीपि गोपि बाङ्कि नीकि सोना

* गद्गद आदि कुछ अन्य यन्त्रों की परिभाषा के लिए आगे दिये गुरुसमानी तबारीखा के अक्षरण देखें।

के पर जे तिहु वानी । लोहारु निर्म्म उलि सोनाक टोर छुरी एरु
 वाम कह बन्धने । पुनु कहमन माट, मस्कन, प्राकृत, अवइठ, पैशाची,
 सौरसेनी, मागधी कहु भापाक तत्वज्ञ, गङ्गारी, अभिरी, चाण्डाली, सावली,
 दाविली, औतकलि, विजातीय ॥ सानहु उपमापाक कुशल । पानिनि,
 चान्द्र, कलाप, दामोदर, अर्द्धमान, माहेन्द्र, माहेश, सारस्वन, प्रभृति ये
 आठओ व्याकरण ताक पारग । धरणि, विश्व, व्यालि, अमर, नामलिङ्ग-
 अजयपार, शाश्वन, रुद्र, उत्पलिनो, मेदिनीकर, हारावली प्रभृति अठारह
 ओकोपतं न्युत्पन्न । ध्वनि, वामन, दण्डी, महिमा, काव्यप्रकाश, दशरूपक,
 रुद्र, शृङ्गारतिलक, सरस्वतीकण्ठाभरणादि अनेक अलङ्कारक विज्ञ । शम्भु,
 वृत्तरत्नाकर, काव्यतिलक, छन्दोविचिनि, भारतीभूषण, कविशेखर प्रभृति
 अनेक छन्दोग्रन्थ त कुशल । कादंबरी, चक्रवाल धायस, गद्यमाला, अपूर्व छद्
 हर्षचरित, चम्पू, वासवदत्ता, शालमञ्जरी, कर्पूरमञ्जरी, प्रभृति अपूर्व ग्रन्थ
 कृताभ्याम । केवारी, गोहरिआ, माक्रिक, शुद्धमुख, निरपेक्ष, दाना, कवि
 सानओये मट्टगुण ते सम्पूर्ण ।

स्वामि वर्णादिनि पीछा कह मण्डलि क्वानीए धर ओले माट टेनुअह ।
 तका पछा केओ विठालि चलल, के ओ पएरेहि, काहुका नालिका क्वानी
 धएले, काहुका पुत्र, काहुका बहुआरी, कओनवो सुतह क्वानी धरल ।
 जओ युलाविअ तयो मन्द बोलता बलवड चरि चरि औपय खएले ।
 ओगला सैवानक अइसनि आंखि कएले । ओइहुलक माला एकहोक
 परिहले, मयाये आनक मारि से तन्हिक सिज्जाल धारले चिरले अछवाहे
 पेटे वाङ्गे वाइ बोलइ समयहे । इथ ओ नाक साप अइसनोइ । कात्तिक
 कस्याण करइत आइ, नगारि बिस तीसते परिवेष्टित माट टेपु”

इस उद्धरण में भाट की बश भूषा, विद्या, व्यवहारादि समीक्षा वणन है। उसके बहुमूल्य वस्त्र आभूषण और आयुः उच्चपद के अनुष्प है। उसका शास्त्रीय ज्ञान इतना प्रगाढ़ है कि बड़े बड़े पण्डिता और कवियों के ज्ञान को मान करता है। वह स्वमापाविज्ञ अष्ट-व्याकरण पारंग, अष्टादश कोष-युत्पन्न, अनेक भलङ्कार विज्ञ एवं बहुत ग्रन्थ कृताभ्यास है। वह कवि भी है और दाता भी। अनेक व्यक्ति उसके पीछे पीछे चलते हैं। अर्वाचीन माटा से परिचिन व्यक्ति मध्यकालीन माटों के महत्त्व का कठिनता से हा समझ पाते हैं। किंतु वणरत्नाकर का वणन पन्ने वाला व्यक्ति आमामना से ही चन्द, मोहण (काहड़ दे प्रबन्ध), माहा और नाह (हम्मीरायण) आदि के व्यक्तित्व और प्रभाव को समझ सकता है। पृथ्वीराज विजय का पृथ्वीमठ भी इसी श्रेणी का है।

हम्मीरायण के कुछ शब्द

हम्मीरायण के ३२६ छन्दों में पयाप्त अध्येय सामग्री है। किंतु हम उनमें से कुछ ऐसे ही शब्दों पर यहां विचार करेंगे जिनका अर्थ या तो विवादग्रस्त है या जिनका अर्थ पर विवाद की समावना है।

उल्लग, उल्लगाणा—इन शब्दों का इस काव्य में अनकश प्रयोग है। विशेषतः (सैनिक) सेवा के अर्थ में उल्लग शब्द का प्रयोग हुआ है। उल्लगाणा उल्लग करने वाले के लिए प्रयुक्त है। हम्मीर की अनेक मोडागा धणी (मुकुटधर सरदार) उल्लग करते थे (१९, २८९) महिमासाहि और उसका भाइ अयुखान को उल्लगते थे (४४, ४५) 'उल्लगाणा' शब्द ३३वें पद्य में इही दोना भाण्या के

लिए प्रयुक्त है। हम अन्यत्र भी इन शब्दों का यही अर्थ प्रदर्शित कर चुके हैं। इस शब्द के प्रयोग का बहुत सुन्दर उदाहरण हम्मीरायण का यह दोहा है:—

उलगाणा खायइ सदा, ऊरण हुइ इक्वार ।

चाडं घणी ठाकुर तणी, सारइ दोहिली वार ॥१८९॥

गुडी—यह शब्द छोटी पताका या फर्ी के अर्थ में प्रयुक्त है। (१३४)^१ बहुत सम्भव है कि इसका मूल किसी द्रविड़ भाषा से लिया गया हो।

ग्रास—सामन्ती बोलचाल में इस शब्द का प्रयोग बहुत अधिक है। योद्धाओं की आजीविका के लिए प्रदत्त जागीर और नकद द्रव्य आदि दोनों ही ग्रास के अन्तर्गत हैं (देखो २१, ५०, ५१, ५२, १९०, २२४ आदि)

असपति (८८)—यह अव्ययपति शब्द का अपभ्रष्ट रूप है। सर्वप्रथम यह शब्द केवल उत्तर पश्चिमी भारत और अफगानिस्तान के मुसलमान राजाओं के लिए प्रयुक्त हुआ था। इसका कारण शायद उनकी बलगाली अश्वारोही सेना रही हो। किन्तु परवर्ती काल में दिल्ली, गुजरात आदि के सुल्तानों के लिए यह शब्द प्रयुक्त होने लगा। हम्मीरायण का प्रयोग इसी दूसरी प्रकार का उदाहरण है।

आलमशाह (८४, ८५, ८८, ६१, १२०, १७५ आदि)—यह शब्द व्यक्ति वाचक सा प्रतीत होता है। किन्तु वास्तव में यह चक्रवर्ती के अर्थ में प्रयुक्त है।

१ देखें वरदा वर्ष ४ के अङ्क में 'गुडी उछली' पर हमारा टिप्पण।

आरी सीरा तोरण (१३५) उत्सव के समय तोरण खड़े करने का परिपाटी चिरकाल से भारत में चली आई है । अथ ग्रंथों में तलिया तोरण का वर्णन है । आरीसारी तोरण भी सम्भवत तलिया तोरण ही है ।

पवाडठ (२१०, २६३)—पवाडा शब्द के मूलार्थ के विषय में पर्याप्त मनभेद है । मरुमारती, वर्ष, अङ्क म हमने इसका प्राचीन अर्थ 'युद्ध या णसा ही कोई वारकाय मानने का सुझाव दिया है । इम्मीरायण सोलहवीं शताब्दी की कृति है । किंतु इसमें भी पवाडठ के उसी प्राचीन अर्थ की झलक है । २९३ वीं चउपड़ इस प्रकार है —

राय पवाडठ कीयठ मलउ आपण ही सार्यउ जै गलउ ॥

(राजा ने अच्छा पवाडा किया । उसने अपने आप ही अपना गला काटा)

पवाड़े के युद्ध या युद्ध के सन्निकट अर्थ का ध्यान म रखते हुए हमने उसे प्रपातक से व्युत्पन्न करने का भी सुझाव दिया था । किंतु 'प्रवाद शब्द भी लगातार हमारे ध्यान में रहा है । प्रवाद से मिलता जुलता शब्द 'भट्टवाद (वीरत्व की रयाति) प्राचीन राजस्थानी और गुजराती में प्रचलित रहा है, जिसका अपभ्रष्ट रूप मडवाठ अनेक ग्रंथों में मिलता है । मन्वाडठ शब्द की भी गवपणा की किंतु उसकी कहीं प्राप्ति न हुई ।

जमहर—इसके लिय आजकल जौहर शब्द प्रचलित हो चुका है । डा० वसुदेवशरण जी भद्रवाल ने जौहर को जतुगृह से व्युत्पन्न माना जो भाषाशास्त्र की दृष्टि से सव्या ठीक है (जतुगृह \angle जउगृह \angle जउघर \angle

जठहर (जौहर) । किन्तु कान्ढड़टे प्रबन्ध में पद्मनाभ ने और इम्मीरायण में (२६२, २६३, २७३, २७९) भाण्डव व्यास ने जमहर शब्द का प्रयोग किया है जो स्पष्टतः यमगृह का अपभ्रष्ट रूप है । जमहर शब्द ही यदि ठीक हो तो आधुनिक जौहर तक का परिवर्तन शायद कुछ इस प्रकार से निर्दिष्ट किया जा सकता है । यमगृह < जमगृह < जमघर < जमहर < जंवर < जौहर < जौहर । अचलदास खीचीरी वचनिका में जठहर शब्द प्रयुक्त है । अचलदास द्वारा गिनाए हुए 'जठहर' जोगा जोगाडत सीहोर के रोल, और रणथंभोर के इम्मीर के स्थानों में हुए थे । वचनिका की अपेक्षाकृत एक नवीन प्रति में 'जोहर' शब्द प्रयुक्त है । उसमें कुछ अन्य जोहर गिनाए गए हैं, जैसे समियाणों में सोमसातल के घर, जैसलमेर में दूदा के घर, जामलोर में करमचन्द चहुवाण के घर, तिलक छपरी के गढ़लोतों के घर, जालोर में कान्ढड़टे के घर । वचनिका की अन्य प्रतियों में जूहर, जमहर और जिमहर शब्द भी प्रयुक्त हैं जो इम्मीरायण और कान्ढड़टे के यमगृह के सन्निकट हैं ।^१

परघड, परिघड—(२३०, २३३, २३६, २३७)—यह शब्द परिग्रह का अपभ्रष्ट रूप प्रतीत होता है जिसका अर्थ नौकर-चाकर, लवाजमा या सेना किया जा सकता है । रायपाल और रणमल ने अलाउद्दीन से मिलकर यह निश्चय किया कि वे रणथंभोर से सेना भी निकाल लाएंगे (परिघड ले आवां छा तिहां, २३०) । जाकर उन्होंने इम्मीर से प्रार्थना की कि वह कृपाकर उन्हें 'परघट' (सेना) दे जिससे वे कटक में भलि,

१ देखें सादूल राजस्थान रिसर्व इन्स्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित संस्करण 'अचल दास खीचीरी वचनिका'

क्रीड़ा करे और तुकों को 'पातला' (दुबल) कर दें (२३७) । हम्मीर ने ठह सवालाख 'परिषठ (सेना) दी (२३८) ।

समाध्यत, समाध्यो (३१६, ३१९)—यह शब्द साधारण क प्रद्युम्न चरित में समदिउ (१८४) के रूप में प्रयुक्त है । संस्कृत में इसका अर्थ समाहित शब्द से किया जा सकता है । इन सब प्रसर्गा में इसका अर्थ 'प्रसन्न होकर' किया जा सकता है ।

कणहलउ (४५) — महिमासाहि ने अपने विषय में कहा है

'अह्ननइ मान हुनउ एतलउ घरि बइठा लहता कणहलउ'

इसमें अनुमान किया जा सकता है कि इसका अर्थ भोजनादि से है । हम्मीर के सामन्तों के विषय में कवि ने कहा है —

त नवि कीणइ करइ जुहार घरि बइठा खाइ भउार (२०) ।

यहाँ भण्डार से मतलब सम्मिश्रित भोजन भंडार का होगा, और यहाँ अर्थ शायद कणहलक से अभिप्रेत है ।

नवलरिउ - यह शब्द चउपड ९ और १७० में है । रणथम्मार दुग की चढ़ाइ में यह पहला दरवाजा है । इसी के पास जुमरतखां मारा गया । हम ऊपर डा० मानाप्रसाद के नौलखी शब्द के अर्थों का विवचन कर चुके हैं ।

हेडाउ (६८) इस शब्द पर भा हम ऊपर कुछ विचार कर चुके हैं । अमा और उदाहरण अपेक्षित हैं ।

घीटी (८७, ७१)—यह निश्चिन्त है कि इसका अर्थ बोझो नहीं है । प्रसंग से लूटनाया घटना अर्थ ही सकता है । काहड़दे प्रबंध में बाटी शब्द प्रयुक्त है ।

डीलड (९६), डीलज (१००), डील (१९०) :—डील का अर्थ शरीर है । डीलड स्वयं के अर्थ में प्रयुक्त है । डीलज = डील ही धड़वड़ (१३५) = ध्वजपट

हम्मीर मम्बन्धी अन्य साहित्य और प्राचीन उल्लेख

हम्मीर विषयक साहित्य हम्मीरमहाकाव्य और हम्मीरायण तक ही सीमित नहीं है । हम्मीर का जीवनोत्सर्ग एक महान् आदर्श के अनुसरण में हुआ था । जब कभी ऐसे अवसर उपस्थित हुए, जनता उसे याद करने से न भूली । रणमह द्वाद में एक राठौर वीर के युद्ध का कीर्तन है । किन्तु कवि श्रीवर काव्य के आरम्भ में ही हम्मीर का स्मरण करता है । रणमह उपमेय तो हम्मीर उपमान है.—

हम्मीरेण त्वरितं चरितं सुरताण फोज महरणम् ।

कुल इदानीमेको वरवीरस्त्वेव रणमह ॥ ३ ॥

(हम्मीर ने शीघ्र ही सुल्तान को फौज का महार किया । अब वही अकेला श्रेष्ठ वीर रणमह करता है ।)

अचलदाम खीचीरी वचनिका का रचयिता शिवदास तो हम्मीर को भूल पाता ही नहीं । जब हुगगशाह की फौज चलनी है तो लोग पूछते हैं कि “बादशाह किसके विरुद्ध बट रहा है । अब तो सोम सातल कान्दडडे नहीं हैं । इठीला राव हम्मीर भी अस्त हो चुका है” (९-४) । अन्यत्र हम्मीर की तरह अचलदास भी कलियुग को बदलने वाले और आदर्शपूर्ति के लिए नरणोद्यन व्यक्ति के रूप में निर्दिष्ट हैं । (१४-१५) “सिंहासन पर बैठा अचलदास सातल सोम और हम्मीर से भी बढकर दिखाई पड़ता-या (१५ ८) । अपनी रानियों के सामने जौहर के आदर्श को उपस्थित

करता हुआ अचलेश्वर कहता है, “कल ही के दिन तो रणयम्भोर में राज
हम्मीरदेव के घर में जौहर हुआ था। उन जौहरों में जो हुआ वही तुम
पूरी कर दिखाओ (२१९)।’ काय के अंत में भी फिर शिवदास ने
हम्मीर का स्मरण किया है। सातल, सोम, हम्मीर और काहड़दे ने जिस
तरह जौहर जलाया, उसी तरह रणक्षेत्र में पहुँचकर चौहान (अचलदास)
ने अपने आदिम कुलमाग को उज्ज्वल किया (२७)”।

काहड़दे प्रबन्ध में पद्मनाभ हम्मीर का स्मरण करना न भूला। जब
अलाउद्दीन की सेना गढरोव छोड़कर जाने लगी तो हम्मीर का पदानुगमन
करने की इच्छा से वीर काहड़दे भी कहता है।

तुम्ह वीनयुं आदि योगिनी, पाछा कटक आणि तू बनी ।

हमीररायनी परि आदरु, नाम अहारउ उपरि करउ ॥

वर्णनों में प्राकृत पैङ्गलम् के हम्मीर और जाजा विषयक पदा भी पठ
नाय हैं। इनके विषय में डा० माताप्रसाद गुप्त ने लिखा है, इन छन्दों
में वास्तविक ऐतिहासिकता नहीं मिलती है। उदाहरणार्थ एक छन्द में
कहा गया है कि हम्मीर ने सुरासान की विजय की थी, जिसमें उसने सुरा
सान के शासक से ओल (जमानत) में उसके किसी आमीय का ले लिया
था। किंतु हम्मीर का सुरासान पर आक्रमण करना ही इतिहास सम्मत
नहीं है। किंतु क्या वास्तव में इस उदाहरणार्थ प्रस्तुत पद्य में सुरासान
का विजय का वर्णन है? पद्य यह है —

टोला मारिय डिठी मह मुन्डिय मेच्छ सरीर ।

पुर जज्जला मतिवर चलिय वीर हम्मीर ।

चलिअ वीर हम्मीर पाअ मर मेइणि कपइ ।

दिगमगणइ अघार भूलि सूरइ रह भूपिअ ।

दिगमगणद अधार भाण गुरासाणक ओला ।

दरभरि दममि विपक्ख मारअ टिणी महं डोला ॥

यहां पांचवी पंक्ति में 'गुरामाण' शब्द को देखते ही, यह परिणाम निकालना ठीक न था कि ऋषि के मतानुसार इन्मीर ने गुरामान पर विजय प्राप्त की थी और उस देश के शासक को 'ओल' में ले आया। यहाँ प्रसंग दिल्ली या दिल्ली राज्य पर आक्रमण का है, गुरामान पर किसी चढाई का नहीं। इसलिए देखने की आवश्यकता तो यह थी कि गुरामान का कोई दूसरा अर्थ है या नहीं। डिगलकोप को आप ठगान् देवते या किसी वृद्ध चारण को पूछते तो आपको ज्ञात होता कि यहा गुरामान शब्द मुसलमान के अर्थ में प्रयुक्त है। कविराजा मुगरिदान ने मुसलमान शब्द के ये पर्यायवाची शब्द दिए हैं.—

रोद खद खदढो तुरक नीर मेछ कलमाण ।

मुगल असुर बीवा मिर्या रोजायन गुरसाण ॥ ५.७३ ॥

कलम जवन तणमोट (कह) गुरासान अर खान,

चगथा आसुर (फेर चव मानहु) मूलमान ॥५.७४ ॥

पृथ्वीराज के प्रसिद्ध पत्र में भी गुरसाण इसी अर्थ में प्रयुक्त है—

अर रहसी, रहसी धरम नवप जाना गुरसाण ।

अमर विसम्मर ऊपर्रा, राखो नहचो राण ॥

पद्य के प्रसंग और डिगलकोप के इस अवतरण से स्पष्ट है कि 'गुरसाण' का अर्थ दिल्ली का कोई मुसलमान ही हो सकता है। इसके गुरासान तक पहुँचने की आवश्यकता नहीं है।

इन्मीर के विषय के कुछ अन्य पद्य भी प्रह्लनपैङ्गलम् में हैं। एक में

हम्मीर अपनी प्रेयसी से म्लेच्छों के विरुद्ध रणाङ्गण में जान की अनुमति चाहता है। दूसरे में म्लेच्छों के विरुद्ध हम्मीर का प्रयाण का वणन है। तिसरा पद्य जज्जल विषयक है। एक पद्य में हम्मीर का मलय, चोलपति, गूजर मालव और खुरसाण पर विजय का वणन है। यह खुरसाण भी भारत देशीय कोई मुसलमान राजा है। छठ पद्य में सेना का प्रयाण का बहुत ही मजाब वणन है। भातवें पद्य में वीमत्स रणस्थली में विचरते हुए हम्मार का वणन है।

इन पद्यों में पर्याप्त अतिरञ्जना है। किन्तु इस अतिरञ्जना के आधार पर उनके समय पर कुछ कहना असम्भव है। इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जब कवि समयसामयिक होत हुए भी अतिरञ्जना करता है। वाक्पति का 'गौडवहो ऐमी ही कृति है। नरवमन् द्वारा लक्ष्मवमन् की विजय का वणन रघुवश के दिग्विजय की याद दिलाता है। गौड, चोड़ वग आग गूजर, मलय, चोल, पाण्ड्य कीर, भोटादि की भर्ती जिस आसानी से होती है वह अनेक शिलालेखों में दशनीय है। भाषा की दृष्टि से प्राकृतमैथिलम् के पद्यों को शायद सन् १४०० के आसपास रखना ठाकड़ा।

शाहधर का हम्मीरविषयक उल्लेख और वणन भी पर्याप्त प्राचीन है। ग्रन्थ के आरम्भ में ही अपने वश के वणन का प्रसङ्ग में शाहधर ने लिखा है कि पहले शाहम्मरी (सामर) देश में श्रीमान् हम्मीर राजा चाहवाण वश में उत्पन्न हुआ, वह शौर्य में अर्जुन के समान ख्यात था। परोपकार के व्यसन में निष्ठ पुरन्दर के गुरु (शृङ्खल) के समान, राघवदेव नाम का द्विजश्रेष्ठ उसके सभ्यों में मुख्य था"। शाहधर

उन राषकदेव का पौत्र था, और उन विलाल को नदनन्दमूरि ने भी 'पद्मनाभा-कविचक्र-दान' और 'अग्नि-प्रामाणिक-श्रेण' कहा है उनके लिए उसके पौत्र के हृदय में एक अविमान होना रयनादि ही है। राष ही नदनन्द के उल्लेख से यह भी सम्भावना होती है कि हम्मीर की रमा में अनेक पद्मनापाकधियों और नादियों या सण्डल या जितमें मुख्य राषकदेव था। पद्मति का १२५७ वाँ उल्लेख भी हम्मीरपरक है। अथि अग्रान है। हम्मीर की सेनाके प्रदाण को टटिट कर यह कहना है, 'ये चक्र (धरयाफ !) चक्री (चक्री !) के विरह उचर में नू आनर मन हो। ये कमल नू म्बुचिन न हो। यह रात्रि नहीं है। हम्मीर रूप के घोड़ों की टाप में विदीर्ण भूमि की धूलि के म्बूहों से यह दिन में ही अन्धकार हो गया है।"

हम्मीर-विषयक अन्य प्राचीन रचना विद्यापति की पुस्तक परीक्षा है। राजस्थान में बहुत दूर रहने पर भी अथि को हम्मीर विषयक अनेक तथ्य ज्ञान थे। उनका अर्दीन अगाठदीन और महिमानाह मुहम्मदशाह है। अगाठदीन और हम्मीर के सन्देश और प्रतिमन्देश भी इतिहास सम्मन तथ्य हैं। मन्त्रियों के नाम रायमल और रामपाल हैं जो रणमल और रतिपाल के विरुद्ध स्वल्प से प्रतीत होते हैं। जाजमदेव (जाजा) आदि योद्धाओं और महिमासाहि के अन्त तक हम्मीर का साथ देने की कथा भी पुस्तक-परीक्षा में है। किन्तु जाजा के लिये इनमें 'योध' शब्द प्रयुक्त होने से यह अनुमान करना कि जाजा किसी उच्चपद पर प्रतिष्ठित न था कुछ विशेष तर्कानुमत प्रतीत नहीं होता। योद्धा होना तो उस से उच्च पदस्थ राजपूत के लिए भूषण है, दूषण नहीं। जोधपुर के राज्य के संस्थापक का नाम केवल जोधा मात्र था।

मल्ल और खेम के कवित्तों में तो जाजा का इतना महत्त्व है कि हम्मीर मुहम्मदशाह से कहता है कि जब तक रणथमोर को गढ़ जाजा बड़गूजर और उसका यशु धीरम रहेंगे तब तक वह उसको त्याग न करेगा। खेम के ११ वें कवित्त में वह 'बट राठत' है, और ऐसा ही निर्देश सम्भवतः मल्ल के श्रुटित कवित्त में भी रहा होगा।

पुस्तक परीक्षा में जौहर का भी वर्णन है। किन्तु क्या इतनी सभित है कि उसमें हम्मीर विषयक बहुत-सी बातें छुट गई हैं। लेखक का लक्ष्य केवल हम्मीर की दयावीरता सिद्ध करना था। इसके लिए जितनी सामग्री उसी प्रयुक्त की है वह पर्याप्त है।

इससे अग्रिम कृति हम्मीर हठाले के कवित्त हैं जिनकी मूँधड़ा राजरूप ने सन् १७९८ में देशनोक में नकल की। कृता "कविमाला (कवित्त ३,६) या 'कवि माला (कवित्त ५) है और इस छोटी सी २१ कवित्तों का कृति में धीर रस की अच्छी परिपुष्टि हुई है। पहले कवित्त में 'महिमा सुगल' शरण की प्राथना करता है। जाजा और धीरम के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए द्वितीय कवित्त में हम्मीर की उक्ति हम अभी दे चुके हैं। तीसरे कवित्त में बादशाह की ओर से राजकुमारी के मुस्तान से विवाह, धारु धारु नतकियाँ के समपण और हाथी घोड़ों और द्रव्य आदि की माँग है। चौथे कवित्त में हम्मीर का दपपूर्ण उत्तर है। उसकी माँग अलाउद्दीन से भी बढ़कर है। वह गजनी माँगता है उसके माई अलीखान (उलूखान) से पास फटवाना चाहता है, उससे मरहठी नारी माँगता है, और यह भी चाहता है कि बादशाह अनेक अन्य बादशाहों के साथ आकर उसकी सेवा करे। पाँचवें कवित्त में अलाउद्दीन का दूत

दोनों सेनाओं की शक्ति की तुलना करता हुआ सुल्तान को बाज से और इम्मीर को चिड़िया से उपमित करता है। छठे कवित्त में इम्मीर का उत्तर है, 'जो मैं बादशाह के सामने फिर झुकाऊँगा, तो मृत्यु आकाश में न उड़ित होगी, यदि मैं दण्ड (कर) दूँगा तो हरिहर व्रत और मुकुन सब विच्छेद होंगे। मैं पुत्रों को देने की कहु तो जीम के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे मैं बादशाह से आकर मिला तो पृथ्वी डूब जायगी। उत्तर में फिर दूत सातवें कवित्त में अलाउद्दीन की मानार्थ्य का बखान करता है। उत्तर में इम्मीर आठवें कवित्त में कहता है, "तू इसमें देवगिरि मत समझ। यह यादव राजा नहीं है। तू इसको चित्तौड़ मत समझ। यह कर्ण चालुक्य नहीं है। इसको गुजरात मत समझ जिसे करोड़ों छत्र करके लिया है। अरे, अलाउद्दीन मैं इम्मीर हूँ जो इस क्षेत्र का खरा और रक्षक कपाट है। अब रणथमोर का रोध करने पर तेरे सत्त्व का पता लगेगा।'

उत्तर में नवम कवित्त में दूत बताता है कि रणमल, बादशाह से जा मिलेगा, वीरम्म घर का भेद देगा, राजा छाहड़दे अभी उसके विरुद्ध है, पृथ्वीराज अलाउद्दीन से जा मिला है^१। जिन मृत्यों से यह मरोसा था कि वे युद्ध में साथ देंगे वे तो शत्रु से जा मिले हैं। किन्तु इससे इम्मीर विचलित नहीं होता। वह कहता है, 'चाहे पीथल मिले,

१ डा० मानाप्रसाद गुप्त ने कवित्त का अर्थ सर्वथा भूनार्थक किया है जो ठीक नहीं है। दूत 'मिले' धातु से रणमल और वीरम्म के लिए भविष्य की सम्भावना का द्योतन करता है। छाहड़दे विरुद्ध (अमेल) हो गया है और पृथ्वीराज बादशाह से जा मिला है।

चाहे प्रतापसी, चाहे कुल माग को लजा कर, दूसरे ठाकुर चन्द, सूर्य और भा चाहे कृपाविधि आदि भी अलाउद्दीन से जा मिलें तो भी यह उससे संधि न करेगा। ग्यारहवें कवित्त में दिग्दिगन्त से आइ मुसलमान सेना और हमीर के प्रसन्न होकर उसका सामना करने का वचन है। बारहवें कवित्त में उद्दणसिंह के हाथ नतकी धारू की मृत्यु का उल्लेख है। तरहवें कवित्त में मोगूसाह (मुहम्मदशाह) हमीर से बीड़ा लेकर अलाउद्दीन का छत्र काट डालता है।

चौदहवें कवित्त में यह वर्णित है कि आठ लाख औपधियों के चूण (पाउडर) को प्रयुक्त कर अलाउद्दीन ने जब जाल (तोप ?) चलाइ तो रणथन की दीवार एक ओर से टूट गई। फिर भी (कवित्त १५) हमीर ने दरगिरि के राजा की तरह कायर होकर किला न छोड़ा। उसने बन्ती मुसलमान सना पर अच्छी चोट का।

'राज पलट जाता है, दिन पलट जाते हैं' किन्तु बड़े आदमियों के बचन नहीं पलटते यह कहते हुए हमीर ने जाना से चले जाने को कहा। यह तो 'परदेसी पाहुना था'। किन्तु जाजा ने ऐसे आचार को दोगली सतान के लिए ही उपयुक्त बताकर गद्द छोड़ने से इन्कार कर दिया (दोहा १३)। और अलाउद्दीन की सेना पर आक्रमण कर घोर युद्ध करता हुआ काम आया। (कवित्त १६ १७) आगे के दो कवित्तों में युद्ध का वचन है। गीर भी अथ स्वामिन्ता के साथ युद्ध में काम आया। (१८ १९) श्रावण की पंचमी, शनिवार के दिन सम्बत् 'अगणमै' में हमीर युद्ध करता हुआ काम आया। रणमल शत्रु से जा मिला (२०)। बारह वर्ष तक युद्ध चला। अलाउद्दीन के ग्यारह लाख सैनिकों में से कवल एक लाख बच (कवित्त २१)।

इतिहास की दृष्टि से इस कृति का कुछ महत्त्व है। महिमासाहि का शरण में आना, धारु की उट्टानसिंह के हाथ मृत्यु, हम्मीर और अलाउद्दीन के दूत का कथोपकथन, रणमल का विद्वासघानादि ऐसी सामग्री है जो अन्यत्र भी मिलती हैं। विशेष ध्यान देने योग्य बातों में जाजा का महत्त्व है। हम्मीर को उस पर बड़ा भरोसा है। जाति से इन कवित्तों के अनुसार वह बडगूजर है (कवित्त २) दूहे २ में वह 'परदेसी पांहणो' के रूप में अभिहित है (पृ० ४९, दूहा २); किन्तु वह हम्मीर का विश्वस्त 'स्वामिधर्मी' सेवरु है। (१६) उसके पिता का नाम वैजल है (१७) और उसके एवं राव के मरने पर ही गढ का पतन होता है। कवित्त में जाजा को 'बडगूजर', हम्मीरायण में 'देवडा', हम्मीर महाकाव्य में 'चाहमान' और भाट खेम की कृति में फिर बडगूजर के रूप में देखकर जाजा की जाति को निश्चित करना कठिन पड़ता है। किन्तु इनमें सबसे प्राचीन कृति हम्मीर महाकाव्य है; और उसीका कथन सम्भवतः सबसे अधिक विश्वस्त है^१। युद्ध को चारह वर्ष तक चलाना (२१) अशुद्ध है। हम्मीर के स्वर्ग प्रयाण के लिए श्रावण मास, पञ्चमी तिथि और शनिवार ठीक हो सकते हैं। किन्तु 'उमीछर अगणमै' अशुद्ध है (२०)। नवें कवित्त का पृथ्वीराज हम्मीर महाकाव्य के भोजदेव का भाई हो तो हम्मीर-महाकाव्य की भोज की प्रतिशोध कथा कल्पित नहीं है।^२ छितिपति छाहडदेव और चन्दसूर के विषय में कुछ और शोध की आवश्यकता है।

भाट खेम की रचना "राजा हम्मीरदे कवित्त" (पृ० ६०-६६) की

१. इसी प्रस्तावना में ऊपर हमारा जाजा-विषयक विमर्श पढ़ें।

२. डा० माताप्रसाद गुप्त कथा को कल्पित मानते हैं (देखें हिन्दुस्तानी

प्रति का लेखन-काल सवत् १७०६ है। इसलिए कवित्त की रचना इस सवत् से परतर नहीं हो सकती।

इसके प्रथम कवित्त में मगोल की शरणागति और दूसरे में शरण प्रदान का वर्णन है। इसके बाद अलाउद्दीन के दूत मोलण और हम्मीर का वार्तालाप है। इसमें मोलण अलाउद्दीन की सामर्थ्य का बखान करता है। हम्मीर उससे गजनी, उलगखा, नसरतख्वा, मरहठी नारी, ठट्टा, तिलग आदि का माँग करता है। (३७) उसके बाद अलाउद्दीन के घेरे (९) उद्दानसिंह के हाथ धारु की मृत्यु (११) अलाउद्दीन के छत्र कटने (१२ १४), इसके बाद और युद्ध के आरम्भ होने का वर्णन है। साथ ही गद्य भाग में यह सूचना भी है, "जाजा बड़गूजर प्राहुणा होकर आया था। राजा हमीर ने उसे अपनी बेटी देवलदे विवाही थी। वह मोड़ बाधे ही काम आया। राणी देवलदे तालाब में डूबकर मर गई। किन्तु कवित्त में फिर वही कथानक चालू रहता है। हम्मीर जाजा को परदेसी पाहुणा कहते हुए जाने के लिए कहता है, किन्तु जाजा इकार करता है (दूहा २)। पन्द्रहवें कवित्त में हम्मीर कहता है कि चाहे राणा रामपाल, चाहे बाहड, भोजदेव, रावतमोज रतौ (रतिपाल), वीरमदे, रावत जाजा, चन्दसूर और सभी देवी देवता भी शत्रु से मिल जाएँ तो भी वह अपने वचन का त्याग न करेगा (१५)। उसके बाद उसने अपूर्व युद्ध किया। सम्बत् १३५३, माघ सुदी एकादशी मंगल के दिन अलाउद्दीन ने रणथम्भोर लिया और मध्यराह के समय हम्मीर ने अपना सिर सतप्रोल दरवाजे पर महादेव को चढ़ाया।

इन कवित्तों का स्वतंत्र मूल्य विशेष नहीं है 'माटखेम की कृति भी

हम उन्हें कहे या न कहे उसमें भी हमें सन्देह है, क्योंकि यह प्रायः 'रणथंभोर रे राणे हमीर हठाले रा कवित्त' का शब्दानुवाद या माथानुवाद मात्र है। वहीं कहीं मल्ल की कृति ज्ञुटिन या अस्पष्ट है। उसकी पंक्ति और समक में यह रचना अवश्य सहायक है। दोनों काव्यों के पहले दो कवित्त कुछ शब्द भेद होने पर भी वास्तव में एक ही हैं। मल्ल के तीसरे कवित्त को रोम ने पाँचवाँ बना दिया है। चौथे कवित्त के स्थान पर रोम के आठवें कवित्त हैं। किन्तु कुछ नाम मल्ल के कवित्त से अधिक शुद्ध हैं। अलीखान से उल्लो नाम उल्लगखान के अधिक सन्निवृत्त है। माथ ही नुसरतखाँ 'थटा' और 'तिलंग' के नाम बढ़ा दिए गए हैं। रोम का सातवाँ कवित्त मल्ल के पाँचवें कवित्त का, और नयाँ कवित्त मल्ल के ग्यारहवें कवित्त का और दसवाँ कवित्त मल्ल के आठवें कवित्तका रूपान्तर है। मल्ल का बारहवाँ कवित्त रोमका ग्यारहवाँ है। बारहवें कवित्त में मल्ल के कवित्त की सामान्य छाया ही आ सकी है। रोम का बारहवाँ पद्य प्रायः नवीन है; किन्तु चौदहवाँ पद्य फिर मल्ल के पन्द्रहवें पद्य का रूपान्तर है। 'दान' रोम मल्ल की या तो निजी कृति है या इसे किसी अन्य मल्ल ने जोड़ दी है। जाजा के बडगुजर होने में ही हमें अत्यधिक सन्देह है उसे टेवलदेवी का पति बनाकर तो रोम ने कल्पना की परकाष्ठा कर डाली है। हम्मीर महाकाव्य का कथन तो इसका विरुद्ध है ही - यह अन्य प्राचीन और नवीनकृतियों से भी असमर्थित है। रोम का पन्द्रहवाँ पद्य मल्ल के नवें पद्य का रूपान्तर है; किन्तु कुछ फेरफार सहित। इसका वाइट मल्ल का छान्द है। रायपाल, भोजदेव और रासन जाजा आदि के नाम इसमें अधिक हैं।

रोम का सोलहवाँ पद्य उसकी कृति है। रणथंभोर के पतन का

समय भी उसका निजी ही नहीं, सवधा अशुद्ध भी है। हम्मीर क रणधमोर के दरवाजे पर आकर 'कपल-यूजा' की कथा अब भी प्रसिद्ध है। प्राचीन पारम्परिक कथा से इसका विरोध है।

नैणमी ने गढ़ के पतन की दो निधियाँ दी हैं, सम्वत् १३५० श्रावण वदी ५ (नैणसी की ख्यात, भाग १, पृ० १६०) और दमरी सवत् १३५८ (भाग दूसरा, पृ० ४८३)। इनमें दूसरा सवत् ठीक है।

महशकृत 'हम्मीर रासो' की दो प्रतियाँ थी अग्रघदजी नाहटा के सप्रह में हैं और कुछ प्रतियाँ अयन में हैं। 'भापा डिगल से प्रभावित राजस्थानी है।' इस कृति को कुछ उल्लेख विशंपनाण निम्न-लिखित है।

(१) महिमासाहि को अलाउद्दीन की किसी बेगम से अशुचित सम्बन्ध के कारण निकाला जाना है। गामरु बादशाह की सेवा में रहता है।

(२) छाणगढ़ का रणधीर हम्मीर की सहायता करता है। उसका रणधमोर को लेने से पहले बादशाह नृणगढ़ लेता है।

(३) नतकी को गामरु गिराना है।

(४) गुजन कोठारी के मिल जाने से अलाउद्दीन को ज्ञान होना है कि दुग म धाय नहीं है।

(५) बादशाह सेनुबन्ध जाकर भगवान शिव का पूजन कर समुद्र में कूद कर अपने प्राणा का त्याग करता है।

इस कथा में कल्पना अधिक और ऐतिहासिक तथ्य कम है।

आधुनात्र कृत हम्मीर रासो प्रकाशित रूपना है। इसके बारे में

इतना ही कहना पर्याप्त है कि यह प्रायः महेश के हम्मीर-रासो का रूपान्तर है। इसी प्रकार चन्द्रशेखर वाजपेयी का 'हम्मीर हठ, भी प्रकाशित है' इतिहास की दृष्टि से इसका महत्त्व भी विशेष नहीं है।

श्याम कविका 'हम्मीर हठ सं० १८८३ की कृति है। यह चन्द्रशेखर के 'हम्मीर-हठ' से बहुत कुछ मिलती-जुलती है।^१

“भाण्डव की हम्मीरायण के अतिरिक्त एक 'वृहद् हम्मीरायण' भी जिसका सम्पादन श्री अग्रचन्द नाइटा कर रहे हैं। श्री नाइटा की सूचना के अनुसार 'हम्मीरायण की दो प्रतियों में से एक प्रति तो पूर्ण है और दूसरी प्रति में केवल २४८ पद्य हैं, जबकि पूरी प्रति में अन्तिम पद्य सख्या १३७३ है। ऐसा प्रतीत होता कि अधूरी प्रति इस पूर्ण प्रति में ही नकल की जा रही थी जो पूरी नहीं हुई।” मूल प्रति सं० १७८४ की है। भाषा हिन्दी है, और किसी अंश तक जान की भाषा से मिलती है।

कविता का आरम्भ सरस्वती, गजानन, चतुर्भुज आदि को प्रणाम कर किया गया है। लक्ष्य वही है जो किसी वीरगाथा का होना चाहिए—

सावत रूप हमीर की, सावत सुण है वात ।

सुरापण हुवै चौगनो, सुरा सदा सुहात ॥

प्रति के अन्त में सेना की सख्या है। 'अन्तेवरी', निवान, रतन, मुकुटवन्व राजा, सोना स्या का आगर, पट्टण, वूल के गड, रत्न आदि की भी सख्याएँ हैं जो अतिशयोक्ति पूर्ण हैं।

इस ग्रंथ की समीक्षा हम यथासक्य अन्यत्र करेंगे।

१ देखें श्री विश्वनाथप्रसाद मिश्र—'श्याम कवि', वीरेन्द्र वर्मा विशेषांक हिन्दी अनुशीलन, पृ० २३३,

राजस्थान पुरातत्त्व मंदिर सं० ४९०२ पर एक ग्रंथ का आरम्भ 'श्रागनेसाय नम हमीराइन लीपत शब्दा से होता है। किन्तु इसका आरम्भ गणशावदन है। उसके बाद सरस्वती की आराधना कवित्त है, जिसमें कृति का नाम 'हमीररासो' है। अन्तिम कवित्त में, जिसकी सख्या २८५ है, फिर पुस्तक 'हमीराइन' ग्रंथ के नाम से निर्दिष्ट है। समस्त ग्रंथ देखने पर कुछ निश्चित रूप से लिखना सम्भव है। आरम्भ दूसरी हमीरायण से कुछ भिन्न है।

आगरे के श्री उदयशङ्कर शास्त्रा के पास एक कृति है जिसका नाम "पानसाह भलावदीन बहुवान हमीर की वचनका भट्ट मोहिल कृत है।" किन्तु कृति के अन्दर कवि का नाम मल्ल है जो हम्मीर व कवित्तों के कर्ता मल्ल से भिन्न तथा पयाप्त अर्वाचीन है।

इस ग्रंथ का आरम्भ गणपति का स्तुति से है। रणथम्भोर के दुग का भी अच्छा षणन है (७ १४)। इसके बाद वचनिका में हम्मीर विषयक एक विशिष्ट कथा है। हम्मीर बादशाह का 'राजपूत' है, किन्तु उसे पूरे हाथ से सन्नाम न कर एक अगुली दिखाता है। इसलिए उस लोग वीका हमीर कहते थे।

इस वर का कारण बताने के लिए कवि ने सुत्तान के पूज्यम की वार्ता दी है। सोमनाथ पट्टण में दो अनाथ ब्राह्मण बालकों ने जिनके नाम गलैया और कनैया थे, बारह वर्ष तक बिना किसी वृत्ति के गौण चराइ। फिर बारह वर्ष उठोने तीर्थयात्रा की और अनेक तीर्थों से सामनाय पर चढ़ाने के लिए अल ग्रहण किया। किन्तु शिव ने पण्डा भेजकर कहलाया कि यदि व उम पर चल चढ़ायेगे तो मन्दिर गिर पड़ेगा और शिवलिंग भग्न होगा।

इससे दुःखी होकर दोनों काशी गए और काशी-करोत लेकर उन्होंने प्राण छोड़े। अन्तिम समय में अलैया ने वादशाह बनकर गोवध और स्त्रमूर्ति के भद्र की प्रार्थना की और कनैया ने उनकी रक्षा के लिए श्यामभद्र सोनिंगरा के घर में अवतार की।

आगे की कथा सुझे प्राप्त नहीं है। किन्तु इनसे से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस त्रय में विशेष ऐतिहासिकता नहीं है। यह केवल जन मनोरञ्जन के लिए घड़ी हुई बात है जिसके तत्त्व अनेक स्थलों से सगृहीत है।

संस्कृत काव्यों में 'हम्मीर महाकाव्य' के अतिरिक्त सुर्जन चरित में हम्मीर की कथा है। वह जैत्रसिंह का पुत्र (११-७) और त्रिविध वीर था (११-८)। आसमुद्रान्त भूमि को विजित कर उसने तुरुकों पर आक्रमण किया और आसानी से दिल्ली जीत ली (११-१५-१६)। चम्बल में स्नान कर और मृत्युञ्जय भगवान् शिव का अर्चन कर उसने तुलादान दिया (११-४२-४६)। शुभ मूहूर्त में उसने 'कोटिमख' यज्ञ का आरम्भ किया (११-५८)। इस अवसर को उपयुक्त समझकर अलाउद्दीन रणथम्भोर के लिए रवाना हुआ (११-६४)। उसका भाई उल्लखान भी ५०,००० सवारों सहित चला (११-६५), और जगरपुर में उसने डेरे डाले। हम्मीर के सेनापति रण (रंग) मल्ल ने उल्लखान को हराया (११-६९) इससे क्रुद्ध होकर अलाउद्दीन ने रणथम्भोर को जा घेरा (११-७१)। हम्मीर कृत्य की समाप्ति पर रणथम्भोर वापस आया (११-७४)।

अलाउद्दीन का दूत सन्देश लेकर उसके पास पहुँचा (१२-३)। उसने कहा, बादशाह को राज्य करते सात वर्ष बीत चुके हैं। तुमने न कर

द्वारा और न सेवा द्वारा उसे प्रसन्न किया है। तुमने बादशाह का विगाड़ करने वाले महिमासाहि आदि का अपना सेनापति नियुक्त किया है। और कहने से क्या लाभ ? तुमने जगरा तक को छोड़ा जहाँ उसके भाई के सामन्तों का निवश था। महिमासाहि आदि को पिंजरे में डालकर नज़र करो। सात साल का कर दो। अपने हाथी बादशाह को दो। सौ नर्तकी भी अपण करा। इतना करने से तुम्हारे प्राणा की रक्षा होगी और तुम्हारा राज्य समृद्ध होगा (१२८२०)

हमारा १ इसका समुचित उत्तर दिया (१२२३३८)। किन्तु धीरे धीरे दुग की आन्तरिक स्थिति को हमीर ने विगड़त देखा। उसकी बहुत सी सेना शत्रु से जा मिला। किसी न धन क लोभ से भार किसी ने मय से अलाउद्दौल की नौकरी स्वीकार की। कई फिर निरोध की यत्ना से बाहर निकल गए। ऐसी स्थिति में हममार ने युद्ध का ही निश्चय किया (१२४५४७) राणियों ने जौहर किया (१२५५) और हमीर ने अपना युद्ध (१२५८७६) युद्ध में भराशाही हाकर उसने अनुपम कीर्ति रूपा गरीर की प्राप्ति की (१२७७)

इस काव्य का रचयिता चन्द्रशेखर कवि अरबूर का समकालीन था और उसने मुजुन हाडा के बार बार कहन पर मुजुन चरित का रचना की थी। काव्य में एकाप वाक्य अतिरञ्जित है। उदाहरण के लिए हमीर ने कमी दिल्ली पर अधिकार नहीं किया। किन्तु अधिकतर इस कथन इतिहास सम्मन हैं।

मुमलमानी साहित्य

हमीर विपदक इतिहास का दूसरा पग मुमलमानी इतिहासकारों ने

प्रस्तुत किया है। समसामयिक लेखक होने के कारण उनके कथन में पर्याप्त सत्य की मात्रा है। माना कि पूर्वाग्रह वश उन्होंने अनेक बातें छिपाई हैं। किन्तु ऐसी बातें भी हमें उनसे प्राप्य हैं जिनके सम्यक् ज्ञान के बिना हम्मीर के जीवन को समझना कठिन है।

अमीर खुसरो—हम सबसे पहले अमीर खुसरो की रचनाओं को लेते हैं जिसके इतिहास ग्रन्थों की रचना सन् १२९१ से १३२० के बीच में हुई है। दिवलरानी में (जिसकी रचना सन् १३१९ की है) अमीर खुसरो ने लिखा है :—

“देहली की विजय के उपरान्त जब सिन्ध और पहाड़ों तथा दरियाओं के प्रदेश सुल्तान के अधीन हो गए तो उसने निश्चय किया कि गुजरात का राय भी उसके अधीन हो जाय। उसने उलुगखाँ को आदेश दिया कि वह उस प्रदेश पर आक्रमण करे। उलुगखाने सुबज्जम भायन की ओर रवाना हुआ। रणथम्बोर पर उसने बड़ी तेजी से रक्तपात प्रारम्भ कर दिया। वहाँ का राजा हमयाराय (हम्मीरदेव) राय पियौरा के वंश से था। दस हजार सवार देहली से २ सप्ताह में वावा मारकर वहाँ पहुँचे थे। वहा की चहारदीवारी ३ फरसंग^१ के घेरे में थी और पत्थर की बनी हुई थी। (६४-६५) सुल्तान भी युद्ध के लिए वहा पहुँच गया। किन्तु उलुगखाँ को किले पर आक्रमण करने का आदेश देकर स्वयं चित्तौड़ पर अपना अधिकार जमा लिया”।

१. खलजी कालीन भारत, पृ० १७१।

२. फरसंग तीन मील के बराबर होता था।

अलाउद्दीन और हमीर के सर्प का इससे अधिक विस्तृत विवरण खुसरो के ग्रन्थ 'खजादुलफूतह' में है जिसकी रचना उसने सन् १३११-१२ में की। भाषा अत्यन्त आलङ्कारिक है। खुसरो ने लिखा है, 'जब भगवान् क द्वाये का आसमानी चित्र रणधम्बोर पहाड़ी पर पहुँचा तब अत्यधिक ऊँचा किला, जिसकी अट्टालिकाएँ नभत्रा ने बात करती थीं घेर लिया गया। हिन्दुओं ने किले की दसों अट्टारियों पर आग लगा दी, किन्तु अभी तक मुसलमानों के पास इस अग्नि को बुझाने के लिए कोइ सामग्री एकत्रित न हुई थी। थैलों में मिट्टा भर भर कर पाशेब' तैयार किया गया। कुछ अमागे नव मुसलमान जो कि इससे पूरा मुगल थे हिन्दुओं से मिल गये थे। रजब से जीकाद (माघ में जुलाई) तक विजयी सना किले को घेरे रही। किले से बाणों की वर्षा के कारण पक्षी भी न उड़ सकत थे। इस कारण शाहीबाज भी वहाँ तक न पहुँच सकत थे। किले में अकाल पड़ गया। एक दाना चावल दो दाना सोना देकर भी प्राप्त नहीं हो सकता था। नय राज के पश्चात् मूय रणधम्बोर की पहाड़ियों पर तेजी से चमकने लगा। राय का समार में रक्षा का कोइ भी स्थान न दिखाइ पड़ता था। उसी किले में भाग लला कर अपनी स्त्रियों को आग में जलवा दिया। तत्पश्चात् अपने दो एक साथियों के साथ पाशव तक पहुँचा किन्तु उसे भगा दिया गया। इस प्रकार मगलवार ३ जीकाद ७०० हिजरी (१० जुलाई, १३०१ ई०) का किले पर विजय प्राप्त हो गई। भाषन जो इसमें पूव बहुत आबाद था और काफिरों का निवास स्थान था मुसलमानों

१ ' मिट्टा का गवान जो किले का दीवारों का ऊँचाई के बराबर बनाया जाता था। इस पर भाग और पत्थर पेंकोवाली मशानें रती जाती थीं।

उसने सोने की मूर्तियाँ पत्थर से तुड़वा डाली । महल, किला तथा मन्दिर तुड़वा डाले गये । लकड़ी के खम्भों को जलवा दिया गया । (३२) म्हायन की नींव इस तरह खोद डाली गई कि सेनिक धन सम्पत्ति द्वारा मालामाल हो गये । मन्दिरों से आवाज आने लगी कि शायद कोई अन्य महमूद जीवित हो गया । दो पीतल की मूर्तिया जिनमें से प्रत्येक एक हजार मन के लगभग थी तुड़वा डाली गई और उनके टुकड़ों को लोगों को दे दिया गया कि वे (देहली) लौटकर उन्हें मस्जिद के द्वार पर फेंक दें । तत्पश्चात् दो सेनाएँ दो सरदारों की अर्धानता में भेजी गईं । एक सेना का सरदार मलिक खुर्रम था और दूसरी सेना का सरदार महमूद नर जानदार था । (३३) म्हायन से भागकर कुछ काफिर पहाड़ी के दामन में छिप गये थे । मलिक खुर्रम सूचना पाते ही वहाँ पहुँच गया और अत्यधिक लोगों को बन्दी बना लिया । असंख्य पशु भी प्राप्त हुए । मलिक दानों को लेम्न सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ । नर जानदार ने चबल तथा कुंवारी नदी पार करके मालवा की सीमा पर धावा मारा और वहाँ बहुत लूट मार की । सुल्तान ने म्हायन से प्रस्थान किया ।^१ जलालुद्दीन के समय के सघर्ष का कुछ वर्णन अमीर खुर्रम के तुगलक नामे में भी है । जिसका रचना काल सन् १३२० है । खुर्रमखान पर विजय के बाद तुगलकशाह के भाषण को सुनकर लोगों ने कहा, “हे अमीर, तू अपने गुणों को दूसरों के नाम से क्यों बतता है । हम लोगो को तेरे विषय में पूर्ण जानकारी है, जिस समय बादशाह (जलालुद्दीन खल्जी) ने रणथम्बोर को घेर लिया और अपनी सेना के चारों ओर एक घेरा तैयार कर लिया तो उस समय राय

रणधम्बोर की एक चुनी हुई सेना ने उस घेरे पर धावा बोल दिया । इससे बादशाह की सेना में कोलाहल मच गया । उस समय बादशाह ने तुम्हे भी आदेश दिया और तू ने ही अपनी वीरता तथा परिश्रम से आक्रमण कारियों को पराजित किया । इस विजय के फलस्वरूप बादशाह ने तुम्हे विशेष रूप से सम्मानित किया ।”^१

अमीर खुसरों की रचनाओं में से उद्दत ऊपर के अवतरणा में हमीर विषयक अनेक तथ्य हैं । किंतु ये पुस्तकें तत्कालीन मुल्तानों को प्रसन्न करते और उनमें धन बटोरने के लिए लिखी गई थीं । इसलिए इनमें एक भी कटु सत्य न आने पाया है । विवरण एकांगी है और इसे पर्याप्त सावधानी से प्रयुक्त न करने पर कुछ असत्य के प्रचार की सम्भावना है ।

एसामी —एसामी ने ‘फुतूहूसलानीन’ की रचना सन् १३५० में की । उसके इतिहास में कई ऐसे तथ्य हैं जो अमीर खुसरों और नयचन्द्र की रचनाओं की अनुपृति करते हैं ।

सुल्तान जलालुद्दीन के बारे में उसने लिखा है कि ‘सुल्तान ने शिकार के नियम से म्नायन की ओर प्रस्थान किया । म्नायन पहुँचकर सुल्तान के आदेशानुसार सेना ने किले को टुकड़े टुकड़े कर दिया । मन्दिरों का विध्वंस तथा हिन्दुओं का विनाश कर दिया ।’^२

अलाउद्दीन के भाई उलुगखाँ ने गुजरात की विजय के बाद वापस लौटनी समय उलुगखाँ ने बलात् सरदारों लूट में से सुल्तान का हिस्सा बसूल कर लिया । “कमीज़ी मुहम्मदशाह, कामरू, यलचक्र तथा बरू जो

१ खलजी कालीन भारत, पृ० १९२

२ ” ” ” पृ० १९५ ९६

पहले मुगल थे, धन सम्पत्ति मागने पर उलुगखाँ की हत्या करने पर कटि-वृद्ध हो गए। उलुगखाँ उस स्थान पर न था जहाँ वह सोया करता था। उन लोगों एक शस्ता का जो कि शिविर के सामने था सिर काट लिया और उसे माले की नौक पर चढ़ाकर सेना में घुमाया। उलुगखाँ नुपके से नुसरतखाँ के पास पहुँचा। नुसरतखाँ ने विद्रोहियों पर आक्रमण कर दिया। यलचक तथा बर्क ब्ररणराय के पान भाग गए। कर्मीजी मुहम्मद शाह तथा कामरु रणथम्बोर के किले की ओर चल दिये।...

“उलुगखाँ ने भायन पर आक्रमण किया। जब उलुगखाँ को ज्ञान हुआ कि मुगलों (मुसलमानों) में दो व्यक्ति राय हमीर की शरण में पहुँच गए हैं तो उनसे एक दूत राय के पास भेजा और उसे लिखा कि कर्मीजी मुहम्मदशाह तथा कामरु दो विद्रोही तेरी शरण में आ गए हैं। (२७०-२७१) तू हमारे दुश्मनों की हत्या कर दे अन्यथा युद्ध के लिये तैयार हो जा। हमीर ने अपने मन्त्रियों से परामर्श किया। उन्होंने उसे राय दी कि हमें युद्ध न करना चाहिए और उन दोनों को उनके सिपुर्द कर देना चाहिए। हमीर ने उत्तर दिया कि जो मेरी शरण में आ चुका है। मैं उसे किसी प्रकार हानि नहीं पहुँचा सकता चाहे प्रत्येक दिशा से इस किले पर अधिकार जमाने के लिए तुर्क एकत्रित क्यों न हो जायँ। राय हमीर ने उलुगखाँ को उत्तर लिख भेजा कि “जो लोग मेरी शरण में आ गए हैं उन्हें मैं किसी प्रकार तुम्हको नहीं दे सकता। यदि तू युद्ध करना चाहता है तो मैं तैयार हूँ।” उलुगखाँ ने यह उत्तर पाकर रणथम्बोर पर आक्रमण करके किले के निकट पहाड़ी के दामन में शिविर लगा दिए। किन्तु उसने देखा कि किले तक पक्षी भी न पहुँच सकते थे। यह देख

कर जलुगराँ ने सुल्तान से सहायता करने की प्रार्थना की। (२७२-२७३) सुल्तान ने तुरत हम्मीर पर आक्रमण करने के लिए शहर के बाहर शिविर लगा दिए। दूसरे दिन वह तिलपट में भायन की ओर खाना हा गया। शाही सेना ने हम्मीर के किले के निकट पहुँचकर किले के चारों ओर शिविर लगा दिए। रात दिन युद्ध होन लगा। प्रत्येक दिशा में ऊँच ऊँचे गरगच^१ तयार किए गए। शाही सेना जो भी युक्ति करती, राय उसका काट कर देता। यदि तुक खाइयाँ को लकड़ा से पाट डेते थे तो रात्रि में बिना लकड़ी को जला देते थे। एक वर्ष तक किले को कोई हानि न पहुँच सकी। इसके उपरान्त बादशाह ने एक ऐसी युक्ति की जिसकी काट राय न कर सका। उसने आदेश दिया कि समस्त सैनिक चमड़े तथा कपड़ों के घेले बना कर मिट्टी से भर दें और उन घेलाँ द्वारा खाइ का पाट दें। इन प्रकार किले पर आक्रमण करने लिए माग तैयार हो गया। दो तीन सप्ताह तक घोर युद्ध होता रहा। राय हम्मीर ने जौहर का आयोजन किया। अपनी समस्त बहुमूल्य वस्तुएँ जला डालीं। इसके उपरान्त सबसे विदा होकर युद्ध के लिए निकला। फीराजा मुहम्मद शाह और कामरु भी युद्ध के लिए उसके साथ निकले। राय हम्मीर युद्ध करता हुआ मारा गया^२।

१ "एक प्रकार का चलता फिरता मचान जिस ऊँचा करके किले की दीवार के बराबर कर दिया जाता था और किले पर आक्रमण करने में सुविधा हानी था। कभी कभी इस पर छन भी होती थी जिससे किले के भीतर से आक्रमण करने वाल इन्हें कोई हानि न पहुँचा सकें।" (खलजी कालान भारत पृ० २)

२ खलजी कालीन भारत पृ० १९५ ६, १९८, २००

जिआउद्दीन बरनी—जिआउद्दीन बरनी का जन्म सन् १२८५ में हुआ। उसने तारोखे फारोजगारी की समाप्ति सन् १३०० में की जब बसकी आयु ७२ वर्ष की थी। उसके इतिहास में भी हमें सन् १३०० के सम्बन्धी अनेक उपयोगी सूचनाएँ हैं। उनमें से मुख्य ये हैं :—

(१) 'सन् ६८९ हिजरी (१२९० ई०) में सुल्तान जलालुद्दीन ने रणथम्बोर चढ़ाई की। म्हायन पहुँच कर उसे अपने अधिकार में कर लिया। वहाँ के मन्दिरों को क्लृप्त कर डाला। रणथम्बोर का गय-राजकुमारों, मुहम्मदों तथा प्रनिष्ठित व्यक्तियों एव उनके परिवार सहित अपने किले में बन्द हो गया। सुल्तान की उच्छा थी कि रणथम्बोर पर अधिकार जमा लिया जाय। किले को घेर लेने का आदेश दे दिया गया। मगरवी तैयार की गईं। मात्रान एव गरगत्र लगाए गये। किले पर अधिकार जमाने का प्रयत्न आरम्भ हो गया। अभी यह तैयारियाँ हो रही थीं कि सुल्तान म्हायन से सवार हो कर रणथम्बोर पहुँचा। किले का निरीक्षण करके चिन्ता में पड़ गया। मायकाल फिर म्हायन लौट गया। दूसरे दिन राज्य के पदाधिकारियों तथा सरदारों को बुलवा भेजा। उनमें कहा कि मेरी इच्छा है कि किले पर अधिकार जमा लें। कल जब मैंने किले के निरीक्षण करने के उपरान्त सोच-विचार किया तो मेरी समझ में यह आया कि यह किला उस समय तक विजय नहीं हो सकता जब तक मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या इस किले को प्राप्त

१—इसका अर्थ तोप भी बताया गया है, किन्तु सम्भव है कि इसके द्वारा आग तथा शीघ्र जलने वाले पदार्थ फेंके जाते हों (खजली कालीन भारत, ३) ।

करा के लिये अपने प्राण न त्याग दे और किले पर विजय प्राप्त करने के लिये न्यौछावर न हो जाय। साबातों के नीचे पाशेय बनान तथा गरगच्च लगाने में अपनी जान की धलि न दे दें। यह कहकर किले को विलय करने के विचार त्याग दिये और दूसरे दिन कूच करता हुआ सुरक्षित तथा त्रिना किसी हानि के अपनी राजधाना में पहुँच गया।”

(२) अलाउलमुल्क की राय से सहमत होकर अलाउद्दीन ने विश्वविजय के स्थान पर सब प्रथम भारत के हिन्दू राज्यों को जीतने का निश्चय किया। ‘सबप्रथम अलाउद्दीन ने रणथम्भोर पर विजय प्राप्त करना आवश्यक समझा, कारण कि वह देहली के निकट था और देहली के पियौराराय का नाता हमीरदेव उस किले का स्वामी था। बयाना की अक्ता के स्वामी उलुगखान को उसे विजय करने के लिए भेजा। नुसरतखान को जो उस वक कड़े का मुक्ता था, आदेश भेजा कि कड़े की समस्त सेना तथा हिन्दुस्तान का सब अक्ताओं की सेनाओं को लेकर रणथम्भोर की ओर प्रस्थान करे और रणथम्भार की विजय में उलुगखान को सहायता प्रदान करे। उलुगखान और नुसरतखान ने म्हायन पर अधिकार जमा लिया। रणथम्भोर का किला घेर लिया और किला जीतने में लग गए। एक दिन नुसरतखान किले के निकट पाशेय बंधवाने तथा गरगच्च लगवाने में तल्लीन था, किले के भीतर से मगरबी पत्थर फेंके जा रहे थे। अचानक एक पत्थर नुसरतखान को लगा और वह घायल हो गया। दो तीन दिन उपरांत उसकी मृत्यु हो गई। यह समाचार अलाउद्दीन को मिला तो वह राजसी ठाठ से शहर से बाहर निकल कर रणथम्भोर की तरफ रवाना हुआ।

बी सूरतगच्छीय ज्ञान मन्दिर, (१००) जयपुर

तिलपत में अलाउद्दीन के मतीजे अकत खाँ ने उसकी इत्या करने का प्रयत्न किया। 'अकतखाँ के उपद्रव को शान्त करने के पश्चात् अलाउद्दीन लगातार कूच करता हुआ रणथम्भोर की ओर खाना हुआ और वहाँ पहुँचकर डरे डाल दिये।...

“इससे पूर्व किले को घेर रखा गया था। सुल्तान के पहुँचने के उपरान्त इसमें और तेजी हो गई। राज्य के चारों ओर से बैरियाँ लाई गईं। उनके थैले बना बना कर सेना में बाँट दिये गये। थैलों में बालू भरी गयी और वे सन्दको (खाई) में डाल दिये गये। पात्रोव बाधे गये। सरगच लगाये गये। किलेवालों ने मगरवी पत्थरो द्वारा पात्रोवो को हानि पहुँचानी प्रारम्भ कर दी। वे किले के ऊपर से आग फेंकते थे और लोग दोनों ओर से मारे जाते थे।”

इसी बीचमें अलाउद्दीन को बढायू और अवध में उसके भानजो के विद्रोह की सूचना मिली। अपने अमीरों को उनके विरुद्ध भेजकर सुल्तान ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दिल्ली में मौला हाजी ने विद्रोह किया। किन्तु वह भी कई राजभक्त सरदारों ने नमाम्न कर दिया। दिद्रो के सब समाचार अलाउद्दीन को मिले। “किन्तु उसने रणथम्भोर का किला जीतने का दृढ सन्त्य कर लिया था। अतः वह अपने स्थान से न हिला और न देहली की ओर प्रस्थान किया। जितनी सेना भी किले की विजय में लगी हुई थी, वह सब की सब परेगान हो चुकी थी किन्तु सुल्तान अलाउद्दीन के भय और डर से कोई सवार अथवा प्यादा न तो देहली की ओर प्रस्थान कर सकता और न किसी अन्य ओर।”

“सुल्तान अलाउद्दीन ने हाजी मौला के विद्रोह के उपरान्त बड़े

परिश्रम तथा रक्तपात के पदचात रणधम्मोर के किले पर अपना अधिकार जमा लिया। राय हम्मारदेव तथा उन नव मुसलमानों को चा कि गुजरान के विद्रोह के उपरान्त भाग कर उसकी शरण में पहुँच गए थे हत्या करा दी। रणधम्मोर तथा उस स्थान के आस पास के किलायत (प्रदेश) एवं वहाँ का सब कुछ उलुगखाँ के सुपुत्र कर दिया गया^१।

अहमद बिन अब्दुल्लाह मरहिन्दी—इस लेखक का तारीखे सुवारकशाही में भी हम्मोर पर आक्रमण का वर्णन है। इसके अनुसार हम्मोर के पास १२,००० सवार अश्विनि प्यादे तथा प्रसिद्ध हाथा थे^२।

फरिश्ता —फरिश्ता ने अपनी नवारीख 'तारीखे फरिश्ता' का रचना सन् १६०६-१६०७ में की। उसका निम्नलिखित वर्णन भी कुछ नवीन तथ्याँस युक्त है —

'सुसरतयाँ की मृत्यु के बाद हम्मोरदेव ने दो लाख सवारों और फालों के साथ गढ़ से निकल कर युद्ध किया। उलुगखाँ घेरा उठा कर झाड़न धापस गया और वहाँ से सब हाल बादशाह को लिखा। जब गढरोध एक साल तक या दमरे कथन के अनुसार तान साल तक चल चुका था, बादशाह ने चारों ओर से सेना एकत्रित की और उह चले बाँटे। हर एक ने अपना धेला मरा और उसे खाइ म पेंका

१—खलजीकालान भारत, पृ० २२ २३, ५९ ६५,

२— " " पृ २२३ २२४।

जिसका नाम 'रन' था। इस तरह (गद्य की) दिवार तक ऊँचाई बनने पर घिरे हुए आदमियों को हराकर उन्होंने फिन्ना ले लिया। इम्मीरदेव अपने जाति भाइयों के साथ मारा गया। मुहम्मद शाह के नेतृत्व में कई लोगों ने विद्रोह किया था और जालोर से रणथम्भोर भाग आए थे। ये अविनाश में मारे गए। मीर मुहम्मद शाह स्वयं घायल होकर पड़ा हुआ था। जब मुल्तान की नजर टप पर पड़ी तो उसने दयाभाव में उससे पूछा, मैं तुम्हारी मर्हमपट्टी करवाऊँ और तुम्हें इस गतरनाक हालत में बचा लूँ तो भविष्य में तुम मेरे से क्या व्यवहार करोगे ?' उसने उत्तर दिया, "मैं स्वस्थ हुआ तो तुम्हें मार कर मैं इम्मीरदेव के पुत्र को गद्दीनशीन करूँगा।" क्रोधाविष्ट होकर मुल्तान ने उसे हार्थी कपड़ों के नीचे कुचलवा दिया। मन्तु फीरन ही मुहम्मदशाह की दिम्नत और स्वाधिवर्गिता का स्मरण कर उसके गृह गरीर को अच्छी तरह दफनवा दिया। इसके अतिरिक्त उसने उन आदमियों को भी मरवा दिया जिन्होंने राजा को छोड़ दिया था, जैसे राजा के वजीर रणमल आदि। उसने कहा, "अपने स्वामी के प्रति उनका ऐसा व्यवहार ग़हा है। ये मेरे प्रति सच्चे कैसे हो सकते हैं ?"

बरनी के वर्णन से अमीर तुमरो की कुछ जान बूझ कर की हुई गन्तिया दर की जा सकती हैं। जालुदीन ने न तुमरो से रणथम्भोर छोटा और न म्हाईन। वह इसके लिए विवश हुआ था। इम्मीर ने

अलाउद्दीन को भी आसानी से दुग नहीं दिया, उसने अत तक अलाउद्दीन का सामना किया और अनेक बार उसके प्रयत्नों को विफल किया। और इसामी का वणन तो और भी अधिक उपयोगी है। उसने चारों मुगल वंशुओं का नाम दिए हैं। नयचंद्र ने महिमासाहि का काम्बोज कुलान्वय बनाया है क्योंकि उसका नाम कर्नाबी मुहम्मदशाह था। नयचंद्र का गामरुक वास्तव में कामरुक है और विचर और तिचर वास्तव में यलचक तथा वर्ने हैं। इनमें से इसामी के कथनानुसार यलचक और वर्ने कण के पाम चले गए थे। किंतु यह सम्भव है कि वहाँ अपन को सुरक्षित न समझ कर व रणधम्मोर चले आए हों। उसने उलुगखाँ और हम्मीर को टन द्वारा उत्तर और प्रत्युत्तर भी दिया है। इसमें हम्मीर के वास्तविक उरित का अच्छी झलक है। उलुगखाँ और अलाउद्दीन के दुग को हस्तगत करने का प्रयत्न का भी इसमें विशद वणन है। जौहर का और हम्मार की धीर मृत्यु का भी इसामी ने समुचित रूप में उल्लेख किया है। फिरता का वणन में भी कुछ ऐसी बातें हैं जो अन्य मुसल्मानी नशीखों में नहीं हैं।

शिलालेख

हम्मीर के दो निधियुक्त शिलालेख मिले हैं एक संवत् १३४५ का और दूसरा संवत् १३४९ का। पहले में रणधम्मोर शाखा के तीन राजाओं का नाम है बामट जैत्रसिंह और हम्मीर। जैत्रसिंह ने मण्डप के राजा जयसिंह का त्त किया, कूर्मराज और क्वरालगिरि के राजा को मारा। मग्गाइधापाज में उमा मालव के राजा के मकड़ों धीर योद्धाओं को

पराजित क्रिया । और रणवम्भोर में कैद में डाला । उसका पुत्र हम्मीर था । हम्मीर ने अर्जुन को हराम्बर मालवे से उमली यशः श्री चीन ली । उसका मन्त्रिमुख्य कटारिया जातीय कायस्थ नरपति था । प्रगति लेम्बर हम्मीर का पौराणिक बीजादित्य था । दूसरे की तिथि माघ शुक्ल पौर्णमी है ।

बलवन का शिलालेख मन् १२८८ (सं० १३४५) की राजनीतिक और धार्मिक स्थिति को समझने के लिए विशेषरूप से उपयोगी है । उसके मूल पाठ का ऐतिहासिक भाग निम्नलिखित है :—

ॐ “शत्रो लम्बोदरो देयाटेककाल कलत्रयो ।

बुद्धिः सिद्धयो. स्तन-स्पर्श-हेनोरिव चतुर्भुजः ॥ १ ॥

दद्रु-श्लीपद-कुष्ठ दुष्टवपुषामार्धि विनिघ्नन्तुर्णा

कारुण्येन समीहितं वितनुतां देव. कपालीद्वरः ।

वामे यस्य चक्रास्ति चक्रटिनी पृष्ठे च मन्दाकिनी

निर्यत्-केतुमुखापगां-जलवहं कुट्ट प्रसिद्ध पुरः ॥ २ ॥

यदतिके श्राद्धकर्ता कुलकोटि विमुक्तिद ।

अनादिपादपोर्वापि दृश्यते किल शान्मलि. ॥ ३ ॥

चाहमान-नरेन्द्राणां वंशो विजयतामय ।

उपायुज्यत यद्दंड. कलौ गोवृष रक्षणे ॥ ४ ॥

कलिकाल केसरि-कुल-त्रस्यद्-गोचक्र-रक्षणोदक्षाः ।

अभवन्-विजित-विपक्षा पृथिवीराजादयो भूपाः ॥ ५ ॥

[The text in this block is extremely faint and illegible due to poor scan quality. It appears to be a large block of Devanagari script, possibly a manuscript or a dense printed page.]

तद्वशे राजानो भानव इव वैधवा बभूवांस ।

चाग्मट देव प्रमुखा जन कुमुदोल्लासनेक-सद्भावा ॥ ६ ॥

ततोभ्युदयमासाद्य जैत्रसिंह रवि न्भव ।

अपि मडप मध्यस्थ जयसिंहमतीतपत् ॥ ७ ॥

दूम क्षितीश क्रमठी कठिनोरुकठ

पीठी विलुठन कठोर-कुटारधार ॥

य कर्ष रालगिरि पालक पाल पालि

रोलत् कराल-करवाल करो विरेजे ॥ ८ ॥

येन ऋपाइथा घट्टे मालवेश मटा शत ।

बद्धवा रणस्तमपुरे क्षिप्ता नीतारच दासताम् ॥ ९ ॥

तस्मिन् सुवण धन दान निदान पुण्य

पर्यं पुरदर पुरी तिलकायमाने ।

साम्राज्यमाज्य-परितोपितहव्यवाहो

हमीर भूपतिरविन्दत भूतधान्या ॥

य कोटिहोम द्वितय चकार

श्रेणी गजानां पुनरानिनाय ।

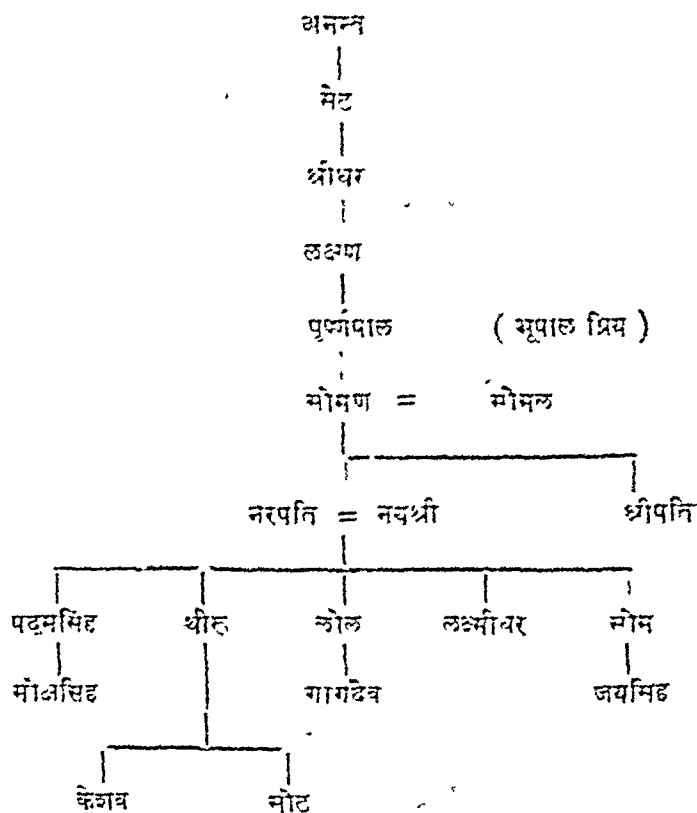
निजिजल्य येनाजु नमाजि मूध्नि

श्रीर्मालवस्योज्जगृहे इटन ॥ ११ ॥

रणस्तमपुरे दुर्गे वेश्म पुष्पक सङ्ग ।

तिसृभिभूमिभियुक्त य कांचनमघीकरत् ॥ १२ ॥

उसके बाद में मथुरा-पुरी-विनिर्गत कटारिया काश्यपों के एक वंश का वर्णन है । उसकी वंशावली निम्नलिखित है —



नरपति जैत्रसिंह और हम्मीर का मन्त्रि-मुल्य था । उसका कुल धीर स्वामिनी और सप्तारव (सूर्य) का वृज्ज था । उसने रणथम्भोर में चार मन्दिर और पिप्पलवाट में वापी बनाई । सिंहपुरी, कुलक्षेत्र और गोदावरी पर एक-एक सहस्र गाय ब्राह्मणों को दीं । नरपति की पत्नी ने एक ही दिन

स्नान करके ताम्र कांस्य आदि वस्तुओं की दश तुला दी। शुक के सिंहराशिस्थ होने पर उसने सुवर्णशृङ्ग वाला सौ सौ ब्राह्मणों को दी। उनका पुत्र सूर्यमन्त्र के सार का ज्ञाता था। लोल त्रिपुरा का पूजक था। ल सावर विविधदेशीय लिपियों और अनेक विद्याओं का जानता था और राजा के यहाँ उसका मान था। सोम धनी था और विद्वान् भी।

श्रीहम्मीर के पौराणिक उपामात्य यथादित्य ने इस प्रशस्ति की रचना की।

अग्रिम पंक्तियों में इन्हीं सब इतिहास के माधनों के आचार पर हम हमारे के जावन का इतिहासमानुषत जीवनी प्रस्तुत कर रहे हैं। मत्स्य ही आनन्द है,—ऐसा पूण विश्वास रखत हुए हम आज्ञा रखत हैं कि हमीर विषयक साहित्य के प्रमा इन इतिहास में सा सुत्र आनन्द की प्राप्ति करेंगे।

हम्मीर

सागरनाथ मत्स्यकृति और स्वनामना के लिए युद्ध करना मत्स्य में थोड़ा ज्ञान ज्ञाति का फलरूप रहा है। पृथ्वीराज और हम्मीर के वंशजों में अनेक भी आदरा विशेष का प्रतिष्ठा के लिए अनेक प्राणा के उरमग करत बाल पूजार्थ के प्रति सम्मान हैं अब भी अनेक चौहान दर्या में मत्स्य प्रवृत्त उक्ते हैं कि अपना पक्षान् पूजार्थों का मरहब मत्स्य अपना मातृभूमि की सेवा करें। कहा जाता है कि मत्स्यो मत्स्य का राजा बन के लिए आसि चाहमान का काम हुआ था। यह युवानी कहा है। किन्तु ऐतिहासिक काल में उनकी मत्स्य विरोधी सवाभा के अनेक प्रमाण हैं। आर्यों के आदमी में अब शरद भाग मत्स्य का जागकर गार्थे और अग्रमत्स्य होने के लिये अनेक राजपूत

जातियो ने जिनमें प्रतिहार, चौहान और राष्ट्रकूट प्रमुख हैं भारत की स्वतन्त्रता और संस्कृति की रक्षा के लिए सफल संग्राम किया चौहानों को इस बात का गर्व था कि वे कार्यान्वय 'आदिवराह' विन्ट को धारण करनेवाले महाराजाविराज भोज के दाहिने हाथ थे । और जब प्रतिहार साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया और मुसलमानी सेनाएँ भारतीय संस्कृति और स्वातन्त्र्य को पददलित करती हुई चारों ओर धावे मारने लगी, चौहानों ने इन विधर्मियों से मोर्चा लेने का बीड़ा उठाया । दुर्लमराज तृतीय ने यचनराज इम्राटीम को रोकने में प्राण दिए,^१ अजयराज को प्रसिद्ध 'मुस्लिम सेनापति बहलिन का सामना करना पड़ा,^२ और अजयराज के पुत्र अणोराज ने उस मैदान में, जहाँ वर्तमान आनासागर है, बुरी तरह से मुसलमानों को परास्त कर अजयमेरु को वास्तव में अजय सिद्ध कर दिया^३ । भीमलदेव चतुर्थ को तो गर्व ही इस बात का था कि म्लेच्छों का विच्छेदन कर आर्यावर्त को मन्चे अर्थ में आर्यावर्त बना दिया था^४ । पृथ्वीराज तृतीय के वीरकृत्यों से सभी परिचित हैं । भारत की फूट और राजपूतों की राजनैतिक बालिगता का एक ज्वलन उदाहरण तराईन का दूसरा संग्राम है" ।

१. देखें 'अली चौहान डिनेस्टीज' (प्राचीन चौहान राजवंश) पृ० ३५.

२. देखें वही पृ० ३८-४२.

३. देखें वही पृ० ४३-४५, जिस मैदान में मुसलमान हारे थे, उसे पवित्र करने के लिए ही आनासागर मील का निर्माण हुआ था (पृथ्वीराज विजय, ६, १-२७)

४. देखें 'अली चौहान डिनेस्टीज', पृ० ६०-२

५. विशेष विवरण के लिए देखें वही, पृ० ८८-९०

जमर और दिगी छोड़कर चौहानों ने रणथम्भोर में एक नया राज्य का स्थापना की। किन्तु सन् १२२० में इल्तुत्तमिश ने रणथम्भोर पर अधिकार कर लिया। लगभग दस माल बाद पृथ्वाराज तृतीय के प्रपौत्र वाग्भट्ट ने रणथम्भोर पर घरा डाला। थोड़े ही दिनों में दुर्गाथ मुस्लिम विपाही भूख और प्यास से तड़पन लग। यह अज्ञान है कि उनमें से किने वन किन्तु यह निश्चित है कि चौहानों ने रणथम्भोर पर वापस अधिकार जमा लिया। मुसलमानों ने सन् १२४८ और १२५३ में दुर्गा को फिर जीतने की काशिश की। किन्तु दोनों बार क्राफा हानि उठाकर उन्हें वापस डाना पड़ा और वाग्भट्ट की शक्ति लगातार बढ़ती ही गई।

सन् १२५४ के लगभग वाग्भट्ट का पुत्र जैत्रसिंह सिंहानारूढ़ हुआ। हमारे क शिलालेख के अनुसार, 'जैत्रसिंह एक नवीन प्रकार का सूर्य था क्योंकि उसने मण्डप में भी स्थित जयसिंह को तप्त किया। उसके कठोर कुत्तार का धारा नेवृमराज (कछवाह राजा) के कठ का छेदन किया था। उसकी तलवार के रालगिरि के पालक के सिर पर खेल चुकी थी उसने भूपाइया घट्ट में मालव के राजा के सौ सैनिकों को पकड़ लिया, और यह अपना दाम बनाया' इस लेख से स्पष्ट है कि जैत्रसिंह ने प्रवर्धमान राज्य का स्वामी था। शायद आमेर के कछवाहे राजा को मारकर उसने आमेर का कुत्र भू भाग अपना राज्य में मिला लिया है। कछवालगिरि शायद यादव राजपूतों के हाथ में रहा हो। विशेष संपन्न मालव में था। भूपाइया घट्ट भवाइन घाट) के स्थान पर (जो अबल

१ जैत्रसिंह बहा पृ० १०३ १०५

शिलालेख ऊपर देखें। यह श्लोकों का भाषाण मात्र है।

नदी पर लाखेरी के स्टेशन मे ठीक उस गील दक्षिण की ओर हैं) जैत्रसिंह ने मालवे के अनेक सैनिकों को पकड़ा । सम्भव है कि मालवा वालों ने जैत्रसिंह के अनेक छोटे-मोटे आक्रमणों के उत्तर में कुछ सेना भेजी हो, या उम् घाटी द्वारा रणथम्भोर के राज्य पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया हो । उस समय जयसिंह तृतीय धारा का ग्रामक था । किन्तु सम्भव है कि मण्डप को ही इसने अपना मुख्य आवास स्थान बनाया हो । टा०डी०मी० नरवार के मतानुसार इनका दूसरा नाम जयवर्मा भी था^१ । इनका एक दान पत्र वि० सं० १३१७, ज्ये० सुदी ११ का मंडपदुर्ग (नाट) से दिया हुआ मिला है (एपिग्राफिया इण्डिका, ९, १२०-३)

सन् १२५९ मे दिल्ली के सुल्तान नानिख्दीन ने रणथम्भोर को हस्तगत करने का प्रयत्न किया । किन्तु उसके सिर पर भी असफलता का ही नेहरा बधा^२ ।

जैत्रसिंह के तीन पुत्र थे, सुरतान, वीरम और हम्मीर । सुरतान इनमें ज्येष्ठ था, किन्तु हम्मीर सत्ते योग्य । अतः जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही वि० सं० १३३९ (सन् १२८३) माघ शु० पूर्णिमा, रविवार के दिन हम्मीर का राज्याभिषेक किया^३ । इसके बाद भी जैत्रसिंह सम्भवतः तीन वर्ष और जीवित रहा ।

हम्मीर के राज्य के आरम्भिक काल में राजनैतिक स्थिति बहुत कुछ उसके अनुकूल थी । सन् १२८६ में बल्बन की मृत्यु के बाद लगभग चार

१. परमारवंश दर्पण, पृ० ९ टिप्पण १४

२. अली चौहान डिनेस्टीज, पृ० १०५-१०६

३. हम्मीर महाकाव्य ७, ५३-५६

साल तक दिल्ली में कोई ऐसा शासक न था जा हम्मार की बढ़ती शक्ति को रोकता। मालव का पड़ोसी राज्य भी अवनति का भार अग्रसर हो रहा था। शायद वह दो भागों में भी विभक्त हो चुका हो, जिसमें एक की राजधानी शायद मडप में और दूसरे की अय्यर हो। वास्तव में देवपाल की मृत्यु के बाद ही स्थिति खराब हो चली थी। मालव का अमात्य गोगदेव बाध मालवे का स्वामी बन बैठा था, अवशिष्ट भाग में भी कुछ शांति न थी। गुजरात में सारङ्गदेव का राज्य था। किंतु गुजरात के भी समृद्धि के दिन बात शुरू थे। चित्तौड़ में महाराजकुल समरमिह राज्य कर रहा था जो शक्तिहीन तो नहीं, किंतु जिगापु राजा न था।

अमारगुसरो अपने प्रथम विपत्ताहुलफुतूह में, जिमकी रचना सन् १२९१ में हुई थी, हम्मीर के एक साहनी का जिक्र किया है जिसने मालवा और गुजरात तक धावे किए थे^१। इससे स्पष्ट है कि हम्मीर की दिग्विजय सन् १२९१ से पूर्व हो चुकी थी, और ऐसा ही अनुमान हम हम्मीर के वि० स० १३४५ (सन् १३८८) से शिलालेख से भी कर सकते हैं।

हम्मीर विजय महाकाव्य में इस दिग्विजय का वर्णन निम्नलिखित है^२

‘कोई कहते थे कि हमकी सेना में हार्यो अधिक हैं, कोई घोड़े कोई इसके पैदलों के और कोई उसके रथों के प्राचुर्य की बातें करता था। क्रम से घृष्या को पार करता हुआ वह भीमरसपुर पहुँचा। वहाँ शत्रुत्व धारण करन वाले अजुनराजा को अपनी तलवार से कूटकर उसने अपना आज्ञाकारी

१, ऊपर उद्धरण देखें।

२ हम्मीर महाकाव्य, ९, १४-४८, प्रशासत्यक विशेषण और इतिहास की दृष्टि से असाध्य वर्णनों का अनुवाद हमने नहीं किया है।

वनाया । फिर मण्डलकृन् दुर्ग से कर लेकर वह गीप्र ही धारा पहुँचा ,
 वहाँ परमार वंश में प्रौढ़ राजा भोज को, जो दूसरे भोज की तरह था, उसने
 स्नान किया । तदनन्तर उसने अचति (उज्जयिनी) पर आक्रमण किया
 और शिप्रा में स्नान कर महाकाल का अर्चन किया । वहाँ से लौटकर उसने
 चित्रकूट को कूटा और आवृ पहुँचकर वहाँ अपने तम्बू लगाए । पहाड़
 पर चढ़कर विमलवसही में उसने श्रौतप्रमद्वेय को प्रणाम किया । वस्तुपाल
 के मन्दिर को देखकर वह विस्मित हुआ । अर्बुदा को उसने गक्ति समेत
 प्रणाम किया और वजिष्ठाश्रम में आराम कर और मन्दाग्निनी में स्नानकर
 उसने भगवान् अचलेश्वर का पूजन किया । यहाँ अर्बुदेश्वर ने उसे सर्वस्व
 अर्पण किया । वहाँ से उतर कर वर्धनपुर को निर्धन और चङ्गा को
 रक्षरहित कर वह अजमेर होता हुआ पुष्कर पहुँचा और स्नान किया ।
 उसके बाद शाकम्भरी, महाराष्ट्र और खड्गिल्ल को उसने निग्रम
 किया । ककराला में त्रिभुवनाद्रि के स्वामी ने उसे मान दिया । इस
 प्रकार सर्वत्र विजय करता हुआ वह रणथंभोर लौटा ।”

इन नव विजित स्थानों की पहचान कुछ कठिन है । पहला स्थान
 भीमरस है जिसका स्वामी अर्जुन था । यह अर्जुन सम्भवतः मालवे का राजा
 अर्जुन होगा, जिसे हराकर इम्मीर ने बलात् उसके हाथी छीन लिए थे^२ ।
 इस विजय के फलस्वरूप चम्पल से लगता हुआ मालव राज्य का कुछ भाग
 भी इम्मीर के हाथ लगा होगा । दूसरा विजित स्थान मण्डलकृन् है । यह
 सम्भवतः माण्डू है । इम्मीर के पिता ने उसके राजा जयसिंह को तप्त किया
 था । इम्मीर ने उस नगर से कर वसूल किया । इम्मीर महाकाव्य में इससे

आगे बन्कर हमीर द्वारा वाराधीश भोज द्वितीय की पराजय का वणन है। किंतु स० १३४५ के हममार व शिलालेख में इस विजय का उल्लेख नहीं है। इसलिये या तो यह विजय वि० स० १३४५ के बाद हुई होगी। या नयचंद्र व वणन में कुछ अत्युक्ति है। धारा के बाद हमीर का प्रयाण उत्तर का भार है। उसने वजयिनी पर आक्रमण किया। वहाँ से मुड़कर उसने चित्रकूट पर छापा मारा। नयचंद्र का यह कथन सत्य माना जाय तो महाराजल समरसिंह को भी हमीर के हाथ पराजित होना पड़ा था। चित्तोड़ से हमीर आवू पड़ा। उस समय अबुल-खजर सम्भवत प्रतापसिंह परमार रहा हो। बघनपुर बदनौर है और चन्ना इसी नाम का मेरो का दुर्ग। उसके बाद पुंकर में स्नान कर सांभर पहुँचना कठिन न था। महाराष्ट्र सम्भवत मरोठ है, जो सांभर से कुछ अधिक दूरी पर नहीं है और गडिल्ल राहला है।

नयचंद्र ने इस सब विजयों को एक साथ रख दिया है। किंतु अधिक सम्भव यह प्रताप हाता है कि सवत् १३४५ (सन् १०८८) से पून दो दिग्विजय हो चुका थी। इस सवत् के ऊपर उद्धृत शिलालेख के ग्यारहवें श्लोक में हमीर के दो कोटि होमा का और बारहवें श्लोक में काशन विनिदिन तान भूमि से समायुक्त पुष्पकसंज्ञक नाम के प्रासाद का वणन है। इनमें से एक एक कोटि होम एक एक दिग्जय के बाद हुआ होगा। शिलालेख से यह भी निश्चय है कि उस समय तक यह प्रयाण मुख्यतः मालवे के विरुद्ध ही हुआ था। मरोठ खण्डिल आदि पर प्रयाण सम्भवत सन् १२८८ ई० के बाद की घटनाएँ हैं। किंतु इन दिग्जयों के होने की सम्भावना अवश्य है क्योंकि सन् १२९१ में निर्मित अपने ग्रंथ 'निफताहुलफुतूह' में

अमीर तुमरो ने हम्मीर के गुजरात तक के आक्रमणों का उन्मुख किया है ।

इन प्रयाणों से हम्मीर को प्रचुर धन की प्राप्ति हुई । उसकी जीति भी दिग्दिगन्त में फैली । ब्राह्मणों और सर्गवो को भी धन की प्राप्ति हुई । किन्तु अन्ततः उसे इस नीति से विशेष लाभ हुआ था नहीं—यह संदिग्ध है । ये प्रयाण यदि किसी मुसल्मानी प्रान्त या राज्य पर होते तो देश को अधिक लाभ होता ।

किन्तु हम्मीर मुसल्मानों पर आक्रमण करना या न करना उनसे उनका संघर्ष अवश्यन्भावी था । सन् १२९० ई० में गुजरात वश का अन्त हुआ और जलालुद्दीन खतजी दिल्ली का सुल्तान बना । विशेष युद्ध प्रिय न होने पर भी उसने रणयम्भोर पर आक्रमण करना आवश्यक समझा । पृथ्वीराज के किसी वंशज की वटनी हुई शक्ति दिल्ली के मुसल्मानी साम्राज्य के लिए असह्य थी ।

हम ऊपर इस आक्रमण के तत्सामयिक वर्णन को उद्धृत कर चुके हैं । उस आक्रमण की मुख्य घटनाएँ ये थीं :—

(१) रणयम्भोर की पहाड़ियों के निकट पहुँच कर तुर्कों ने गावों को नष्ट करना शुरु कर दिया । हिन्दुओं के ५०० सवारों से उनकी मुठभेड़ हो गई । इसमें इनकी विजय हुई । (मिफनाहुल फुतूह)

(२) दूसरे दिन मुसल्मानी सेना म्हायन की कठिन घाटी में प्रविष्ट हो गई । हम्मीर के साहनी ने, जिसने भालवे और गुजरात तक वावे मारे थे, इन पर आक्रमण किया किन्तु वह पराजित हुआ । म्हायन मुसल्मान के हाथ आया (वही)

(३) तीसरे दिन जलालुद्दीन म्हायन व राजमहल में उतरा और चौथे दिन उसने म्हायन व मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट किया। मन्दिर, महल, किला सब उसने नुडवा डाले (धही)

(४) यहाँ से बढ कर रणथम्भोर का घेर लिया गया और अनेक यत्न लगाए गए। अन्दर से निकल कर हम्मीर ने सेना पर ऐसा आक्रमण किया कि लोगों के हाथ पैर फूल गए। कबल तुगलक खान ने कुछ स्थिति ममाली। किन्तु जलालुद्दीन ने रणथम्भोर लेने का रिचार सयथा द्योढ़ दिया और म्हायन से “दूमेरे दिन कूच करता हुआ तथा विना किसी हानि के अपनी राजधानी पहुच गया” (तुगलकनामा और नारीचे फिरोजशाही)

हम्मीर महाकाव्य में जलालुद्दीन व समय व इस सघर्ष का वर्णन नहा है। उसके अनुसार दिग्विजय व बाद पुरोहित विश्वरूप के कहने पर हम्मीर ने काशीवासी एव अन्य विद्वान् ब्राह्मणों की सहायता से काटियज्ञ आरम्भ किया। उसा मारि का निवारण और सानों व्यसनों का बजन किया। कारागारों स उनसे कैदी छोड़े और अनेक प्रकार क दान दिए। फिर पुरोहित व कहने पर उसने एक यहीने का ग्रन्थ ग्रहण किया। इसी बीच में बलालुद्दीन ने इमे अच्छा अवसर समझ कर उल्लूखान (उलुगखान) को रणथम्भोर क विरुद्ध भेजा। (घाटी क) अन्दर प्रवेश करीं में असमथ होकर बह वर्णाशा (बनास) नदी के किनारे ठहरा। उसने गांव जलाए, फमल नष्ट की। हम्मीर उस समय मौनवन में था, इसलिए धर्मसिंह के कहने से सेनानी भीमसिंह ने मुस्लिम फौज पर आक्रमण किया, और उसे हराकर वापस लौटने लगा। उसके बाकी साथी विजय की खुशी में

आगे बढ़ गये। भीमसिंह ने जब घाटी में प्रवेश किया तो मुसल्मानों से छीने हुए वाद्य उसने बजा डाले। इसे अपनी जय का संकेत समझ कर चारों ओर से मुसल्मानी सैनिक आ जुटे, और अपने परिमित साधियों के साथ मुसल्मानों के विरुद्ध युद्ध करता हुआ भीमसिंह मारा गया। उसके बाद “शकेन्द्र” भी शीघ्रता से अपने शिविर में पहुँचा और शूरत्रियों से डरता हुआ अपने नगर को लौट गया। धर्मसिंह को अंधपन और कायरता के लिए निन्दित करते हुए, इम्मीर ने मौनव्रत के अन्त में धर्मसिंह को वास्तव में शरीर में अन्धा और पुस्तबहीन कर दिया और उसके स्थान पर खट्ग्राही (खाटावर) भोज को नियुक्त किया।”

इम्मीर महाकाव्य की इस कथा का मुसल्मानी तवारीखों में जलालुद्दीन के रणयम्भोर पर आक्रमणों के वर्णन से तुलना करने पर प्रतीत होता है कि भीमसिंह की मृत्यु वास्तव में अलाउद्दीन के विरुद्ध नहीं, अपितु जलालुद्दीन के विरुद्ध लड़कर हुई थी। यही ‘सेनानी भीमसिंह’ मिफ्ताहुल फुतूह का ‘साइणी’ था, जो ‘हिन्दू नहीं अपितु लोहे का पहाड़ था’ और जिसके अधीन ४०,००० सैनिकों ने मालवे और गुजरात तक धावे मारे थे। फायन की कठिन घाटी में इमी का मुसल्मानों से युद्ध हुआ था। तुग़लक़ नामे और फिरोजशाही के वर्णनों से यह भी सिद्ध है कि अन्ततः इस आक्रमण में जलालुद्दीन को कुछ सफलता ही न मिली; उसे बहा से सुरक्षित बचकर निकलने में भी आग़ड़ा होने लगी। और जिस प्रयाण के बारे में बरनी कह सका कि फायन से दूसरे दिन कूच करता हुआ तथा बिना किसी हानि के सुल्तान अपनी राजधानी पहुँच गया, उसीके बारे में नयचन्द्र ने

यह कहने में कुछ अत्युक्ति न की है कि 'शक' शीघ्रता से अपने शिविर में पहुँचा और क्षत्रियों से डरता हुआ अपनी पुरी को लौट गया।

अलाउद्दीन के बादशाह होने पर स्थिति फिर बदला। दक्षिण का लूट का अपार धन उसके पास था उसके पास न सेनाकी कमी थी और न सेनापतियों की। उसका इच्छा भी यही था कि समस्त भारत को जात लिया जाय। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने सन् १२९८ में गुजरात पर आक्रमण कर सोमनाथ के मन्दिर का नष्ट कर दिया। समस्त हिन्दू ससार क्षुब्ध हुआ किन्तु कोई इसका प्रतीकार न कर सका। सेना अपना लूट लेकर दिली लौटना समय सिराणा गाँव के निकट पहुँचा, ता उमम कुछ हलचल मची। सुसमाना नियम के अनुसार लूट का कुछ भाग लूटनेवाले को मिलना है और कुछ राज्य को, किन्तु इस अभियान में बहुत सा लूट का सामान, विशेष कर मोती जवाहरात आदि वस्तुएँ सैनिकों ने छिपा ली थीं। सुल्तानी सेना के सेनापति उलुगखाँ ने सब को लूट का माल वापस करने करने के लिए जब विवश किया तो कमीज़ी मुहम्मद शाह, कामरु, यलचक तथा बक जो पहले मुगल थे उलुगखाँ को मारने के लिए तयार हो गए। रात को वे उलुगखाँ के तम्बू में जा चुके, किन्तु भाग्यवशात् उलुगखाँ अपने सोने के स्थान पर न था। वह उपर से जुसरतखाँ के पास पहुँचा। जुसरतखाँ से पराजित हाक बिद्राही वहाँ से भागा। एसामी के कथनानुसार यलचक और बक गुजरात के गय वर्ण बघला के पास भागे और मुहम्मदशाह तथा कामरु न रणधम्भार में शरण ग्रहण का।

२ ऊपर दिए पुनूहुरसलाहीन और तारीखे फिरोजशाह के अवनरण देखें।

किन्तु नयचन्द्र के ऋयनानुसार ये चारो ही रणथम्भोर में थे, और उमने इनके नाम महिमासाहि, गर्भहृक, तिचर और वैचर के रूप में दिए। बहुत सम्भव है कि राय कर्ण की शरण में अपने को सुरक्षित न पाकर ये कुछ समय बाद रणथम्भोर आ गए हों।

मुहम्मदशाह की रणथम्भोर पहुँच कर शरणदान की प्रार्थना सभी हम्मीर विपयक काव्यों में वर्तमान है। हम्मीर ने उसे शरण ही नहीं दी, उसे अपने भाई की तरह रखा। चाहे कार्य नीति-सम्मत रहा हो या असम्मत हिन्दू-संसार ने हम्मीर के इस आदर्श त्याग को नहीं भुलाया है। वह उनी के कारण अमर है। राजनैतिक दृष्टि से भी कार्य कुछ बुरा न था। अलाउद्दीन से युद्ध तो अवश्यम्भावी था। आज एक राज्य की तो कल दूसरे की बारी थी। ऐसी अवस्था में शत्रु के शत्रुओं से मैत्री नीतिपूर्ण थी। अनैतिपूर्ण तो गायद इसमें पूर्व के हम्मीर के कार्य थे जिनकी वजह से सभी आसपाम के राजा उससे सशङ्कित हो उठे होंगे। अपने लगभग अठारह वर्ष के राज्य में उसने राज्य की सीमा बढ़ाई, अनेक कोटि यज्ञ किए। और ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। किन्तु उसकी सामान्य प्रजा को उसकी नीति से गायद ही कुछ विशेष लाभ हुआ हो। उसकी सैन्य-संख्या बहुत बढ़ी थी, और राज्य के निजी साधन बहुत कम। जबतक धन दूसरे राज्यों की लूट से आता रहा, सैन्यभार कुछ विशेष दुःखदायी न था। किन्तु जब लुटेरों की संख्या बढ़ गई, मुसलमानी आक्रमणों की शृंखला में हम्मीर के लिए अपने ही राज्य में रहना आवश्यक हो गया और कोटि मखादि के व्यय से कोश बहुत कुछ रिक्त हो गया, इसके सिवाय उपाय ही क्या था कि वह प्रजा पर नित्य नवीन कर लगाए। दिल्ली में अलाउद्दीन को भी आर्थिक

आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा था, किन्तु उसमें स्वयं वह बौद्धिक शक्ति था जो सैनिक ही नहीं, आर्थिक समस्याओं को सुलझा सके। हम्मीर का आर्थिक समस्याएँ सुलझाने के लिए मंत्रियों का सहारा लेना पड़ा।

उसके मंत्रियों में धर्मसिंह अथवा चिन्तन में कुशल था। किन्तु उसे हटाकर हम्मीर ने यह कार्य खाँडाधर राजा को दिया था और भोज तो कारा खाँडाधर हा निकला। न वह पर्याप्त धन ही एकत्रित कर सका और न वह कुछ व्यय ही का हिसाब किताब रख सका। अतः विवश होकर हम्मीर ने अर्थाचिन्ता का कार्य धर्मसिंह को सौंपा। खाँडाधर भोजदेव से भी उसने इतना दुर्व्यवहार किया कि वह अपने भाई पृथ्वीसिंह समेत अलाउद्दीन की सेवा में पहुँच गया। हम्मीर ने उसके स्थान पर रतिपाल का दण्डनायक का पद दिया।

नयचन्द्र के कथनानुसार धर्मसिंह ने प्रतिशोरा की दृष्टि से प्रजा को पाहिन किया था नए नए उपाय निकाले थे जिनसे कोश में धन आ सका। किन्तु इस नातिक्रमिक लिए स्वयं हम्मीर भी उत्तरदायी था ही उसे धनकी अत्यधिक आवश्यकता न होती तो धर्मसिंह का प्रजा को करोपीडित करने का अवसर हा कहाँ से मिलता? भोजदेव को भी रणथम्भोर से निकालना भूल थी। मीमसिंह की मृत्यु के बाद रणथम्भोर के विभिन्न सेनापतियों में से भोज भा एक था और जिस व्यक्ति

१—खाँडाधर भोजदेव के लिए मरु भारती ८ १ पृ० ११३ पर हमारा लेख पढ़ें। कविमरु के कवित्त ९ और १० (हम्मीरायण पृष्ठ ४७), और रोम का कवित्त १५ भी भोज और पृथ्वीराज के लिए टट्टय हैं। हम्मीरहाकाय में सब प्रसङ्ग देखें सग ८ श्लोक ११७-१८८

को हम्मीर ने यह पद दिया, वह तो अन्नतः कृन्धन सिद्ध हुआ । हम उसे हम्मीर की भूल कहें, या देव ही उसके प्रतिकूल था ?

सन् १२९८ में हम्मीर ने मुहम्मदशाह को शरण दी थी । उसके बाद लगभग दो वर्ष तक अलाउद्दीन ने कुछ न कहा । उत्तर-पश्चिम में मुगलों के भयकर आक्रमणों के कारण टमीकी जानफो आ बनी थी । जब इन से कुछ छुट्टी मिली तो उसने अपनी भारतीय नीति के सूत्रों को फिर सम्माला । जिन राज्यों के रहते दिल्ली का नार्वभौमत्व स्थापित नहीं हो सकना था उनमें से रणथंभोर एक था । मुहम्मदशाह आदि को शरण देकर हम्मीर ने अब एक और अक्षम्य अपराध किया था । उसका राज्य दिल्ली के बहुत निकट भी था ।

सुल्तान की पहली चटाई मानों हम्मीर के सत्त्व को जाँचने के लिए हुई । एक बड़ी सेना हिन्दूवाट जा पहुँची । किन्तु उममें पूर्व कि वह आगे बढ़ें हम्मीर के सेनापतियों ने उसे आ घेरा । पूर्व से बीरम, पश्चिम में मुहम्मदशाह, आग्नेय में रतिपाल, वायव्य में निचर (यलचक) डैयान से रणमल्ल, नैर्ऋत में वेचर (बर्क), जाजदेव ने दक्षिण और उत्तर में गर्भलक (कामरु) ने मुसलमानी फौज पर आक्रमण किया । सुल्तान बुरी तरह से हारे । अनेक मुसलमान स्त्रियाँ रतिपाल के हाथ आईं । रतिपाल ने राजा की ख्याति के लिए उनमें गाव-गाव में छाल बिक्वाड़े हम्मीर रतिपाल से इनका प्रसन्न हुआ कि उसने 'यह मेरा मस्त हाथी है कहकर उसके पैरों में सोना की सकली डाली और दूसरों को भी वस्त्रादि देकर सम्मानित किया ।' उम समय किसे ध्यान था कि रणमल्ल, रतिपाल आदि स्वामीद्रोही सिद्ध होंगे ?

दूसी विजय के बाद मुहम्मदशाह आदि ने जगरापर आक्रमण किया जा उस समय भोज की जागीर मंथी। भोज वहाँ न था। किंतु उन्होंने जगरा को लूटा और भोज के भाई पीथसिंह को सकुटुम्ब पकड़ कर रणघमार ले गये। भोज रोता घोना दिल्ली के दरबार में पहुँचा।^१

अब भलाउद्दीन के लिए स्थिति असह्य हो चली थी। उसने बयाना के भक्त के स्वामी उलुगखान को रणघम्मोर जीतने की आज्ञा दी और कड़े के मुका नुसरतखान को भी आज्ञा हुई कि वह कड़े का समर्थन मेना तथा हिन्दुस्तान का सब फौजों को लेकर उलुगखान का सहायता करे। जिनकी बड़ी सेना का प्रयोग भलाउद्दीन कर रहा था उमम इब्नार की शक्ति का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। कोई अथ राजा होना तो अधीनता स्वीकार कर लेना किंतु हमीर ता मानों किम भिन्न साम्राज्य से हा बना था।

इस बार छल मे या धलसे मुसलमानी सेना ने फाइन का घागी पार कर ली और फाइन पर भी अधिकार जमा लिया। नदरत के कपनानुसार संधि की बातचीत के बहाने उलुगखान आर नुसरत एमा कर सक^२ किंतु तथ्य सायद यह हो कि मुसलमानी सेना का मर्या इस बार इनकी अधिक था कि राजपूतों ने उसका सामना करना उचित न समझा। एमी स्थिति में अपने सब भाषणों को समूहित कर गणरोध सहना सम्भव अधिक दिक्कर था। नाथ हो यह भी तथ्य है कि उलुग

१—वही पृ १०, १४ ८८

२—वही, ११, १९ २४,

खाँ और नसरतखाँ ने बिना युद्ध के भी इम्मीर से अपनी बातें मनवाने का प्रयत्न किया था। एसामी के कथनानुसार उलुगखाँ ने एक दूत राय के पास भेजा और उसे लिखा कि कमीजी मुहम्मदशाह तथा कामरु दो विद्रोही तेरी शरण में आ गए हैं। तू हमारे दुश्मनों की हत्या कर दे, अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जा।” इम्मीर महाकाव्य में उलुगखाँ और नुसरतखाँ के दूत का नाम मोतड़ण है।^१ इमने ‘३०० घोड़े क्री, स्वर्णलज्ज चार हाथी, राजसुता और विग्रह रूप से चार मुगल विद्रोहियों की माँग की।” इससे मिलती-जुलती मागका अन्य इम्मीर सम्बन्धी काव्यों में भी वर्णन है।^२ किन्तु माँग चाहे मुगल भाइयों के समर्पण की रही हो या उससे अधिक इम्मीर ने उसे ठुकरा दी। एसामी के शब्दों में ‘इम्मीर ने उत्तर दिया कि जो मेरी शरण में आ चुका है मैं उसे किसी प्रकार हानि नहीं पहुँचा सकता, चाहे प्रत्येक दिशा से इस किले पर अधिकार जमाने के लिए तुर्क एकत्रित क्यों न हो जाय” और लिख भेजा कि ‘यदि तू युद्ध करना चाहता है तो मैं तैयार हूँ।’^३ अन्य काव्यों में कथित माँगों के अनुष्टुप् उत्तर हैं।

खज्जी सेनापतियों ने उत्तर मिलते ही गट को जा घेरा। किन्तु दुर्ग जीनना कोई खेल तो न था। इम्मीर राजनीतिज्ञ रहा हो या न रहा हो, उसमें गौर्य और युद्धकौशल की कमी न थी। उसने दुर्ग की रक्षा का कार्य समुचित रूपसे वांट दिया। पहरा लग गया। ढेंकुलियाँ दिखाई

१—वही, ११, २२।

२—ऊपर देखें।

३—फुतूहुस्मलातीन का अवनरण देखें।

दान लगीं ।^१ कड़ाहों में रालसे मिला तप्त तैल प्रतिघटा के जलाने के लिये तैयार था । दोनों ओरसे राण छूटने लगे । आग्नेयघाणों की भी वर्षा हुई । दोनों ओर भरथ यंत्रों से गोले छूटने लगे । टिड्डुलियाँ भी मानों अपने हाथआगे बढ़ाकर गोले फेंकती हुई आनन्द लेने लगीं । राल से युक्त तेलमें भिगाकर जलत हुए घुन्त यचना ने दुग में फेंके । कइने दुग पर चन्ने का और कच्चे मुरग लगाने का प्रयत्न किया । उनके नालियाँ से छूट घाणों ने भी पर्याप्त हानि की । किंतु हम्मीर के सैनिकों ने इन सब का तान महीना तक प्रतिकार किया ।^२ बरनीने लिखा है कि एक दिन नुसरखान किले के निकट पाशेव बंधवानमें तथा गरगच लगवाने में सल्लीन था । किले के अन्दरसे मगरवा पत्थर फेंक जा रहे थे । अचानक एक पत्थर नुसरखानके लगा जिससे वह घायल हो गया । दो तान दिन उपरांत उसका मृत्यु हो गई ।^३ अब हम्मीर विषयक ग्रन्थों में भी इस घटनाका उल्लेख है । हम्मीर महाकाव्य के अनुसार दुग का एक गोला मुसल्मानों के एक गाजा में भिड़ गया और उससे उड़कर उछलत हुए एक टुकड़े से निमुलेखान मर गया (५११००) । हम्मीरायण के अनुसार 'निसरखान' नवलखि दरवाजा के पास मारा गया ।^४ इनमें हम्मीर महाकाव्य और बरनी के कथना में कुछ विशेष विरोध नहीं है ।

१—राजस्थाना का र्था में यह शब्द टेकला और हम्मीर महाकाव्य में टिड्डुला के रूप में वर्तमान है । इसका रूप वर्तमान ढका का सा था (११७१८९) ।

२—११७५ ९९

—उपर तारीखे फिरोजशाहा का अवतरण देखें ।

४—नवलखि माया निमरखान (१७२) । इसका यह अर्थ करना कि निमरखान ने जौलाख रात्रियों को मारा मरधा अगुड है ।

नुसरतखान की मृत्यु से अलाउद्दीन को निश्चय हो गया कि उसका स्वयं रणथम्भोर पहुँचना अत्यन्त आवश्यक था। एसामी ने नुसरतखाँ की मृत्यु का विना वर्णन किए ही लिखा है कि उलुगखाँ ने सुल्तान ने सहायता की प्रार्थना की।^१ बरनीके कथनानुसार ज्योंही अलाउद्दीन को नुसरतखाँ की मृत्यु का समाचार मिला, वह दिल्ली से रणथम्भोर के लिए रवाना हो गया। यही बात हमें हम्मीर महाकाव्य से भी ज्ञात है।

अलाउद्दीन की यात्रा निरापद सिद्ध न हुई। तिलपत के निकट उसके भतीजे अकतखाँ ने उसे कत्ल कर 'राज्य प्राप्त' करने का प्रयत्न किया, किन्तु अलाउद्दीन के सौभाग्य और अकतखाँ की मूर्खता से यह प्रयत्न सफल न हुआ। जब सुल्तान घेरा डाले पड़ा था अवग्र और वदायू में उसके भानजों ने विद्रोह किये और दिल्ली में मौला हाजी ने। किन्तु अलाउद्दीन रणथम्भोर के सामने से न हटा।^२ यह दो हठीलो का युद्ध था। अन्तर केवल इतना ही था कि एक सीधा वीरव्रती राजपूत था, और दूसरा भारत का सबसे कुटिल शासक जिसने अपने चचा तक को राज्य के लिए मार डाला, और जो राज्यवृद्धि के लिए कुटिल से कुटिल उपायों का अवलम्बन करने के लिए उद्यत था।

हम्मीर महाकाव्य में लिखा है कि जब अलाउद्दीन रणथम्भोर पहुँचा तो हम्मीर ने उसका अच्छा स्वागत किया ? दुर्ग के ऊपर प्रतिपद पर शूर्प बंधवा कर उसने यह द्योतिन किया कि सुल्तान के आने से

१—देखें फुतूहुस्सलातोन का अवतरण।

२—तारीखे फ़िरोजशाही का अवतरण देखें।

उसके कायमार में उतनी ही वृद्धि हुई थी जितनी अनेक वस्तुओं से भरे शकट में कुछ शूप रखने में।^१ किन्तु और कुछ हुआ या न हुआ युद्ध में एक नवान नीग्रता आ गई। रात दिन युद्ध होने लगा। प्रत्येक दिशा में चलते फिरते ऊँचे ऊँचे मधान (गरगच) तैयार किए गए। गाहा सेना जो काइ युक्ति करता राय उसकी काट कर देता।^२ पहाड़ के निकट सुरग लगाइ और खाइ का पूलिया और लकड़ी के टुकड़ा से भर दिया। जब ये दोनों साधन तैयार हो गए तो अलाउद्दीन ने हमले की आज्ञा दी। किन्तु चौहानों ने खाइ की लकड़िया अग्नि गाला - जला ढाली और लाक्षायुक्त तेल सुरग में पेंका जिससे सुरग में घुस सैनिक भुन गए और वह सुरग उड़ों के शरीरों से भर गई।^३ इस प्रकार एक वष बीत गया और दुग को कोई हानि न पहुँची।^४ अमार खुसरो ने यही बात अपनी काव्यमयी शैली में कही है 'हिन्दुओं ने किले की दसो भट्टारियो में आग लगा दी, किन्तु अभी तक मुसल्मानों

१—सग १०, १४।

२—देखें फुतूहससलतान का अवनरण और हम्मीरमहाकाव्य, सर्ग

१, लाक ४८

३—हम्मीरमहाकाव्य, १०, ८७।

४—देखें फुतूहससलतान का अवनरण।

इसी के आस पास हम्मीर काव्या में ननिका धारादेशी के मरण की कथा है। इसके लिए पाठक वग हम्मीर काव्य और हम्मारायण का तुलनात्मक विवेचन देखें। इतिहास की दृष्टि से इस घटना का—चाहे यह सत्य हो या असत्य—विशेष महत्व नहीं है।

के पान इस अग्नि को बुझाने के लिए कोई सामग्री एकत्रित न हुई थी (खजाइनुलफतुह)” ।

अब अलाउद्दीन को एक नई युक्ति सूझी । उनसे समस्त सैनिकों को आदेश दिया कि वे चमड़े और कपड़े के थैले बनाकर उनमें मिट्टी भर दें और उन थैलों द्वारा खाई को पाट दें ।^१ हर एक ने अपना थैला भरा और खाई में फेंका जिमका नाम रिण था । इस तरह खाई को पाट कर अलाउद्दीन ने उस पर पागेव और गरगच तैयार करवाए । किले पर आक्रमण के साधन अन्ततः तैयार हो गए ।^२ इसी बात को इस्मीरायण ने मनोरञ्जक रूप में कहा है:—

“पहिलउ रिण पूरुड लाकडे, ठेई आग वात्यड निय मडे ।

कटक महुनड हुयड फुरमाण, वेळ नखाड तिणि ठाणि ॥ १९८ ॥

सुथण तणी वांबड पोटली, नीर मलिक वेळ आणड मरी ।

न करड कोई कृम गडवाल, वेळ आणइ सहि पोटली ॥ १९९ ॥

छटइ मासि सपूरण मखड, ते देखि लोक मनि डखड ।

कोसीसइ जाड पहुता हाथ, तुरका तणी समीछड वाच्छ ॥ २०० ॥

राय इम्मीर चिंतातुर हूयड, रिण पूरुचड दुर्ग द्विव गयड ॥ २०१ ॥

पहले रिण को उन्होंने लकड़ियों से भरा, किन्तु मटों ने उन्हें आग से जला डाला । तब मरा सेना को आज्ञा हुई कि वे उस स्थान पर बाल डालें । अपनी सूझों की पोटलिया बनाकर भीर और मलिक उन्हें भर-भर कर लाने लगे । गडवालों से भवने युद्ध करना छोड़ दिया । सब सिर्फ

१ फुतूहुस्सलातीन का अवतरण देखें ।

२. तारीखेफरिस्ता का अवतरण देखें ।

पाटलियाँ में बालू लाय । छत्रे महान बह सय भर गया । तब यह रखकर सब लाग मन में डर । कगूरी तक श्रय तुकों के हाथ पहुँचन गग । तुकों का डण्ड अब पूरी होगी । राय हम्मार का अब यह चिन्ता हुई । रिण भर गन् है । अब दुग हाथ से गया ।

हम्मीरायण ने इस विपद से बचने का एक अघिर्दक्क करण दिया है । ' गढ़के दक्कता ने परमाव जानकर चाचा लाकर हम्मार को दा जब राय ने छाटा फाटक खाला ना त्रेव माया से उषा समय पाना बहा । पाना से बालू बह गया और वह फाल फिर खाली हो गया (२०२) । किन्तु वास्तविक प्रतिकार तो दुगस्थ वीरों का साहस था । बरनी ने लिखा है कि जब खाइ को भरकर पाणेब और गरगच लगाए गए तो किले बाला ने मगरबी पत्थरों से पाशर्बा को हानि पहुँचानी प्रारम्भ कर दी । व किले क'उपर ने आग पेंकते थे और लोग दोनों ओर से मारे जाते थे ।' खजाइनुल फुतूह ने भी लिखा है कि रजब मे जीकाद (माच से जुलाई) तक मुभलमानी सेना किले को घेरे रही । किले ने बाणा की वर्षा होने के कारण प भी मी न टह सकते थे । इस कारण दाढी बाज मा वहाँ तक न पहुँच सकते थे । २

उनके बाद दुग के जाने की कथा हमें विभिन्न रूपा में प्राप्त है । गसामी के कथनानुसार किले पर आक्रमण का भाग तैयार होने पर भी दो तीन सप्ताह तक घोर युद्ध हुआ रहा । उसके बाद हम्मीर न जोहर किया और किले से मुहम्मदशाह एव कामरू के साथ निकल कर युद्ध करता हुआ

१ तारीखेफिरोजशाही का ब्यवरण देखें ।

२. खजाइनुलफुतूह का ब्यवरण देखें ।

मारा गया ।^१ खजाइनुल फ़तूह ने किले में दुर्भिक्ष को उमका कारण बताया है । "किले में अकाल पड़ गया । एक दाना चावल दो दाना मोना ट्रेकर भी नहीं प्राप्त हो सकता था," और चावलभी की तरंग में शिव मारा है कि जब जौहर कर हम्मीर अपने दो एक भागियों के साथ पाठोब तक पहुँचना तो उसे मगा दिया गया" ।^२ दुर्ग का पतन ३ कीमाद ७०० हिज्री (१० जुलाई, १३०१) के दिन हुआ । बरनी के अनुसार 'सुल्तान अलाउद्दीन ने हाजी मौला के विद्रोह के उपरान्त बड़े परिश्रम तथा रक्तपात के पश्चात् रणवैभोग के किले पर अपना अधिकार जमा लिया । राय हम्मीरदेव तथा उन सुम्मानों को जो कि गुजरत के विद्रोह के उपरान्त भाग मर उमकी शरण में पहुँच गए थे दत्ता जग दी ।"^३ फरिश्ता के अधिनामर जब रिण में फँकी हुई बोरियों की ऊँचाई जब गढ़ को टेचाई तक पहुँच गये तो घिरे हुए आदमियों को हराकर सुमलमानों ने दुर्ग ले लिया । हम्मीरदेव अपने जातिभाइयों के साथ मारा गया ।^४

हिन्दू ऐतिह्य साधनों में से हम्मीरमहाकाव्य के अनुसार वास्तव में दुर्ग में दुर्भिक्ष न था, किन्तु कोठारी जाहड ने इस इच्छा से कि सन्धि हो जाय, झूठ मूठ यह सूचना दी कि अन्न नहीं है । तब रतिपाल अलाउद्दीन से जा मिला । जत्रु-शिविर से लौटने पर हम्मीर को और मडकाने के लिए उसने कहा "सुल्तान आपकी पुत्री को मांगता है और कहता है कि यदि

१ फ़तूह-उस्सलतान का अवतरण देखें ।

२ खजाइनुल फ़तूह का अवतरण देखें ।

३ तारीखेफ़िरोजसाही का अवतरण देखें ।

४. तारीखेफरिश्ता का अवतरण देखें ।

उम मूल ने पुत्री न दी तो मैं उसकीपत्नियाँ तक को छान लूँगा ।' रानियों के कहने में देवाज्ञादेशी भात्मसमर्पण के लिए तैयार भी हुई, किंतु हम्मीर के लिए यह अपमान असह्य और अस्वीकरणीय था । दुग का शासक बनने का इच्छुक रतिपाल तो चाहता ही यह था । उसने रणमल्ल का भी राजा के विरुद्ध कर दिया । दोनों गढ़ से उतरकर शत्रु से जा मिले । इस सावत्रिक क्रान्तियों को देखकर हम्मीर ने मुहम्मदशाह का कहीं सुरक्षित स्थान पर जान के लिए कहा । मुहम्मदशाह ने किस प्रकार अपने कुटुम्ब का अन्त कर यह धीमत्स दृश्य हम्मीर को दिखाया इसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं (देखें हम्मीर महाकाव्य का सार) । हम्मीर ने अब जोहर किया । उसकी पुत्री और रानियाँ जोहर की चिन्ता में जल मरीं । उसने तमाम धन पचासर मं फिकवा दिया । जाजा ने हाथा मार डाले । उसके बाद जाजा को अभिषिक्त कर हम्मीर अपने साधियों सहित बाहर निकला । भयकर युद्ध करने के बाद उसने स्वयं अपना गला काट डाला ।

सुजन चरित में जोहर और हम्मीर के अन्तिम युद्ध का वर्णन है । साथ ही उसमें यह स्पष्ट संकेत है कि जनता दीर्घकालीन गढ़रोध से ऊब चला धी और बहुत से लोग शत्रु से जा मिले थे ।^१ पुरष परीक्षा में भी रायमल्ल और रामपाल (रतिपाल और रणमल्ल) का विद्रोह वर्णित है । साथ ही यह भी उसने लिखा है कि व अदीनराज (भलाउदीन) से मिले और उनसे कहा 'अदीनराज आपको कहीं न जाना चाहिये । दुग में अकाल पड़ गया है । हम दोनों दुग के ममज्ञ हैं । कल या परसो आपको

१ देखें हम्मीर महाकाव्य सग १३ ९९ २२५

२ ऊपर दिया सुजन चरित का सार देखें ।

दुर्ग दिलवा देंगे ।” इस पर हम्मीर ने जाजा और मुहम्मदशाह आदि को अन्यत्र किसी सुरक्षित स्थान में पहुँचाने का वचन दिया । किन्तु वे इसके लिए राजी न हुए ।

“मर्दरंगीकृतं युद्ध, स्त्रीभिरिष्टो हुताशनः ।

राजो हम्मीरदेवस्य परार्थं जीवमुज्ज्वतः ॥

“जब राजा हम्मीरदेव दूसरों के लिए प्राण देने के लिए उद्यत हुआ तो थोद्धाथों ने युद्ध अङ्गीकृत किया, स्त्रियों ने अग्नि ।” राजा युद्ध में लडना हुआ मारा गया ।^१

हम्मीरायण में रणमह और रतिपाल के अलाउद्दीन से मिलने, कम्मूठ अन्नाभाव की कथा फैलाने, जौहर और हम्मीर के अग्निम युद्ध आदि का वर्णन है ।^२ मह के चौदहवें पद्य में सम्भवतः अलाउद्दीन के मुरग लगा कर दुर्ग का एक भाग तोडने का उल्लेख है । साथ ही इन कवित्तों में रणमह के द्रोह, जाजा के अद्वितीय युद्ध और जौहर का भी निर्देश है ।^३

इन सब अवतरणों के तुलन से कुछ बातें स्पष्ट हैं ।

१ घेरे से दुर्ग की स्थिति विषम हो चली थी, तो भी हम्मीर ने लगातार युद्ध किया और मुसलमानों को गरगचों तथा पाशेवों के प्रयोग से गढ़ न लेने दिया ।

२. दुर्ग में दुर्भिक्ष की स्थिति वास्तव में उत्पन्न हो गई थी । उबर वरनी आदि के कथनानुसार मुस्लिम फौज घेरे से तग हो चुकी थी । अला-

१. देखें हम्मीरायण, परिशिष्ट ३ ।

२. हम्मीरायण की कथा का सार देखें ।

३. पद्यों का सार या हम्मीरायण के परिशिष्ट २ में ये कवित्त देखें ।

उद्दान का आन्तरिक स्थिति का पता न चलता तो दुर्गस्थ लोगों को आशा थी कि सुल्तान घेरा उठा लेगा ।

३ इस स्थिति में सुल्तान ने कूटनीति का प्रयोग किया । उसने रतिपाल, रणमल्ल आदि को फोड़ लिया । इसके फलस्वरूप उसे दुर्ग का आन्तरिक हाल ही ज्ञान न हुआ बहुत से दुर्गस्थ सैनिक भी उससे आ मिले ।

४ हम्मार ने जौहर की अग्नि में अपने कुटुम्ब को भरमसात् कर दुर्ग के द्वार खाल दिए और युद्ध के बाद अपने हाथों ही अपने प्राण दिए ।

५ दुर्ग का पतन १० जुलाई, १३०१ के दिन हुआ ।

हम्मीर के अन्तिम युद्ध का पूरा वर्णन हिन्दू कार्या में ही है । हम्मीर महाकाय के अनुमार उसके साथ में नौ वीर थे । धारम सिंह, टाक गह्ना धर राजद चारों मुगल भाई और क्षेत्रसिंह परमार । धीरम के दिवगत और मुहम्मदशाह के मूर्च्छित होने पर हम्मीर आग बढ़ा । अन्तत बहुत घायल हो जाने पर उसने, इस इच्छा से कि वह बन्दी न हो स्वयं अपना कण्ठच्छेद किया ।^१ हम्मीरायण की कथा हम ऊपर दे चुके हैं । उसके अनुसार भी हम्मार ने स्वयं अपना गला काटा था । हम्मीर महाकाय के अनुसार हम्मीर की मृत्यु के बाद भी जाजा ने दो दिन तक दुर्ग के लिए युद्ध किया ।^२ मुहम्मदशाह के व्यवहार की नयचन्द और फरिश्ता दोनों ने प्रशंसा की है । सुल्तान के यह पूछने पर कि यदि वह

१ मग १३ १९९ २०५

२ मग १४ १६ जाजा के लिए इसी प्रस्तावना में तद्विषयक विमश और इण्डियन 'हिस्टारिकल क्वार्टरली' १९४९ पृष्ठ २९२ २९५ पर हमारा जाजा पर लेख पृ० ।

उसकी भरहम-पट्टी करवाए तो भविष्य में वह उससे किस तरह का व्यवहार करेगा, इस निर्भीक योद्धा ने उत्तर दिया था कि 'धैसा ही जैसा मुत्तान ने हम्मीर के प्रति किया है ।' अलाउद्दीन ने उने हाथी के पैरों से कुचलवा डाला, किन्तु उसे अच्छी तरह दफनाने की आज्ञा दी । रतिपाल और रणमल्ल को बड़ी बड़ी आशाएं थीं । बादशाह ने उनकी खाल निकलवा कर स्वामिद्रोह का फल चखाया ।^१ स्वामिद्रोह को पनपने देना उमरु नीति के विरुद्ध था ।

हम्मीर को हम सर्वगुणसम्पन्न तो नहीं मान सकते । उनमें कुछ जल्दवाजी थी । अमात्यों के चुनाव में भी उसने समय समय पर गलतियाँ कीं उसके शासन प्रबन्ध में भी हम कुछ दोष देख सकते हैं । किन्तु जिस लगन से हिन्दू समाज ने उसके नाम को अमर रखा है उसी से सिद्ध है कि वह अनेक भारतीय आदर्शों का प्रतीक रहा है । विद्यापतिने उसे दयावीर के रूप में देखा । 'पद्म भाषा-कविचक्र-शक्र' और 'प्रामाणिक्रात्रेसर' राघव-देव^३ जैसे विद्वानों के उसकी सभा में उपस्थित होने से यह भी सिद्ध है कि वह वैदुष्य-प्रिय था । कावलजी प्रशस्तिका रचयिता विद्यादित्य हम्मीर का पौराणिक और विश्वरूप उसका पुरोहित था । उसके कोटिमखों में सहस्रों विद्वान् ब्राह्मणों का पूजन भी हुआ होगा । हम्मीर उस चाहमान कुल का सुयोग्य प्रतिनिधि भी था जिसका दण्ड गो और वृष (धर्म) की

१. हम्मीर महाकाव्य, १४ २०

२ वही, १४. २१.

३. वही, १४. २३.

रक्षा में प्रयुक्त था ।^१ और उसका यह धम सकीणायक न था । अबुद पर उसने ऋषभदेव का पूजन किया । छ' दर्शनों की वह प्रतिपद पूजा करना (हम्मीर महाकाव्य, १४, २) । "कण ने कवच, शिवि ने मांस, बलि ने पृथ्वी, जीमूतवाहन ने आधा शरीर दिया । किन्तु उस हम्मीरदेव की, जिसने एक क्षण में शरणागत महिमासाहि (मुहम्मद शाह) के निमित्त अपना शरीर, पुत्र, कलत्रादि को कथाशेष कर दिया, कौन तुलना कर सकता है ?^२ हठ के लिए हम्मीर प्रसिद्ध हो चुका है —

सिंह सवन सत्पुरुष वचन कदली फलन इक्ष्वार ।

त्रिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी वार ॥

किन्तु इससे भी अधिक प्रसिद्धि किसी समय उसके शरणदान की रही होगी । इतिहासकार एसामी ने हम्मीर की इसी बात पर विशेष ध्यान दिया है नयवट्ट और विद्यापति ने उसके शौर्य के साथ उसकी दया वीरता की प्रशंसा की है । हम्मीरायण में उसके शरणागत रथा और स्वामिमान को लक्षित कर 'भाण्डउ' व्यास नाह माट से कहलाना है —

इय चहुवाण हमीर दे सरणाई रखपाल ।

भलावदीन तुम्ह आगलउ मोटउ मूठ भूपाल ॥ ०७ ॥

भान न मैल्यउ आपणउ, नमी न तीध्यउ केम

नाम हुवउ अविचल मही, चर सूर दुय जा (जे)

म ॥ ३०८ ॥

१ देखें १३४५ के गिलालेखका श्लोक ४ हम्मीर महाकाव्य १४ २ रणयम्मीर हाथ आते हो सुसमाना ने वहाँ के बाहडंवरदि मदिरो को नष्ट कर दिया ।

२ हम्मीर महाकाव्य, १४, १७ ।

‘माण्डल’ व्यास का ज्थन ठीक ही है कि इन्ही आदमों का प्रतीक होने के कारण हम्मीर का नाम मृग, और चन्द्र की तरह अविच्छन्न है । जब तक भारतीय जनता के हृदय में उन आदमों का मान है वह हम्मीर के चरित का गान करती रहेगी । और हम्मीर का यशः शरीर अमर रहेगा । पटिये नयचन्द्र की यह उक्ति :

लोकौ मूढतया प्रजन्वतुतमा यच्चाहमानः प्रभु.

श्री हम्मीर—नरेश्वरः स्वरमगाट् विश्वक साधारण ।

तत्त्वज्ञत्वसुपेत्य किञ्चन वयं ब्रूमस्तमां न क्षिर्णौ ।

जीवन्नेव विलोपयते प्रतिपट् नैस्तर्निर्जर्विक्रमेः ॥ १४-१५ ॥

हम्मीरायण की भूमिका विस्तृत हो गई है, इसमें इतिहास सम्बन्धी उद्धरणों के साथ ही देने का प्रयत्न किया है जिससे पाठक स्वयं हम्मीर के चरित्र को ग्रथित कर उसके सत्यात्म्य पक्ष की जांच कर सकें । इसमें कई अर्थों के विवेचन और स्पष्टीकरण में श्री भंवरलालजी के सुझावों के लिये मैं अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ ।

नवीन वसन्त
डे ४११ कृष्णनगर
दिल्ली-३१

{

दशरथ ज्ञानी

व्यास भाडा कृत

ह म्मी रा य ण

— ❁ —

॥ चउपई ॥

पहिलउ पणमउ सारत् पाई, कर जोडी हु विनवउ माई,
कथा करता मो मति देहि, अलिय अमर अथिक् टालेहि, १
सिधि बुधि नायक गणपति नमउ, करिमु चरित महियलि अभिनवउ,
तेतीस कोडि तणउ पडिहार, पय प्रणमी हु करउ जुहार, २
वावन वीर तणा लीजइ नाम, तास प्रसाति सीकइ सवि काम,
समरउ चउसठि चढी सत्ता, तिणी तूठी तूइ विघन नही एकत्ता, ३
कासिपराय तणउ पुत्र भाण, श्री सूरिज प्रणमउ सुविहाण,
हम्मीरायण अति मुरसाल, 'भाड' गायो चरिय सुविसाल, ४
राय हमीर तणी चउपई, सांभलिज्यो एक मनह वई,
रणथभवरि जे विग्रह हुवा, राय चहुयाण तहां मृमीया, ५
रणथभवर गढ मेर समाण, राज करइ हमीरदे चिहुयाण,
पुहवी इद्र कहीजइ सोइ, इद्र सभा हम्मीरा होइ, ६
तिणि नयरी ना विसमा घाट, वावि सरोवर नय बलि हाट,
गिरि गह्य त्रिद्व्य आराम, रूअडा तिणि नयरी अभिराम, ७

१ देउ, अरुवर, २ नमु

४ हमीरायण, गयो धरिव सुवोसात

५ चउपही ६ हमीरा

वाड़ी वृक्ष्य नहीं कामणा, अंब जंवीरज केतकि तणा.
 जाई वेडल चपक महमहड, देखी नगर लोक गहगहड, ८
 कोटि जिसो हुवड इड विमाण, च्यारि पोलि तिणि कोटि प्रधान,
 पोलि चडि नवलखीज होड, चउरामी चहुटा नितु जोर्ट, ९
 चाण्या वभण निवसड घणा, लाख एक छट हाटा तणा,
 वर्णावर्ण लोक तिहं वहु, जाति प्रजा निवसड छड सह; १०
 सिखरवड दग सहम प्रसाद, ऊंचा सुरगिरि न्युं लड वाद,
 सोवन कलस दड मलहलड, ऊपरि थकी धजा लह्लहड, ११
 दानसाल तिणि नगरी घणी, कोटीध्वज विवहास्या तणी,
 वंभण वेद भणड सुविचार, वंदीजण नितु करै कड वार, १२
 तिणि नयरी उल्लव अपार, मंगल च्यारि दीयड वर नारि.
 जती व्रती तिह निवसड घणा, तपी तपोधन नहि कामणा, १३
 गड मड मंदिर पोलि पगार, वाम नयर नव जोयण वार,
 चंपक वरण सरीसा गात्र, धारु वारु वे छड पात्र; १४
 घणउं वखाण किसु हिव करड, अलकावती नी उपम धरड,
 तिणि नयरी विलास अपार, वेस वसड सहस दस वार, १६
 त्रैलोक्यमंदिर राय आवास, सीला ऊन्हा धवलहर पासि,
 भूखी पोलि अछड तिणि कोटे, रिण नइथंभ विचड छड त्रोटि, १७
 चहुयाण जयतिगद पुत्र, राज करै सहु आणी सूत्र,
 बालड राजा वइठड राजु, बंधव वीरमदे जुवराजु, १८

सवा लाख साहण लधणी, उलग करड मोडोधा वणी,
 गयवर धरि गुडड मड पच, घोडा सहस एक मड पच, १६
 सवा लाख साहण दल मिलड, त्रिणि लाख पायल दल मिलड,
 मात छत्र धगघड मीस, सवालाल मभरि नर डव, २०
 जे कुलवत भला लड मूर, तिहनड चड ग्रास तणा सवि पूर,
 वेला आई मारड काम, तिहनड नर नहीं अपमान, २१
 ते नवि कीणही करड जुहार, धरि गडठा गार्डे भडार,
 भक्त माहि ते न गिणउ आढ, फरतारा स्यु माटड वाट, २२
 गिण सारसर पाग्वर धरि घणी, सवि मामहणी सुहडा तणी,
 अगा टोप रिगात्रलि तणा, पार न लाभड धरि छड घणा, २३
 भ्रमहणी कीधा कोठार, धान तणा मोटा जवार,
 घीव तेल री पायडि तिमी, जीमता नहीं कने नृटिसी, २४
 मोटा राय तणी कृयरी, परणी पांचसइ अतेउरी,
 रूपि करी नड अति अभिराम, पटराणी हामलद नाम, २५
 चरंगणा सहस डक जाणि, फल्प तणी तिमी हुड ग्राणि,
 नासी मन्स परमै परड, सवि छारप तिनि मारड, २६
 द्रव्य तणी नहा रामणा, सहस पर मण मोना तणा,
 चत्तर कोडि गरय धरि लोच, पावर पार न जाणड काड, २७
 मूय यमि माहि चड नमान, रणमल रायपाल वेऊ प्रधान,
 अरगी बुढी त्यानड ग्रास, घग्व परिवार अठट तिनि पामि, २८

अति दाता सरणाई सोई, रिणि अभंग सो राजा होई,
 न करड कोई अन्याई रीति, राज करड पूरवली रीति, २६
 सूर वीर बहुत गुण धीर, वह्य वीरमदे राय हमीर,
 खत्रीवट खड्ग तण्ड परमाणि, राज करड रणथंभि चहुवाण. ३०
 मोटउ राड राजि विधि बहु, तिणि थानकि निवसड छड महु
 करड लील लोकातिहा सदा, तिणि नगरी दुख नहीं एकदा. ३१
 चतुरंग लिखिमी निवसड तिहा, दुख नही तिहि नयरी किहा
 डंड डोर नवि लीजड माल, तिणि नयरी दुख नहीं एक रसाल. ३२
 तिणि अवसरि उलगाणा वेड, रिणथंभोरि तिह पहुता वेड,
 महिमासाहि गाभरु मीरि, ते आव्या संभल्या हमीरि. ३३
 तिहि मीरा नउ वडो प्रमाण, चूकड नही ते मेल्हड वाण,
 तिहरा प्राक्रम पार को लहड, खडग छत्रीसी नी उपम वहड. ३४
 सवा लाखरी सिगणि धरड, जोड मोल कुणही नवि करड,
 तीर लहड सहम दीनार, मेल्हड तीर जाड घर वारि, ३५
 सरि लागाड मरड जड कोई, सर ना मोल परोजन होई,
 चाडल हुड लहँ सर सोई, पछि पीडा तिणि पाटउ होई, ३६
 वेऊ मूर नड वेऊ रणवीर, अति दाता महिमासाह मीर,
 चाडी मांहि उतारा कीया, खाण खाय ते समुता हृआ. ३७
 गढ ऊपरि मोकली अरदासि, वेऊ मीर आव्या तुम्ह पासि,
 मोटो राव सुणी रणथंभि, म्हे आव्या थारड उठंभि, ३८

३० खत्रीवट

३२ कदा (लिहा)

३३ वेड मीर गाभरु

३६ घाईल

३७ हमीर, ऊतारा

मनमाहि चमक्य राउ चहुवाण, भला मूर वेड पठाण,
ते लेवा मोकत्या प्रधान, राय न्मीर नीयद न्हु मान, ३६
चरणे लागि रहा सिरनामि, दूट ग्राह उठाव्या ताम,
तुम्ह प्राणम अम्हे सभल्या, भलु हुत्रउ ते त्रमण मिल्या, ४०

॥ दूहा ॥

गाय कहड कारणि क्वणि, आन्या ण्णइ ठामि,
कइ सुरताणि जि मोकल्या, कइ तुम्हि घर कड कामि, ४१
न सुरताणि नि मोकल्या, न म्हे घर कड कामि,
कटक विणास घणउ करी, मरणउ आव्या मामि, ४२
घणा देस अम्हे फिया, राखण कोइ न समत्य,
सवालार सभरि धणी, भजि अम्हारी अवत्य, ४३
अलुरगान जि मगीयउ, अम्ह तीरइ पचाध,
घणा त्रिवस म्हे उलग्या, जेऊ न दीधउ आध, ४४

॥ चउपई ॥

अम्हनउ मान हुतउ ण्तलउ, घणि चडठा लहता कणहलउ,
पातिसाह नउ करता सगम, कटक उलगता अलुरगान, ४५
इणि वचनि न्हविया म्नामि, कालु मलिङ्ग माख्यउ तिणि ठामि,
कटक मांहि कुलाहल कीया, जग त्रयत उहा आचीया, ४६
अम्ह अपराध महु इम फहीया रात्रि रात्रि टम त्रोलउ मीया,
सरणाई तु कहियइ लोन, रात्रि अम्हा कि त्रिग्न करि फोक ४७
अम्हे उलगिम्यां चारा पाय, किसी विमासणि म करिसि गाय,
मन माहि कृड कपट म म जाणि, अम्ह तुम्ह साखि त्रिउ गृहमाण, ४८

ए वृतात राय समली. मनि हरग्यउ संभरिनउ धणी,
 त्याह नड वाह वीयउ हन्मीर, महिमासाह तु म्हारउ वीर; ४६
 अतर क्रिसी वात मन करउ. दुणही थकी रखे तुम्ह टरउ.
 तिहनुड राय द्वियउ थर ठाम. ग्रान घणउ चलि अदिकउ मान; ४७

। वस्तु ।

राय पभणइ राय पभणउ सुणउ तुन्ति मीर
 महिमासाह गाभर तुम्हे सरणउ आव्या अम्हारउ.
 वाह बोल तिहनुड द्वियउ ग्रान घणु नित को दिवाड़उ,
 कवि 'भाडउ' कहइ इमिउं हरग्य धरी मन माहि.
 गिणथंभुर वसिया जि ते मीर नड महिमासाहि. ४८

॥ चउपई ॥

विहु लाख सदा ते लहइ, बीजा ग्रास पार को लहइ;
 सूरा नइ छइ सगलउ ठाम; विण साहस नवि सीभइ काम; ५२
 जेह वात लोके संभली, गयउ महाजन राउल गुनि मिली,
 पातल पाल्हण जाल्ह(ण) मिल्या, कोल्ह वील्हण देल्हणभिल्या; ५३
 तोल्हण मोल्हण लियाहसी. आसइ पासइ नड पदमसी,
 धाधउ धूधउ नई धरमसी, वीसल वीरम नइ तेजसी. ५४
 वस्तु वीरम भणइ इम जांडि, प्रथमउ पूनउ पीथल तेडि,
 वीरु धीरु खेतल खीम. भाडउ सादउ डाहउ भीम; ५५

४६ हमीर ५० कीसी, ५१ वस्या ५२ जे ५५ पुनउ

वेलउ मेळउ वेलउ साह, नयणउ नरवद नरसी साह,
 सरणाई अनरथ नउ मूल, राख्या होसी माया सूल, ५६
 महाजन समभाई राई, कद जि मिलिया करउ उपाई,
 आसण वयसण दीधा मान, तिहा दिवाडड फूल फल पान, ५७
 नगर लोक महाजन सह, किणि कारणि मिलि आयउ ग्रह,
 इणि नगरी दुख नहीं कुणइ, लील करण चहुआणा तणइ, ५८
 त क्रीधउ अपरीत्रथउ काम, मीरा नइ वलि दीधा गाम,
 तीली थका जे आख्या मीर, राखण जुगतउ नहीं हमीर, ५९

॥ दूहा ॥

अलावडीन तणइ घरइ, कीधउ एउ विणास,
 तिणि राखण जुगतउ नहीं, इम वोल्इ 'भाटउ' न्यास, ६०
 विप वेली उगतडी, नहे न रूटी जे (होइ),
 इणिवेली जे फल लागिस्यइ, देखणउ सहवइ कोइ, ६१

॥ चउपई ॥

इणि वेली जे फल लागिसइ, थोडा दिन माहि ते दीसिसइ,
 तिहरा किस्ता हुस्यइ परिपाक, स्वादि जिस्था हुस्यइ ते राख, ६२
 तिय कयनइ राई कानि नविणीयउ, सीख देई महाजन धरिगयउ,
 तेय पृठइ जे बाहर हुती, अल्लखान करइ वीनति, ६३
 रिणभोरि हमीरदे राउ, सरणे राख्या महिमासाह,
 तेह न मानइ कुणही आण, तेहना गढ नउ घणउ पराण, ६४

६२ लागिसी ६३ तय

अलुखानि कोप मनि धन्वड, मीर मलिक सहु माथड कन्वड,
 भला अपार नइ तेजी तुरी. त्रिहु लाम्बड पडीवाधरी; ६५
 चडड चडड भला जे मीर, ऊठड घोड़े वाहु जीण,
 पहिस्वा जरइ टोप जिण माल, घोड़े चड्या लेड करवाल्; ६६
 अलुखान चडिड जिणवार, देम माहि को न लहइ मार
 कटक तणी नही का वात, करमदी वीटी आधी राति; ६७
 हेडाऊ जाजड देवडड, घोडा ले आयु वीकणड,
 सोवति तियरी उतरी जिहा, तिसइ करमदी वीटी तिहा; ६८
 जाजड वाहर चड्यड जिणवार, पंच सहस लीधा तोपार,
 कटक विणास कीयड अति घणड, जोड प्राक्रम प्राहुणा तणड; ६९
 सोवति लेड जाजड गडि गयड, राय हम्मीर तणड भेटियड,
 राति तणड कहीयड विरतंत, जाजइ लीधड बहु चड वित; ७०
 अलुखान पासरणड कन्वड, हीरापुर घाटड उतख्यड;
 सुधि न लाधी कुणही गामि, छाडणि सूती वीटी खानि; ७१
 अलुखानि वंदि अति कीया, सहस चउरासी माणस लीया,
 वाली नगर ढाही अहिठाण, तिणि नयरी खान दिया मिलाण; ७२
 देस माहि भगाणड पड्यड, रणथंभवरि सह कोई डख्यड,
 हाटे वडठा हसइ वाणिया, वेलि तणा फल योवड सया [णिया] ७३
 देखी दल चमक्यड चउहाण, हम्मीरदे इम वोल्इ राण.
 तड हूंड जयतिगदे पूत, मारी असुर दल आणुं सूत; ७४

६५ अलुखानी, धरइ ७० हमीर, भेटियइ ७१ कीयड ७३ तरा

७४ हमीरदे, पुत्र, आशी

मुहड भला जे तेजी सूर, ते तेडाव्या राय हमीर,
 लहता भास अम्हारड घणा, हिव अतर तारुड आपणा ७५
 सहु मिल्यड पालड परिवार, सजा लाय मिलिया कूमार,
 बानिअ तणी नही कामणा, वाजड गोल सीरहली तणा, ७६
 मुभटे लीया सजल सजाह, त्या मुभटा मनि अति उन्दाह,
 घणा तीह लगु गमति रम्या, तुरक दस हेला निग्या, ७७
 गुड्या गयअर हयअर पागस्या, घणा तीह लगु राध्या चस्या
 जातीघत हुता तोपार, तारी पुठि हुना असवार, ७८
 महिमासाह गाभरु मीर, सायड ले उतरुड हमीर,
 रातीवाह कटक माहि दीयड, अलुखान नत्र भाजी गयड, ७९
 कटक घणड कीयो खराव, माख्या भीर मलिक मूलाना,
 देस के घणा माखारि पठाण, सहस बरीस लीया केकाण, ८०
 अलुखान जड भागो जाय, कीटी म्याग ति लूटी राय,
 रणधभवरि राधावड करड, ते मृगिय मनि हरस जि धरड, ८१
 अलुखान दस माहि गयड, कटक मरु गवटुड क्रियड,
 पातमाह नड गड पुकार, घणड कटरु माखड गुन्कार, ८२
 बीजा सहु मानड खारी आण, एक न मानड हमीरु चहुआण,
 जउरि न मानड खारी आण, पातमाणी खारी अग्रमाण, ८३
 ए पुकार पुणी सुग्याणि, आलमनाह नपय रहमाण,
 खुगड खुगड फरी मन माहि, ताडी हाथ घालड पतिमाह, ८४

७५ तेजि गुर ५२ गथा, कीयो

पुरहमाण तु खूद कार, आपि अलह आपि करतार;
आलमसाह तणड अवतारि, कलिजुगि अवतरीयो मोरारि, ८

॥ दूहा ॥

खुन घणउ सुरताण नउ, कीधउ महिमामाहि,
तड सरणाई ह्मीरदे, राख्या महिमासाह, ८६
रणथंभवर तणउ धणी, जेऊ न मानइ आण,
माभरि ड्यरइ वयसणइ, थारउ किसउ प्रमाण, ८७

॥ वरतु ॥

ताम असपति ताम असपति धरइ बहु कोप,
अलावदीन कहइ इस्युं सहू मीर वेगा हकारउ,
पातसाह फुरमाण दइ वेगि वेगि कोठी भराऊ,
ग्वान खोजा मलिकज अछइ तेइ म लाउ वार,
आलमसाह रणथंभ नइ वेगि हुवउ असवार; ८८

॥ दूहा ॥

मोडि मूछ वोलइं इसउ, लिखउ लिखउ फुरमाण,
सहू कटक मिलि आवियो, जे मानइ म्हारी आण; ८९
तिणि अवसरि अलावदीन, कीध प्रतगन्या ईस,
रणथंभवर लेइ करी, तउ हूं घरि आवीसु, ९०

॥ चउपई ॥

आलमसाह हुवउ असवार, जाणे गढ लेसी करतार,
 त्तियरा दल नवि लाभे पार, द्यायो मूर हुवउ घोरधार, ६१
 नीसाणे घान घण वत्या, पाजड ढोल ति पितलि गल्या,
 प्रबक टाक धुक अति घणा, रिण काहल लागइ वाजणा, ६२
 डीली एकउ चात्यु सुरताण, सेपनाग टलटलीया ताम,
 दुगर गुन्ड समुद्र कलहलड, त्रिभुवन कोलाहल उद्धलड, ६४
 इद्रामणि जाड लागी खेह, इद्र जीवड तिहा न्यान वरेणि,
 अलावन्नीन आपड सुरताण, रणधभवरि जाइ दीयउ पवाण, ६५
 लोक कइइ कुण करसी काम, इन्द्र तणउ सहु लेसी ठाम,
 असी गढ अलुरखान ज लीया, पीलड साहित्र कणि कोटनत्रिगया, ६६
 इय आगलि नवि माडइ कोई, माणस किसु देव जइ होई,
 रिणधभवर तणी कुण वात, आगलि मेर न हुइ काइसात, ६७
 चउन्ह सहस माता उम्मत्ता, ते गुडिया गयवर सजुत्ता,
 पाणीपथा भला तोपार, वार लाख मिलिया असवार, ६८
 मुहिमद मीर मोटा पठाण, वे उमटी आया सुरसाण,
 मुगल काफर ते अतिघणा, मलिक मीर भीया नह मणा, ६९
 सतर खान मिलिया तिणीवार, वहत्तरि ऊररा भला भूमार,
 पातसाह रा डीलज जिसा, तीयरा नाम कहु हिव किसा, १००
 काफर माफर जाफरखान, खोनी मोजी रोजी नाम,
 निसरतखान निकुज निरोज, ताजखान री जमली फोज, १०१

जिहर मलिक वीजुलीखान, सेख सरीसा मोटा नाम,
 अल्लू मल्लू चल्लू गऊ, घणा कटक म्यउ आव्या तेऊ, १०२
 माजी गालिम महिला खान, खूनी मुनी जानी नाम,
 सिंहदल मलिक हसवा हसेव, मालद नगदल अलख असेव; १०३
 हाजी कालू ऊंवरा वडा, पाहड प्रेम तिहारा वडा,
 स्रुवलिक रुकवदीन वेऊ, तनारखान फोज माहि तेऊ १०४
 अहमद महमद महवी कीया, आलफखान पद्धवाण ज हूवा;
 कौरउपरि कीधउ मुगीस, दाफर फिरडं फंर निसदीम, १०५
 राणो राणि हिंदु भिल्या घणा, दल आव्या देस देसह तणा,
 'भाडउ' कहड वर्णवउ किमउ, पानिसाह दल चक्रवर्ति जिमउ, १०६
 काली पाखर काला टोप, लोह तणा ते दीसड टोप.)
 घोडे चड्या ते आडध लेउ, जाणे जम ना सेवक तेउ; १०७
 कटक तणी गाढी संजती, पाच लाख चालड पालखी,
 राजवाहण वहिल चकडोल, धूजी धरा पडिउ हलोल; १०८
 भोथी भोई भील अति घणा, नूई सूनार तणी नहि मणा;
 तवोलीय मालीय कलाल, नाचणि मोची नड लोहार, १०९
 मोची घाची नड तेरमा, धोई डेढ सावणगर घणा,
 सड सेलार सेख खाटही, कादी पुराण पढइ ले वही, ११०
 वाण्या वाभण बहुला भिल्या, वणकर सूत्रधार दलि भिल्या,
 कनडा कुकट हवसी किसान, खूटी देई भूमड तिसा, १११

कोठी अनड घणा वाजारि, त्रिणि लाग्न गाटा कटक भम्भारि ,
 पोठी ऊट गान्ह वेसरा, तिहरी पूठि भग्या अति भख्या ११२
 भासर जगद अनड जीण माल, जल जत्र नालि ढीरुली भमाल,
 णणा वण कटक माहि सहु, ज जोईय त लाभइ उहु, ११३
 'भाटउ' कहइ कटक अनमानि सवाकोडि मिलिउ माणस ताम,
 सुर रवि खेह धायउ आभ, भूला न लहइ वेटउ वाप, ११४
 जोयण च्यार पडइ मिलण, रुख वृख न रहइ तिणि ठाणि,
 समुद्र तणी वेलू हुइ जिसी, पातिसाह फोज हुइ तिमी, ११५
 मनि चिंतवइ इमु सुरताण, जात समउ भाजिसु गढ ठाम,
 सभरियाल जीवतउ ग्रहउ, सह्र उदि ले ढीली फरउ, ११६
 भवालाग्न माहि नीवीवाह, लूभइ ववइ माणस आह,
 दाहइ पोलि नगर प्राकार, देश माहि वलि फिया अपार, ११७

॥ न्हा ॥

पातिसाह आदश गइ, सभलि अलुखान,
 देस विणास किसउ करउ, गढि जाइ घउ रि मिलण, ११८
 द्वाही छइ रि गुटाइ की, जइरि विणासउ देस,
 सीचाणा ज्यउ भइफ ल्यउ, गणवभवर नरेस, ११९

॥ चौपडे ॥

आलम साह नड अलुखान, वेगि करि गढि आव्या ताम,
 पातिमाह गढ दीठउ जिसइ, जोई द्रिष्ट तिकासी तिसइ, १२०
 सावलि आव्यउ मुग्ताण, फोज कीया भीर मलिक ने खान,
 हाल हाल करइ अपार, गढ पायलि फिरिया असवार, १२१

नदी तणा जिसा हुइ पूरि, कटक नणा दीमइ भलूरि.	
रुद्र घणा वाजइ नीसाण, गढरा लोक पड्ड पराण;	१२२
ढलकी ढाल फरहरी चाध, गढ पाखलि फिरीया वेट,	
धूजी धरा गढ कापीचउ, शेषनाग तिहि नाही राग्वायो,	१२३
गढ चापी आपि सुरनाण, मिलाणीरा हुवा फुरमाण;	
घणा व्टक अर मोटा खान, चहु पांलि हुआ मिलाण;	१२४
पच वर्ण तिहि देरा दीया, भलकइ कलस मोना रा तिहा;	
महु कटक उतारा लीया, पाखलि सातपुडा गढ कीया,	१२५
पातिसाह दल दीठउ जिमट, गढना लोक चितवइ तिसइ,	
गढ ऊपाड़ी पाडिसी, कोसीसा उतारसी;	१२६
गढ माहे हूयउ चूवाकार, सूरज तणी न लाधीसार,	
काला कोट हाथिया तणा, गढ ऊपहरा दीमइ घणा,	१२७
लोक महु तिहि करइ विलाप, घणा देवला मांडइ जाप;	
राय हमीर चित नवि धरइ, लोक सहु नइ मुसता करइ,	१२८
कटक महु मेल्लाणे दुवउ. खेहाडंवर भाजी गयउ;	
दिस निर्मला भागउ अन्वार. ऊयउ सूर न लागी वार,	१२९
लोका नउ भउ भाजी गयउ, कटक नहीं ए अचरिज भयउ,	
लोकानइ उपनउ उच्छ्राह, पुनिहि उरि हुवउ भाव;	१३०
घणइ हरखि ऊयउ श्री सूर, तउ गढ माहि वाज्या रिणनूर,	
राय हमीर वधावउ करइ, पातिसाह देखी गोडरइ.	१३१
आज अम्हारउ जिव्यउ प्रमाण, हु भलइ ऊपनउ चहुयाण;	
रिणथंभवरि हउहोवउ राय, मुक्त घरि ढीली आव्यउ पतिसाह,	१३२

॥ वस्तु ॥

ताम राजा ताम राजा धरियउ उद्धाह,
गढ गाढउ सिणगारीउ भला सुभट नड ब्रास अप्पड,
हरस वरी हम्मीरदे घणउ मान मीरा समप्पड,
मुक्त गढ भलइज प्राहुणउ आव्यउ अलावदीन,
सफल त्विस हुउ मुक्त तणउ जम आज वन वन्न, १३३

॥ चउपई ॥

रणधभोरि गुडी उद्धली कोसीमड कोसीसड भली,
तोरण ऊभरीया घर-नारि, मगला (त्वियड) चारि द्वियइ वर-नारि, १३४
च्यारि पोलि सिणगारी तिहा, आगीसारा तोरण जिहा,
ऊभ्या धट्टड चींध पताक, गुहिरा राजइ प्रवक ढाक, १३५
बुरिज बुरिच धरड नीसाण, ढोल (तणड) घाइ पडइ अरि प्राण,
राजड वरगू नड काहली, देव मह जोवा आया मिली, १३६
सात छत्र वरावड सीस, चमर ढलड (उचइ) रणधभोग ईम,
पन्हस्ती प्रयठउ चहुआण, नगर माहि फिगि वीया मटाण, १३७

॥ गहा ॥

आलम साह आन्या भणी, वीधा बहुत उद्धाह,
गढ गाढउ सिणगारीयउ, रिणधभोरड नाह, १३८
हमीरदे मनि हरसीया, दल दसी मुरताण,
आपणपउ धन मानतउ, वदिण गइ अति दान, १३९

वदीजण आसीम वड. जडति हुवड चहुआण;
 न्हाता वाल रखे खिमड. त हम्मीरदे राण; १४०
 नगर लोक सहु मिल्या, वधावड चहुआण;
 गड वधावड अति वणउ. भरि भरि अंखिअयाण; १४१

॥ चउपई ॥

कहइ ऊवरा मोटा खान, एक वार मोकलउ प्रधान;
 साची वात मानी सुरताणि, प्रधानां रउ जुगतउ जाणि, १४२
 मोल्हउ भाट तेडाव्यउ सुरताणि, तेहनइ साहिव दे फुरमाण,
 सम्भरिवाल तीरइ तुम्ह जाउ, पूछइ किसउ कहइ ते राउ; १४३
 मोल्हउ भाट गड माहि गयउ, राय हमीर तणइ भेटियउ;
 राय हमीर ति मान्यउ घणउ, भाट नइ कीयउ प्राहुणउ; १४४
 भाटइ आसीस ज दीध :—

तु ब्रह्मा जयउ सदा, जयति दीयउ श्री सूरि
 इतु ईसर रिक्षा करउ. राम दीयउ रिधि पूरि १४६

॥ दोहा ॥

भाट कहइ राजा निसुणि, इकु कीरति अरु लाछि,
 ते वरिवा आवी निसुणि, किसी वरिसि, कहि साच; १४६
 तू वरि वेऊ वर तरणि, सयंवर माड्यउ सुरिताणि;
 भाट कहइ हम्मीरदे, भली गिणइ ते माणि; १४७

॥ चौपई ॥

राज कहइ वारहटा बली, कीरति-लाछि माहि कुण भली ,
 लाछइ गरथ घणउ आविमइ, कीरति देसि विदेसइ हुस्यइ , १४८
 'मोल्हउ' कहइ मोक्ल्यउ सुरताणि, कहइ सु सुणइ हमीरदे गण ,
 देवलदे' कुवरी परणावि, 'धारू' 'वारू' साथि अलावि , १४९
 हाथी घण बे मागइ मीर, तुम्हनइ निहाल करइ हमीर ,
 अधिका दे 'भाढव' 'ऊजेणि', मवालास सभरि तउ केडि , १५०

॥ षोहा ॥

च्यारि बोल आपी करी, भोगवि लाछि अणत ,
 'मोल्हउ' कहइ 'राजा निसुणि, कीरति दुहेली हुति , १५१
 'मोल्हउ' कहइ विसहर करिसि, जइ इन नामिसि नाक ,
 सरणाई आपिमि नहीं, कीरति होसी नाक , १५२
 कीरति मोल्हा । वरिजि मइ, लाछी त ले जाह ,
 डाभ अग्रि जे ऊपडड, ते न आपउ पतिसाह , १५३
 जइ हारउ तउ हरि सरणि, जइ जीपउ तउ डाउ ,
 राउ कहइ वारहट । निसुणि, त्रिहु पुरि मोनइ लाह , १५४

॥ चउपई ॥

घणइ महति भाट वउलावियउ, घरनउ भाट साथिई मोक्ल्यउ
 मोल्हि जइ तिहि नीधी द्वाहि, घणउ मान दीवउ पतिसाहि , १५५

१४३ तइ १४६ बीजी, > अरू, वरसि, १४७ मड्यउ सुरताण, हमीरदे, तोमानि
 १५२ विसर करीस, जयरिन > जइइन नाकि १५५ वउलाविवउ, साथि, नाल्हि

(गाथा)

रचिता सप्त ममुद्रा निर्मिता जेन रवि शशि तारा ।
अविगत अलख अनतो रहमाणउ हरउ दुनियाड ॥

॥ अथ छपद ॥

रे देवगिरि म म जाणि, जुरे जादव कि नरवड
रे गुजरात म म जाणि, कर्ण चालुक न हुयड
रे मडोवर म म जाणि, जुतड गाढम करि ग्रहियड
रे जलालदीन म म जाणि, जुरे वेमासि जि ग्रहीयड
रे अलावदीन ! हम्मीर यहु, ढिड किमाड आडउ ग्वरड ;
रिणथंभि दुर्गा लगंतडा, हिव जाणीवड पटन्तरड ; १५६)

॥ दोहा ॥

भाट कहड भोलड किसड, तू भूलड सुरिताण .
गढ रणथंभ हमीरदे, जीपिसि किणिहि विनाणि , १५७
नवि परणावड डीकरी, नवि आपड वेऊ मीर ;
हाथी गढ आपड नही, डसड कहड हम्मीर , १५८
तु सरिखा सुरताणसुं, करड विग्रह निसदीस ;
हमीरदे कहीयड डसड, तडड न नामड सीस ; १५९
सड बरसा तु संचीवड, धान चोपड गढ माहि ;
चहुयाण कहड इसड, रामति करि पतिमाह ; १६०

१५६ हमोरयड , १५८ न मवि, न > नवि अडवि, नुहइ > हुयड
गाडिम, करि > जि

॥ चौपडे ॥

भाट नड तूठ सुरिताण, घोडा अग्रथ निघाडड ताम ,
 भाट कहड आगड घनि प्रणा, उचित भटार अछड तुम्ह तणा , १२१
 देवा नड नरवर तणा, उचित न होड भटार ,
 नाल्ह न लड कारणि करणि, हु नूठ करतार , १२२

॥ चौपडे ॥

नाल्ह कहड कारण सुरिताण, तड विग्रहि सरसी चहुआण ,
 भाट मगड आगलि तिणिवार, इणि कारणि न लीयड भटार , १२३

॥ दुहा ॥

नाल्ह कहड साहिब सुणउ, ज डी मगड चहुआण ,
 भाट उचित सागड तनि, अहि गयड निन ठाण , १२४
 राजकुली छत्तीस नड, चीरी नड चहुआण ,
 या वेला छड तुम्ह तणी, आवड घणड पराणि , १२५

॥ अथ पदवी छ ॥

सत्रा वना दाहिमा ज्ञाणि, इडवाहा सेरा मुक्तिआण ,
 चारहड बोडाणा अतिभूकार, वाघेग मिलिया तिह अपार , १२६
 भाटिय गघड तुघर असख, सुभट सेल चाल्या हमत ,
 डाभिय डाहीय अति घणा हण, डोडीयआण पयाणरूण , १२७

गुहिलत्र गहिल गोहिल राव, परमार पधार्या अति उद्याह ;
 सोलंकी सिधल घणइ मंडाणि, चंदेल खाइडा नइ चहुआण ; १६८
 जाडा जादव महुडडा एव, सूरमा रणमल जाई तेउ ;
 राठवइ मेवाडा निकुंद, छत्रीस कुली मीली आरम्भ ; १६९
 हम्मीर राय हरखीय अपार, दीठा मिल्या अति भूमार ;
 मंडलीक मउडउथा राणो राणि, सहुवमिलि आव्या तेणि ठामि ; १७०
 रजपूता नइ दीधा (अति) भला सनाह, अगा रंगाडलि तणा ठाह ;
 छत्रीस डंडाऊध लीय जाम, 'महिमासाह' उतर्या ताम ; १७१
 माख्या मीर मलिक जाम, सगला ढल माहि पड्यउ भंगाण ;
 नवलखि माख्या निसरखान, वंवारव पड्यउ तेणि ठाणि ; १७२
 'महिमासाहि' मार्या घणा मीर, गढ जाय जुहाख्या हमीर ;
 जस जयति हुउ चहुआण राय, कवि कहइ 'व्यास भडड' उद्याह ; १७३

॥ दोहा ॥

कटक माहि हल हल हुई, हुउ दमामे घाउ ;
 सुभट सनाह लेई भला, चडिउ आलम साह ; १७४

॥ चौपई ॥

आलमसाह चड्यउ सुरताण, कटक सहु नइ हुवा फुरमाण ;
 मोटा खान भारी उंवरा, तिणि गढि लागा पालाफीरा ; १७५

कनडा कुम्हट हवसी जेट, कोसीसट जड वाज्या तेउ ,
 मीर मलिक पठाण जि हुता, तिणि गडि चट्या घणा सुजुता , १७६
 चउद सहस गयवर तिह गुड्या, मणि माता भासरि जाड अट्या ,
 घटा तणा हुवड निनाट, गडना देव वरद विपवान् , १७७
 सवालारस वाजा वाजीया, कायर तणा तिणि फाटड हीया ,
 लने लने करड इआर, जाणे गड लेसी तिणिवार १७८

॥ नोहा ॥

तिणि अवसरि हम्मीरदे, तेड्या सगला राइ ,
 आजि भलड कीलड करड, देसइ जिउ पातिसाह , १७९
 राजकुली छत्रीस नड, मोटा राणो राणि ,
 ते गड हुता ऊतया, जक करड मटाणि , १८०
 सूरु मनि उद्धाहडड, कायर पडड पराण ,
 वाका चोलजि नेलता, भाजि गया तिसि ठाण , १८१
 पछेपडी घुटी समी, हाटो माहि वसति ,
 लोह मन्म्या देखि करि, गया ति कायर हासि , १८२

॥ चौपई ॥

सात छत्र बरावय राड, गयवर गुड्या आप्या तिणि ठाड ,
 आलम ऊभो देसइ पातिसाह, वेऊ सुभट भिडड तिणड ठाई , १८३
 विहु दल वाजड जागी डोल, नीसाणे पडड हिलोल ,
 विहु दलि वाजइ रिणि काहली, कटक उडि म्हालरि रसि भरी , १८४

१७६ हवसि जेव, सुशुतु १७६ हमीरदे राव आज

अति मीठी बाजइ मूहरी, तियरइ नादि वीर रसि चडी,
 विहु दलभाट करइ जयकार, सुभट भिड़इ न लाभइ पार, १८५
 भवभव भवकइ (तिह) करवाल, चाहइ सेल घणा अणियाल ;
 सींगणि तणा विहूइ तीर, इम मेल्हइ भिड़इ तिम वीर ; १८६
 यंत्र नालि बहइ डीकुली, सुभट राय मनि पूजइ रली,
 मरइ मयंगल आवटइ अपार, आहुति लइ जोगिणि तिणि वार, १८७
 गयवर पड़इ रिवर हिणहिणइ, सुभट घणा रिणागणि पड़इ ;
 लहता ग्रास घणा जे जिहा, तेऊ उसंकल मागइ तिहा ; १८८

॥ दूहा ॥

उलगाणा खायइ सदा, ऊरण हुइ इकवार ;
 चाड घणी ठाकुर तणी, सारइ दोहिली वार ; १८९
 डील बड़इ लहता सदा, न्यामति घोड़ा ग्रास,
 गढि गो ग्रहि उरण करइ, त्या सुरगापुरि वास, १९०

॥ चउपई ॥

पातिसाहि दल भागौ नाम, मार्या मीर मलिक बहु खान,
 गढ (नड) पूजा कीधी अति घणी, जयति हुइ रिणथंभोरह धणी, १९१
 सहु कटक री कीधी सार, सवालाख खूटउ एकवार,
 सहु मलिक खान करइ सलाम, कटक मरावइ साहिव कुण काम, १९२

१८५ तियराइ, १८६ खाइ, १९० तिहा

प्राण्ड गढ लीजड नत्रि क्रिमट, मोई उपाय चित्तउ तिमड,
 जड रिणि पुराउड मूरकार, हेला गट लीनड इव मार, १६३
 रिण यम ऊपरि चडउड सुरताण, दग्गड गढनउ सह मडाण,
 मिघासणि मउ नेठउ गउ, रिण हुतउ जोर पतिमाह, १६४
 महिमासाह कहड सुणि राउ, मो घानट आयउ पतिमाह,
 कहडति डील मारउ सुरताण, कडडति पाडउ छत्र मडाणि, १६५
 राउ कहड थारउ साचउ मीर, छत्र पाडि इमउ कहड हमीर,
 कहड पठाण सुणि गोमरा, इणि जीवति किउ भूजिसि धरा, १६६
 राचि प्राण तिण मेल्लहउ मीरि, सात छत्र तिणि पाड्या तीरि,
 चिति चमकिउ आपु सुरताण, महिमासाह तणउ पराण, १६७
 पहिलउ रिण पूर लकडे, देह आग ताल्यउ तिय भडे, १
 कटक मर नड हुयउ फुरमाण, वेळ नगाउ तिणि ठाणि, १६८
 सुथण तणी राधड पाटली, मीर मलिउ वेळू आणड भरी,
 न करड कोड भूम गड वाल, वेळू आणड सहि पोटली, १६९
 छठइ मामि सपूरण भस्थउ, ते देरी गेक मनि टरउउ,
 कोसीसड जाड पहुता हाउ, तुरका तणी समी छड गान्छ, २००
 राय हमीर चित्तातुर हुयउ, रिण पृथ्वउ दुग्ग हिच गयउ,
 गढ देउति लही परमाथ, आणी कुची दीधी हाथि, २०१
 राय नारी उपाडी ताम नेत्र माया पाणी बहिया ताम,
 उहि वेळू पाणी सु गयउ, तेह कोल वलि ठालउ ययउ, २०२

१६३ आणइ, हेला १६४ देखी, सिधसणि, हुता, १६५ मित १६६ पाठण,

१६७ मतउ १६९ मली २०१ चित्तातुउ २०२ हमीर

राउ आगलि नितु पालउ पडड, देग्री पातमह थडहइइ,
 धारु वारु नाचड वेऊ, पुठि दिग्वालड पातिमाह नउ तेउ; २०३
 कोर्टे कटक माहि भलउ मीर, नाचणि मारड मेल्हड तीर,
 जउ हुवड सहिमासाह नउ कोउ, इय विदा तणि मारड मोई, २०४
 सारी दुनी माहि कां इमड, इय विदा तणि मारड जिमड,
 सहिमासाह नउ काकड हाई, एअ विदा तणि मारड मोई, २०५
 इयणा घरनी विद्या एऊ, भला मीर नवि जाणड तेऊ,
 ढीली माहि वदि तुम्हि थख्यड, तउ त्विणि आणि उभड कख्यड; २०६
 तुम्हनइ तिहाल करड वडा मीर, इय विदां तणि मारड तीरि,
 साहिव सिगणि वाण्या हाटि, सवालाख अडाणी माटि; २०७
 सिंगणी घणी भली वड हाथि, सीगणि खाची कुटका मात;
 आणावी सिंगणी सुरताणि, मीरा नउ अति चड्यड पराण, २०८
 राव आगलि तव माँड्यड नाच, धारु वारु नाचड पात्र,
 तोडी ताल पुठि फेरी जाम, मलिक मीर मारी ते ताम, २०९
 एकडं तीरि पात्रि मारी वेउ, गढ वाहरि मारी पाड़ी तेउ,
 घणउ उचिति दीधड मुलताणि, एउ पवाडड कीधड तिणि ठामि, २१०
 गढ गाढउ विट्यड सुरताणि, को सलकी न सकड तिणि ठामि,
 माहो माहि मरइ लखकोडि, पातिसाह नवि जाण छोडि, २११
 चार वरिस नउ विग्रह कीयड, मीर मलिक घणा तिह मुवा,
 ढीली थी आई अरदासि, किसड लोभि साहिव रह्यड वामि, २१२
 २०४ जय, २०७ करइ, २०६ वमभ री मरी मारी ताम, २१० बहरि मीरी

मदभरिआल न मानड आण, वल नवि चइ तुम नड सुरताण,
 गढ नवि लीजड प्राणड किसड, कटक मरावीड कारण किमड, २१३
 थारड गढ छड आगड घणा, घर सभालि साहित्र आपणा,
 पुत्र कलत्र सहुअड परिवार, तीयारड मेलड नड खुदकार, २१४
 साहिव कहड मुणउ सहु मीर, नाक नमणि जे वड हमीर,
 घरि जाता सोभा हुड घणी, पति पाणी रहड आपणी, २१५
 पातिसाह कहावड ईम, चार वरस विग्रह नी सीम,
 त मोटउ अगजित राव, सरणाई तणउ पतिसाह, २१६
 चार वरस आपे रामति रमी, मुनड घरि मुकलाविनड किमड,
 हु थारड आव्यउ प्राहुणउ, मुहत नेड मो दे ताजिणउ, २१७

॥ दूहा ॥

पातिसाह इसउ नही, गढि मोकल्या प्रधान,
 रामचदि रुडउ कीयउ, लाफ कहड चहुआण, २१८
 आलम साह रड आगलड, तु उगख्यउ अभग,
 रिजमति देड उउलावि नड, जेम गहड अतिरग, २१९
 लोक कहड चहुयाण नड, इम विमासी जोई,
 मोटा मु नमता कदे, न्यण नावइ कोड, २२०
 घणउ विसास जिहा तणउ ते तेड्या राय प्रधान,
 रणमल रायपाल सूरिमा, मोकलिजड तिणि ठाम, २२१

२१४ सहुव, २१५ सुणि २१६ अगोजित, २१५ कहइ, २१६ चलावि तुरग,
 २२० इम

कवि कहइ 'भाडउ' इसउ, संभलियो सहु कोई,
ते प्रधान ज करइ, अचरिज जोवउ लोई; २२२

॥ चउपही ॥

राय हमीर मोकल्या प्रधान, रणमल रउपाल गया तिणि ठामि,
पातिसाह नइ क्रीया सलाम, आलमसाह दीयइ बहु मान; २२३
रणमल तीरइ पूछइ पतिसाह, तुम्ह नइ ग्रास किसु दे राउ;
अरधी वूदी अह्वनइ ग्रास, जिमणइ गोडइ वइसारइ पासि; २२४
सइ हथि वीड़उ अम्हनइ वइ राउ, गढ प्रधानउ करां पतिसाह;
तउ तुम्हि आव्या वड़ा प्रधान, घर मुकलावउ अम्ह नइ देइमान; २२५
चार वरस तइ विग्रह कचउ, गढ लीया विणु काइ पाछउ भयउ,
रिणमल राइ (पाल) कहइ सुरताण, बंधव गढ नवि लीजइ प्राणि; २२६
पूरी वूदी घं सुरताण, अम्हे गढ घउ (तुम्ह) विण प्राणि,
सुणी वात हरख्यउ सुरिताण, लिखि इहां दीध तिहा फुरमाण; २२७
अम्ह तुम्ह विचइ अलख रहमाण, कोस क्रीया करइ सुरताण,
बीजा ग्रास घउ अति घणा, वाह बोल तु दीउ आपणा; २२८
मति भूला नही तीय मान, तिया मुरिखानी नाठी सान,
हीया सूना जाणइ नही ईम, तुरका नइ वेससिजइ केम; २२९
स्वामी-द्रोह क्रीयउ तिए तिहा, परिघउ ले आवां छा तिहा,
मनि हरख्या रिणमल राउपाल, कूड़ करी गढि ग्या ततकाल; २३०

राय हमीरपूठयड (छड़) इसड, पातिसाह मागडकहि किसड,
 देवलदे मागड कुपरी, द्रोहे रात मनि हुती कही, २३१
 देवलदे (ड) कहड सुणि राप, मो बडड उगारि नि आप,
 जाणे जणी न हुती घरे, नाही थकी गई त्या मरे, २३२
 राय हमीर सुधि नत्रि लहड, सहु परिघड फेख्यड तिणि समड,
 गड नड लोक न जाणड भेड, रणमल रायपाल करड छड तेड, २३३
 कोठारी नड पोल्यड विरड, धान नरसाधि सहु तड परड,
 अम्हनड वृत्ती पूरी हुई, त परधानड देस्यां सही, २३४
 तिणि नीचि नाग्या सहुपान, रिणमल रउपाल परधान,
 गीरमन्गी घालड घात, राय तणड मनि न वसी घात, २३५
 रिणमल रउपाल मागड पसाड, एकवार परघड चड राड,
 कटक कीलड करा अति भलड, जे मे तुरक पाडा पातलड, २३६
 राय तणड मनि नही विगेप, द्रोहे कीघड काम अलेख,
 सघालास परिघड (छड) रावु, द्रोहे मिल्या जाई पतिसाहि, २३७
 सात तार पहिराया तेड, मूरस हरत्या गाढा पेऊ,
 कोसीसे गीयड दरड राड, जोवड रणमल खेल्यड डाघ, २३८
 अणचितटवी हुड कुण रात, वसा देवि तीवी अति घात,
 पापी परधान पहड्या वेड, परिघड सहु लोपड तेड, २३९
 गड माहि नहीं को जूभार, जहरड हाथि तीजट हथियार,
 वांकड देघ तणड विवहार, जीती कोइ न जाई ससारि, २४०

२३१ पूछइ इसु मान २३२ नही तु २३३ भेऊ, २३४ नाखिउ २३६.
 करा ति, २३५ खेलेइउ

साची बात मानी चहुयाण, कुमर तेडाव्या तेणड ठामि,
 टीलड काढि खड्ग दीधड हाथि, रिणथंभोरि वडा हुजड हाथ, २५८
 वांभण नड तुम्हि देज्यो दान, रखे महेसरी करउ प्रधान,
 नहेसरी ना वाढिज्यो कान, तुरका ने देज्यो बहुमान; २५९
 राय सिखावणि दीधी भली, तीयारी माइ साथि मोकली,
 तीह नइ घोडा दे रजपूत, द्वियड वाप चली दुड पूत, २६०
 राय हमीर मीर नड कहड, हाथी मारि रखे कोई रहड,
 मेलहड मीर प्राण अति वाण, नव नव हाथी पाडड ठाण, २६१
 सालिहोत्र मूधा तूपार, ते मारीजड तेणड वार,
 वरि वरि जमहर लोके कीया, राऊल गुन बलड छड तिहा, २६२
 जमहर रा माता धूकला, राय अतेवर लागा बला,
 करी सनान पहिरीया चीर, जगटणे लूहीया सरीर, २६३
 सिरि सिंदूर सिध तेडिया, सवा क्कोडि का टीका किया,
 नयणे काजल सारी रेह, मुख तंवोल समाण्या तेह, २६४
 काने कुडल भलकड तिया, सूरिज चदरी ऊपम जीया,
 वाहड वाध्या बहरखा भला, सोवन चूडी खलकड निला, २६५
 आगुलीया सोहड मूंदडी, सवा लाख री हीरे जडी,
 कंठनि गोदर उरिवर हार, पाई नेउरि मण मण कार; २६६
 सोलह सिंगार संपूरण कीया, नाचड गावड गाडी तीया,
 आपण पणा संभालड प्रिया, वेऊ पक्ष उजालड त्रिया, २६७

२५८ ते आन्धा, २६० दई, २६१न, २६३ उगटणे, २६४ सिमा ताडीया,
 कीया, २६७ प्रिया

- देव तणी देगी हुड जिसी, राय तणी अतेउरि जिसी,
 ते देगी तेर गलभलइ, राय कुवरी इसी परि बलइ, २६८
- (रा) जाणे तिणि गढि पडिउ पुलउ, लोक सभ का लागउ बलउ,
 अग्र भडार मजति समुदाय, राख पीछ प्रलइ तिणि ठाउ, २६९
- सोना जडित बलइ पलाण, जीण साल इथियार लगाम,
 पलर ढोल कमखानइ पाट, चर ब्रवालु कचोला पाट, २७०
- चरणाली सोना रूपा तणी, गरथि भरीय प्रलइ अति घणी,
 सुमखा कतीफा जुन पटवूल, सउडि तलाड तणा अति पूर, २७१
- एकधीस मूमिया बलइ आवासि, जाड भाल लागी आकासि,
 हणवति जेम पजाली लफ, से वीतक धीता रिणधभि, २७२
- जमहर करी परतउ राउ, न धो उगरिउ तिणि ठाउ,
 उत्तम मध्यम [फो] न लहइ पार, सत्रा लाख नउ हुउऊ महार, २७३
- गढ मगलउ मुकलावड ताम, चिहु पोलि फिरि कीयउ प्रणाम
 पातिसाह नइ पूठि न देसि, बहुयाणाड गढ बलि आणसि, २७४
- मुकलावड वेहुगं रा देब, कोठारे शयन तिणि खेवि,
 बावि सरोवर नगर बिहार, मुफलावड भडार कोठार, २७५
- ऊमउ रति नोवड कोठार, घान भस्था दीसड अंचार,
 जाजउ वीरमदे बे मीर, गढ गस्विस्या म भरि हमीर, २७६
- राय कहइ उधर सुणि यात, या धीसी धोली तड घात,
 अनरथ हुबउ घणउ तिणि ठामि, टिघ रहि तड फरिस्यां सुण धाम, २७७

२६९ सागइ बरइ, ति ठाई, २७० सागल, २७२ वनइ प्रवासि २७३
 उगरउ ठामि, २७६ ऊमउ २७७ तु

॥ दूहा ॥

वीरमदे हम्मीरदे, मीर नड महिमासाहि;	
भाट नड जाजउ प्राहुणो, ण रहिया गड माहि,	२७८
जमहर करी छड़उ हुयउ, हमीरदे चहुयाण;	
सवालाख संभरि धणी, घोड़इ दिचइ पलाण,	२७९
छत्रीसइ राजाकुली, उलगता निमि-दीस;	
तिणि वेला एको नहीं, उवाढउ लेवहु ईस;	२८०
हाथी घोड़ा धरि हुता, उलगाणा रा लाख.	
सात छत्र धरता तिहा; कोइ न साहइ चागः	२८१
नगर (लोक) मोह मेल्ली करी, घोडइ चह्यउ हमीरः	
कदि ही जुहार न आवतउ, पालउ पुलिइ ति वीरः	२८२
चाधव पालउ देखि करि, गहवरीयो हम्मीर,	
इणि घोड़इ कुण काम छइ, तिणि पालउ मुक्त वीर.	२८३
सइहथि घोड़उ मारि करि, पालउ चाल्यउ राउः	
पनि पाहण लागइ घणा, लोही चहइ प्रवाहः	२८४
महिमासाह काधइ करइ, अन्हारा साहिव हमीर.	
वीरमदे चलतउ कहइ, बंधव वेला (ह) मीर !	२८५
देव सहु मनि काल मुह, सूरिज प्रमुखुज केविः	
तीनइ त्रिभुवन डोलिया, राय हमीर देखेविः	२८६
(ए) खाज्यो पिज्यो विलसज्यो, ज्या -रइ संपइ होई.	
भोह म करिज्यो लख्मी तणउ, अजरामर नहि कोइ.	२८७

२७६ हमीर २८० उलगता नसदीस, इस, २८३ हमीर, २८४ हमीर २८६ काल मुहा हुवा, २८७ नाही

(ए) ग्वाज्यो पीज्यो विलसज्यो, धनरउ लेज्यो लाह
 कधि 'भाटउ' अमउ कहइ, दधा लामी वाह २८८

॥ चउपई ॥

भाट नइ राय द्योवउ काम, दाध दिवाडेइ रुडइ ठामि
 घोर प्रलावे वेउ मीर, डमउ आदेश टियइ हमीर २८९

'जाजउ' 'वीरमने' हममस्या, पिहिली किलउ अम्हे मालिस्या,
 हाथ जोडि वे प्रोल्ड मीर, अउसर हमारउ आज हमीर २९०

म्हाथी दुस महीयउ अति घणउ, नाक न नाम्यउ पणि अपणउ,
 पहिला ज तुम्ह आगलि मरा, थारा मु ग उसाकल करा, २९१

वेउ मीर भिडइ अति भला, मारइ कटक घणा एकला,
 [१ चोटी साहइ भला अड्यार, छरी स्यउ सट करइ दसवार]

भिडइ 'दिवडउ जाजउ' भलउ, वीरमदे अति वीधउ किलउ २९२

भाट कहइ मुणउ महाराज, कुण नइ प्राण दिखालउ आज
 राय पवाडउ वीयउ भलउ, आपण ही साख्यउ जै गलऊ, २९३

॥ लोहा ॥

सवत तेरह इकहत्तरइ, जेठ आठमि सनिवार
 राउ मूवउ गट पालट्टाउ, जाणइ इणि मसारि २९४

२९१ थ । यह पति उदयपुर वाली प्रति में नहीं है ।

॥ वउपई ॥

धरा पीठ पड़ियउ 'हमीर', ऊभउ भाट बोलड जई मीर.
 'जाजउ' सिर सिर ऊपरि कीयउ, जाणं ईश्वर तिणि पूजीयउ, २६५
 'वीरमदे' रउ माथउ देठि, वेउ मीर पड्या पग हेठि:
 देवलोकि जड बडठउ गउ, कुडि रखवालड भाटज तेऊ: २६६
 राति विहाणी हुचउ परभान, पातिमाह तिह मेन्डड स्वाट:
 हमीरदे पड्यउ छड जिहां, पालउ उपरि आन्यउ तिहा, २६७
 सीगणिगुण तोइड मुरताण, आलम साह न ग्वाई (न) खाण:
 'रिणमल' तीरड प्छड पतिसाह, तुम्हारा साहिव कुण इह माहि. २६८
 वणउ द्रोह आगड तिणि कियउ, खाते पीते आकज लीयउ.
 मदि माता हूया जाचंथ, पगस्यउ राऊ दिखालड अथ: २६९
 ए मोटउ पृथवीपति राव, भली परि भूभूयउ-तिणि ठाई,
 मभरिवाल मरीसउ बली, कोई न हींदू ईणड कली. ३००
 पतिसाह कुमख्यउ अति घणउ, मइ हाथि आप दियइ खापणउ:
 'विरद' नाल्ह [भाट] बोलड तिणिठाइ, पतिसाह नड दीधी द्वाहि, ३०१
 बोलड भाट करड कडवार, बोलड विरद अतिहि अपार,
 धन जननी हमीर दे, सरणाइ वि जड पंजरो मूरो. ३०२

॥ दूहा ॥

तुं आलम अल्लाह तुं, तूं अलखख करतार,
 वाच संभालि न आपणी, उचित आपि खुदकार, ३०३

२६६ बीऊ, २६९ मनि, ३०० पति, इयाइ कलि, ३०१ ठामि ३०३ अलाह, अलख

मिरि मिरि ऊपरि देगिकरि, पूछिउ आलम माहि,	
भाट कहइ जि कुण आत्मी, ए हुआ कलि माहि	३११
रिणथभर जे जलहगी, गई हमीर उठउ ईम	
उडजलने 'जाजउ नेउडउ', पूज्यउ माहिउ मीम	३०५
(य)उ पर वीरमद बली, उधर गय हमीर	
जु 'महिमासाह' 'शाभरू,' वारा घर का भीर	३०६
इय चहुयाण हमीरन', सरणाइ रसपाल,	
अलावनीन' तुम आगलड, मोटर मृउ भूपाल,	३०७
मान न भेल्यउ आपणउ, तमी न नीधउ नेम,	
नाम हुवउ अक्किचल मही, चर मर दुय जाम	३०८
इन्द्रासणि 'हस्मीरन', जावड नाल्ह' की वाट,	
उचित देड वृत्तावि नड, करी समाध्यउ भाट	३१६
नाल्ह' कहइ सुरताण नड, थापणि दड मुम आन	
भाट नड मुकलादि परहउ, हमीरने कड राजि	३१०

॥ चरपई ॥

पातिसाह 'नाल्ह' नड कहइ, मागि जि काई वारड भनि गमइ	
गड अरथ दम भडार, मागि मागि म म लाइसि वार	३११
अरथ गरथ दम भटार न काम, साथि किंपि न आउड सामि	
जड नृठउ आपड गूढकार, द्रोहांति नड परहा मारि,	३१०

स्वामीद्रोह करड सिचद्रोह, विष्णामवात करड नर मोटेः
 थापणि राखड प्रकामड गुम्भ. नो नर मारीजड अवृभ ३१३
 जे हुता नोटा परमान, वृदी सरिन्वा भोगवता ग्राम
 सडं हथि वीडुड लहता वेड. पगम्यड राव दिग्पाल्यड तेड. ३१४
 वाण्या हाथि हुता कंठार, राय हमीर न लहतड मार
 दास किराड कूड कीयड वणड. धान नाग्यड कंठारा तणड ३१५
 रणमल, रायपाल, वाण्या तणी खाल कडाड अगुठा थकी,
 भाट समाध्यड गाढड होटे, कलि माहे पाप करड नवि कोडे. ३१६
 जड तूठड (तट) आपड तट आपि, भाट नड बलि वड निरवाप;
 पातिसाह विमासड आप. रिणमल रिउपाल माख्या नही को पापः ३१७
 जयडर लहता मता ब्रास. तीया माहि कुण कीधा काम.
 पातिसाह दीधड फुरमाण, खाल कडावड त्रिहु नी तिणि ठाम, ३१८
 पापी नड आपडीयड पाप. कीधड समाध्यो गाढड भाट;
 पातिसाह उसकल हूवड, हणी भाट सुरगापुरि गयड, ३१९
 रजपूता ने दीधा दाध, घोर घलाव्या (वेऊ) मीर अदाध,
 गंगामाहि प्रवाहड राड. वणड भलड कीधड पतिसाहि, ३२०
 धनुपीता चहुयाण तणड, मात्र पखूय उजाल्यड वणड,
 धनु धनु जीवी राय हमीर, जिणि सरणाई राख्या वे मीर, ३२१
 मोटड मीर महिम्मासाह, जीह पूठि आव्यड पतिसाह,
 जाजा वीरमदे रा नाम, जग ऊपरि हुवा तिहरा नाम, ३२२

३१३ स्वामिद्रोह, विश्वासी ३१४ स > सड ३१९ गयो, ३२२ महिमासाह

भाट घणउ मनमात्रउ ताम, म्यामि काज कीवउ अभिराम ,
 प्रयर प्रात्यो हमीरउ तणउ, कलि माहि नाम राग्यउ आपणउ, ३२३
 रामायण महाभाग्य जिसउ, हम्मीरायण तीजउ तिमउ,
 पटउ गुणउ सभउ पुगण, तिया पुरपा हुउ राग मनान, ३२४
 दृष्टा गाहा उस्त चउपउ, तिनिमउ इकरीसा हुउ,
 पनरह मउ अठतीमउ सही, काती मुनि मातम सोम निनि कही, ३२५
 सकल लोक राजा रजनी, कलिजुगि कथा नवी नीपनी,
 भणता सुर्य तालिन मउ टलउ, 'भाडउ कहउ सो अफला फलउ ३२६

मवा— १६-८, वरप भाटवा वणि १० रविवार
 लिखित विजकीरति मल्धार गच्छे ।

॥ राय हमीरठे चौपड पूगी छ ॥

परिशिष्ट (१)

प्राकृत-पंगलम् में हस्मीर सरञ्चन्धी पत्र

[१]

गाहिणी :—

मुचहि सुन्दरि पाअं अप्पहि हसिउण मुमुहि खग्ग मे ।

कप्पिअ मेच्छशरीरं पच्छड वअणाड तुम्ह धुअ हस्मीरो ॥ ७१ ॥

रण यात्रा के लिए उचन हस्मीर अपनी पत्नी से कह रहा है —

हे सुन्दरि. पाव छोड़ दो, हे मुमुखि हमकर मेरे लिए (मुझे)

खन्न दो । म्लेच्छों के शरीर को काटकर हस्मीर निःमन्देह तुम्हारे मुख के दर्शन करेगा ।

[२]

रोला :—

पअभरु दरमरु धरणि तरणिरह धुल्लिअ भंपिअ,

कमठ पिट्ट टरपरिअ मेरु मंदर सिर कंपिअ ।

कांह चलिअ हस्मीर वीर गअजूह संजुत्ते,

किअउ कट्ट हाकद मुच्छि मेच्छह के पुत्ते ॥ ८२ ॥

पृथ्वी (सेना के) पैर के बोझ से दवा (ढल) दी गई, सूर्य का रथ धूल में डूब (भंग) गया, कमठ की पीठ तड़क गई, मुमेरु तथा मदराचल की चोटिया कांप उठी । वीर हस्मीर हाथियों की

सेना में मुमजित (मयुक्त) होकर क्रोध से [गणयात्रा के लिए] चल पड़ा। स्नेहियों के पुत्रों ने बड़े कष्ट के साथ हाहाकार किया तथा वे मूर्च्छित हो गये।

[३]

उपपद्य —

पिण्ड लिङ्ग मण्णाह प्राह उपपर पक्कर त्इ ।

त्रपु ममन्ति रण घसउ मामि हम्मीर वअण लड ॥

त्तूउ गहपह भमउ रग्ग गिड सीसहि मळउ ।

पक्कर पक्कर ढल्लि पल्लि पन्नअ अप्फालउ ॥

हम्मीर कज्जु जज्जल भणह कोहाणल मह मह नलउ ।

मुलताण सीम कराल त्इ तज्जि क्लेवर तिअ चलउ ॥१०६॥

वाहनो के ऊपर पक्कर देकर (डालकर) मैं दृढ़ सन्नाह पहनूँ, स्वामी हम्मीर ५ वचनों को लेकर राधवों से भटकर युद्ध में घमूँ, आकाश में उटकर घूमूँ, शत्रु के सिर पर तलवार जडूँ, हम्मीर के लिये मैं प्रोधाग्नि में जल रहा हूँ। सुलतान के सिरपर तलवार मारकर अपने शरीर को छोड़कर मैं स्वर्ग जाऊँ।

१ — यह पद्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार शार्ङ्गधर के 'हम्मोर रासो' या है, जो अनुपसन्ध है। राहुलजा इस किमी जज्जन कवि को कविना मानते हैं। पर वास्तव में स्वामीभक्त जाजा श्रीर जज्जन एक ही मानुम देता है, जिसकी उक्ति का कवि ने वर्णन किया है। देखिये — हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ २५, हिन्दी काव्य धारा पृष्ठ ४५२।

(४)

कुंडलिया :—

ढाल्ला मारिअ दिह्लि महं मुच्छिअ मेन्छ मरीग ।

पुर जज्जहा संतिचर चलिअ वीर हम्मीर ॥

चालिअ वीर हम्मीर पाअभर मेडणि कंभइ ।

दिग मग णह अंधार धूलि मूरह रह कंभइ ।

दिग मग णह अंधार आण खुरसाणक आछा ।

दरमरि दससि विपक्ख मारु, दिह्ली महं टाछा ॥ १४७ ॥

दिल्ली में (जाकर) वीर हमीर ने रणदुंदुभि (युद्ध का ढोल) बजाया, जिसे सुनकर म्लेच्छों के शरीर मूर्च्छित हो गये। जज्जल मन्त्रिवर को आगे (कर) वीर हम्मीर विजय के लिये चला। उसके चलने पर (सेना के) पैर के बोझ से पृथ्वी काँपने लगी। (काँपती है), दिशाओं के मार्ग में, आकाश में अंधेरा हो गया धूल ने सूर्य के रथ को ढंक दिया। दिशाओं में, आकाश में अंधेरा हो गया तथा खुरासान देश के ओल्ला लोग (पकड़ कर) ले आये गये। हे हम्मीर, तुम विपक्ष का दल मल कर दमन करते हो; तुम्हारा ढोल दिल्ली में बजाया गया।

[५]

भाजिअ मलअ चोलवइ णिपलिअ गंजिअ गुज्जरा,

मालवराअ मलअगिरि लुक्किअ परिहरि कुंजरा ।

गुरासाण सुहिअ गण मह लघिअ मुहिअ साअग ,

हम्मीर चलिअ हारव पलिअ रिउगणह काअग ॥ १५१ ॥

मलय का राजा भग गया, चोलपति (युद्धस्थल से) लौट गया, गुर्जरो का मान मदन हो गया , मालपराज हाथियों को छोड़कर मलयगिरि में जा छिपा । गुरामाण (यवन राजा) क्षुब्ध होकर युद्ध में मूर्च्छित हो गया तथा समुद्र को लाघ गया (समुद्र के पार भाग गया) । हम्मीर के (युद्ध यात्रा के लिये) चलने पर कातर शत्रुओं में हाहाकार होने लगा ।

[६]

लीलावती —

घर लगड अगि जलड धह धह कड दिग मग णह पह अणल भरे,
मम नीम पमरि पाडक लुलड गणि यणहर जणण णिआव करे ।
मअ लकिअ गविअ वडरि तरुणि जण भडरय भेरिअ नद पले,
महिलाड्ड पड्ड रिउसिर टुट्टड जग्गण गीर हमीर चले ॥ १६० ॥

जिस समय गीर हमीर युद्ध यात्रा के लिये रवाना हुआ है (चला है) उस समय (शत्रु राजाओं के) घर में आग लग गई है, वह धू-धू करके जलती है तथा निशाओं का माग और आकाशपथ आग से भर गया है, उसकी पटाति सेना मर आर फैल गई है तथा नमर डर से भगती (लोटती) धनियों (रिपु रमणियों - धन्याओं) का स्तनभार जघन को टुकड़ - टुकड़ कर रहे हैं चरियों की तरुणियाँ भय से [वन में घूमती] थक कर छिप गई हैं, भंगी का

भैरव जट्ट (मुनार्ट) पाट रहा है (यद्गु राजा भी) पृथ्वी पर गिरने
हे. मिर का पीटने हे तथा उनके मिर दृष्ट रहे हे ।

[७]

जलहरण :—

खुर खुर खुरि खुरि मदि वधर ख.
कलट णणगिदि करि तुरअ चलः
टटटगिदि पलड टपु धमः भरणि ।
धर चकमक कर वटु दिमि चमले ॥
चलु दमकि - दमकि दलु चल पडकवलु.
घुलकि - घुलकि करिवर ललिआ ।
वद मणमअल करड विपन्व दिअअ ।
मल हमिर वीर जव रण चलिआ ॥२०॥

जव वीर हनीर रण की ओर चला, तो खुरो से पृथ्वी को
खोद-खोद कर ण ण ण इन प्रकार शब्द करते. वधरख करके
घोड़े चल पड़े, ट ट ट टम प्रकार शब्द करती घोड़ों की टापें पृथ्वी
पर गिरती हैं, उसके आघात से पृथ्वी धंसती है, तथा घोड़ों
के चंचर बहुतमी दिशाओं में चकमक करते हैं ।
[जाडवल्यमान हो रहे हैं]: सेना दमक-दमक कर चल रही
है, पैदल [चल रहे हैं], घुलक-घुलक करते, (भूमते) हाथी हिल रहे
हैं, (चल रहे हैं), वीर हमीर जो श्रेष्ठ मनुष्यों में हैं, विपक्षों के
हृदय में शल्य चुभो रहा है (पीडा उत्पन्न कर रहा है) ।

[८]

वर्णवृतम् —

जहा भूत वेताल णचत मात्र त राए कप्रधा,
 मिथा फारफकारहका ग्वता फुले कण्णरधा,
 कआ ट्टु प्टुडे मथा कप्रधा णचता हसता ।
 तहा वीर हमीर मगाम मग्गे तुलता जुभता ॥ १८३ ॥

जहा भूत वेताल नाचते हैं, गाते हैं, कप्रधो को खाते हैं,
 गालिया अन्यविन्न शक्त करती चिल्लाती हैं, तथा उनके चिल्लान
 से माना के छिद्र पग्ने लगते हैं, काया टूटती है मन्त्रक फूटते ह
 कृम व नाचते हैं और हँसते हैं,—वहा वीर हम्मीर मगाम मे तेनी
 से युद्ध करते ह ।

—————

परिशिष्ट (२)

-: कवित्त :-

रिणथंभोर रै राणै हर्मीर हठालै रा

[१]

क्रीधा गुनह अपार, छोड दिन्ही तै आण
मे छीना नवलाख, साह मारण फुग्माण
तुरक वसै तै पोल. दंड नहा हिंदू देखै
ओथ न करो समरत्थ, नृक सरणागत रखै
ऊगवण मूर विच आथवण, मुणो राव सांसी भयो
महिमा मुगल इम उचरै, हू तो सरण आर्वायो ।

[२]

जा लग गढ रिणथंभ, जाम जामो बड गूजर
जाम बंधव वीरम्म, ताम बलि रखा असमर
मोमूसाह मुगल, आव मो सरण पयट्टो
दल. मेले पतिसाह दुगम रिणथभरि दिट्टो
वह दाम दिया सिर ऊचरां, सांगै साह स दिया मुक
हमीर कहै मूगल सुणो, ताम न अप्पा काड तुम

[३]

माग आलम साह जु वरि वीमाह त्तिरीज
 धारू वारू पात सु पण महिमा करीज
 तेर कोडि दरर तियो असी तोगारह
 आठ हमत अष्पिहो, पाण गरो अणपारह
 सगि काय नल पकी अऊँ, रिणरभरि गढ राज करि
 कनि मह हमीर सग्गिो कढ, तू काय मरै पतग परि

[४]

मूम दह गनणो साह हुसेन न आउ
 द बधव अलीखान करै वमि घास कटाउ
 बोलण सहित सनेह एह वेनती कीजे
 भाग राण हमीर नार मग्गठी दीजे
 पतिमाह पच अवरा मिलौ, मेर देव मनहु सरै
 सुरतान हुवै मंभर घणी, तौ ह तिली चम्पै

[५]

दस लग्न अस पररेत, तूक घर लग्न स सूमै
 पच लग्न पायक साह सू विण पर जूकै
 चरमै मैमत तूक घर आठ स गैमर
 हा हमीर चम्पै कस्ता अ आटा डवर
 'करि माल' पयपै बाह नल सायर त घत हुन्ही
 मुग्गताण मीचाणा तुम चिडा, कदि हमीर विथ उरुही

[६]

अरक गयण नह उगं, माह जो सीस नवाउं
हरिहर उंच श्रीसरं सुकर जो डड महाउं
दीयण धीह जव दग्, तवह जाव जीह तडककं
चंद्र मूं

... माह मांमूं पणि मूं सरणि
न मिलूं आय पतिसाह न् मो मिलियां डव धरणि

[७]

दोय राह दरगाह रहै पतिसाह हुकूमै
सात दीप दंमोत डंड भाले मिर नम्म
चूको सरं अपार वार अंकारे वगो
नरवै कुणनरपति जिको तिण पाय न लगै
अलावदीन जग दम्मणो, किमा हमीर डंवर करं
कमण काट डूगर कमण उठै जाय घट ऊवरै

[८]

देवागिर म म जाण, नहीं ओ जादव नरवै
चत्रकोट म म जाण, करन चालक न होवै
गुजरात हि म म जाण, कोडि कूडं करिग्रहियो
मंडोवरि म म जाण, हेलि मातहि वीग्रहियो
अलावदीन हमीर हुं खित किमाइ आडो खरो
रिणथंभगट रोहीजतै, पाईस अवै पटंतरो

[६]

मिलँ रिणमल कागले सुतो पतिसाह सरम्
 बलँ मिलँ वीरम्म भेन आपनै परम्
 छाहटने छतिपति हुवो तोमू अमेलो
 प्रीथीराज परवाण कियो, पतिसाहा भेलो
 की गट करै कवि 'मह' कहै जु रूव भरोमो जाहमू
 हमीर भीच थारा हमै सो मिलिया पतिसाह स

[१०]

मिलो पीयल थिर चित्तो परतापमी पण मिलो

लोप जुलवटची लपा
 चन सुर पण मिलो मिलो के ठाकुर दजा,
 करतार मिलो वेध्या मिलो डन मिलँ जलि को त्रिया
 अलावनीन ह न मिलु कन्दि कन्दि मर हैमर हिया

[११]

गडि तिलग गडि गग स्वटँ गगरो गगगणह
 ग्वटँ टोगमामन ग्वडँ ग्दो मुलताणह
 ग्वटँ गाड गज्जणो दस परव तै आवै
 चोहवाण चक्को मेळु निस मीस न नावै
 सुरताण गड दिही महिन अलावनीन अन्न अऽ
 इमीर गण विकसँ हमै तिकर जाण तडन पड

[१२]

रग पेखें हमीर पात नाचें राय अगण
 ज्यु ज्यु पे रणभणै, माह अतराज ह्वें सुण
 कीध माफ तकसीर दीध ले वीड़ो सूकर
 हेंवगा पस्वरेत नाम कोतक जावें नर
 भुज ग्रहें वाण अगरोन भरि उमैकोसा अवरि अइ
 आहणी उडाणें सव नू ताल देत खइहइ पइ हइ

[१३]

जव धारु धर पड़ीय राव पेखणो न भगो
 छभा सोह ओदकी राव चमम को स लगो
 नव थूको तंवल राव भोजन न किधो
 सोमूसाह मुगल्ल कोप करि वीड़ो लिधो
 कोमंड ग्रहे सर पाण करि गढ ओ द्रायण गड़ड़ियो
 नाकियो साह अलावदीन छत्र छेद धरती पड़ो

[१४]

एक नाल करि भल्लें माणस रें मेली
 आठ लाख ओखदी भेलें करि चूरण भेली
 भैंसा पांच हजार दिड कर आहुत दिध्वी
 सामेरी कथ नालि कोप कर पूजा किध्वी
 अलावदीन एम उवरै जो यह मीर जिन हत्थियो
 छूंटत नाल देवंगमे अरध थंभ छेदह कियो

[१५]

जेसा कुञ्जर ग्वण मोड मा भाणकह मडै,
 जेसो ठुल कुजर रवद एक एको नह छडै,
 जेसो सीस सिर नमो सीस ते छत्र परगो,
 अवर राव गईया माहि ता मोटो दिग्गे,
 हमीर राण गाढो क्रिपण दिये न दी जिम देवगिरि ।
 पाथर बढति घासति किरि पडै टाल सुरताण सिरि ।

॥ अथ दूहा ॥

रजह पलट्टै दिन वलै, दिनह पलट्टै जाहि
 नडा मिनखा धोलियाँ, वचन पलट्टै नाहि ॥१॥
 तू परदेसी पाहणो, जाजा सुणिरि जाह,
 गढि गरवातन उतरै, (ते) गढ करसा गजगाह ॥२॥
 जो जायो तसै जणै, जाजो कहै मु-जाहि,
 रिणथभ नू रूडौ करै, म्रित देसा गटिसाहि ॥३॥

॥ करित्त ॥

[१६]

उचो गाउ एक ताह हमीर ऋहरियो,
 कणै थभ ओपियो चद तारा परवरियो,
 मामध्रम निज ध्रम ध्रम हिंदुवो सभारै,
 करण नाम मनि करै जीह श्रीराम सभारै
 हमीर द्यमा प्रणाम करि अघर जायरे रग अडै,
 अलावदीन दल ऊपरी पतग जाण जाभो पडै ।

[१७]

सकैँ सेन मूरमां छणँ रज अवर द्यायो,
 धोरी धर धसमसैँ सेम पयाल न मायोः
 गोरी दल गहमह मिलँ अमंगल मेछां दल,
 सुर रथ संवाहि रहे अचग्ज अणंकल;
 हमीर चाडि रिण्थंभ छलि सुत वँजल असमर कसँ ।
 जाफो जडाग तोडँ तुरक हड़हड़ तिम संकर हसँ ॥

[१६]

असि असख असमर असंख सख सीतल न क्यौँ जल,
 अनि अनत भड भागवंत जिसा जैँसिध अणंकल ;
 रहेसि घेन वन धिसेह विधियां मूरातण,
 जांमवंत जुहवंत मच्छ कवि ओछ महा वण,

वह दीह पयंपै लाछि वह सपड़ो.....

[१६]

करैँ कोट जुहार सार गहीया साऊजल,
 कीध मुख हलकार वडैँ वपथार वीजूजलः
 मिलँ लोह सूरमा हुवा भाड़ लथो वत्था
 वाह हथ वाखाण जिसी भारथ पारत्था :
 जे चग तणो चंद नाम जड़ि साका वंध सधीर रे ।
 पड खेत मीर लेखँ पखा रहे हाथ हमीररे ॥

[२०]

छमीछर अगणमैँ मास सामण तिथ पांचम.
 थावरह कार सुर भड़ चडैँ तुरंगमः

छटै तीर पनाग मारि मन नलह १ रखै,
 चहवाण भूम गह भरै सोह मृगतन तरै
 रिणमल मिलै नलय घटै मुकर धम ओरस घटै ।
 चिरय चिख लोह जाभो चडै पट राव गढ पालटै ॥

[२१]

वरिस दुवात्स समर मटै हिदुया भृगला,
 बहै रुधिर वाहला ढलै नर बुजर ढला
 पूगी आस पलचरा हम ले चली अपच्छर,
 हार करण कज होस सीस ले बलियो सकर,
 हमीर सरग तिस हलिया कलि उपर नामो करै ।
 डग्यार लार अलावणीन तैमे एक लार दल उवरै ॥

सधन १७६८ मिति आसाढ वदि १२ लिखतू मूधडा राजर प
 देसगोक मध्ये ।

॥ इति हमीरा कवित्त ॥

परिशिष्ट (३)

मथिल कवि पंडित श्रीविद्यापति ठाकुर रचित "पुरुष परीक्षा"

के अन्तर्गत

श्री दयावीर कथा

—:❀—

दयालुः पुरुष, श्रेष्ठः सर्वजन्तूपकारकः ।

तस्य कीर्तन मात्रेण कल्याणमुपपद्यते ॥१॥

अस्ति कालिन्दी तीरे योगिनीपुरं नाम नगरम् । तत्र च निज-
भुजविजित निखिल भूमण्डलः सकला राति प्रलय धूमकेतुरनेक करि
तुरग पदाति समेतः संकलित जनपदा निर्जित विपक्ष नरपति
सीमन्तिनी सहस्रनयन जल कल्पिता पार पारावरो रक्षित दीनो-
ऽदीनो नाम यवन राजो बभूव । स चैकदा केनापि निमेत्तेन महिस-
साहि नाम्ने सेनान्ये चुकोप । स च सेनानीस्तं प्रभुं प्रकृषितं प्राण
ग्राहकञ्च ज्ञात्वा चिन्तयामास । सामर्षो राजा विश्वसनीयो
न भवति । तदिदानीं यावदनिरुद्धोऽस्मि तावन् क्वापिगत्वा
निज प्राणरक्षा करोमीति परामृश्य सपरिवारः पलायितः । पलाय-
मानोऽप्यचिन्तयन् । सपरिवारस्य दूरगमन मशक्यं परिवारं परि-
त्यज्य पलायन मपि नोचितम् । यतः :—

जीवनाय कुल त्यक्त्वा, योऽति दूरतर वृजेन ।

लोकांतर गतस्येव, किं तस्य जीवितेन वै ॥२॥

तदिहैव दयावीर हस्मीरदेव समाश्रित्य तिष्ठामीति परामृश्य
 । यवनो महिमसाहि हस्मीरदेव मुपागम्याह । महिमसाहिस्त्राच ।
 नेव, विनाऽपराध ह् तुमुद्यतस्य स्वामिनस्त्रासेनाह त्या शरणमागतो
 ऽस्मि । यदि मा रक्षितु शक्नौपि तर्हि विद्याम देहि । न चेद्विता-
 ऽप्ययत्र गच्छामि । राजोवाच । मम शरणागत त्वा यमोऽप्य
 मयि जीवति पराभवितु न शक्नोति । तदभय तिष्ठ । ततस्तस्य
 राज्ञो वचनेन स यत्रनस्मिन्न गणस्तम्भनाम्नि तुर्गे निशाकमुद्याम ।
 त्मेण तमदीनराजस्तत्रावस्थित चिन्त्वा परम सामप करि तुर्ग
 पत्नातिपत्नाघातधर्मिणीं चालयन् कोलाहलंदिशो मुग्गरयन् कियद्भि
 रपि वासरै लघित वत्मादुगद्वार मागत्य शरामारं प्रलय घनवर्षं
 पशयामाम । हस्मीरदेवोऽपि परित्रया गम्भीरं चतुर्मुखं शुन्तु-
 र्गित प्राकार शेरुत्तर पताका प्रनोधित द्वाग्धियं तुग कृत्वा ज्याघात
 ऋणरुद्रुषै वाणैर्गगन मधीकृतवान् । प्रथम युद्धान्तर अदीनराजेन
 हस्मीरदेवम्प्रति दृत प्रहित । दृत उवाच । रात्रेण हस्मीरदेव,
 श्रीमान् अन्तीनराजस्त्रामान्निशति यममापथ्य कारिण महिमसाहिं
 परित्यज्य देहि । यद्येन न ददासि तत्ता श्वस्तने प्रभाते तव दुग
 गुराघातैरचूणयशेषा कृत्रामहिमसाहिना सह त्वामन्तक पुरं
 नेष्यामि । हस्मीरदेव उवाच । रे दूत, त्वमवध्योऽसि तत रिं
 करषाणि । अम्यात्तरं तव स्वामिने सङ्गधाराभिरेव पारयामि न
 यद्योभि । ममशरणमागत यमोऽपि वीश्वितु न शक्नोति किम्पुनरन्तीन

राजः । ततो निर्भिस्सते दृते गते सति अदीनराजो युद्धमन्वद्धरोपो वभूव ।
 एवमुभयोरपि बलयोर्युद्धे प्रवर्तमाने त्रीणि वर्षाणि यावत् प्रत्यह
 मस्मृत्वाः पराङ्मुखा प्रहारिणः परामृताः हन्तारो हताश्च परम्परं
 योधा वभूवुः । पश्चाद्द्वारशिष्ट सभटे अदीन मन्ये दुर्गे प्रहीतु-
 मशक्ये च अदीनराजः परावृत्त्य निजनगर गमनाकाङ्क्षी वभूव ।
 तंच भद्रोद्यम दृष्ट्वा रायमद्द रामपाल नामानौ हस्मीरदेवस्य
 द्वौ सचिवौ दुष्टावदीन राजमागत्य मिलितौ । तावृचतुः । अदीन-
 राज. भवता क्वापि न गन्तव्यम् । दुर्गे दुर्भिक्ष मापनितम् । आका
 दुर्गस्य मर्मज्ञौ श्वः परश्वो वा दुर्गं ग्राहियिष्यावः । ततस्तौ दुष्ट
 सचिवौ पुरस्कृत्य अदीनराजेन दुर्गद्वाराण्यवरुद्धानि । तथा सकट
 दृष्ट्वा हस्मीरदेवः स्वमैनिकान प्रत्युवाच । रे रे जाजमदेव
 प्रभृतयो योधाः, परिमितबलोऽप्यह शरणागत करुणया प्रवृद्ध
 बलेनाप्य दीनराजेन समं यात्स्यामि । एतच्च नीतिविदामसम्मत
 कर्म । तता यूयं सर्वे दुर्गाद् बहिर्भूय स्थानान्तरं गच्छत । ते उचुः ।
 देव, भवान्निरपराधो राजा शरणागतस्य करुणया संग्रामे मरण
 मगीकुरुते । वयं भवदाजीव्यभुजः कथमिदानीं भवन्तं स्वामिनं
 परित्यज्य कापुरुषत्व मनुसराम । किंच श्वस्तनप्रभाते देवस्य शत्रुं
 हत्वा प्रभोर्मनोरथ साधयिष्यामः । यवनस्त्वयं वराकः प्रहीयताम् ।
 तेन रक्षणीय रक्षा संभवति यतस्तद्दक्षानिमित्तकोऽयमारम्भः ।
 यवन उवाच । देव किमर्थं ममैकस्य विदेशिनो रक्षार्थं सपुत्र कलत्र
 स्वकीय राज्य विनाशयिष्यसि । ततो मा त्यज देहि । राजोवाच ।
 यवन, मामैवं ब्रूहि । किंच यदि किञ्चिन्मन्यसे निर्भयस्थानं तदा

त्या प्रापयानि । यवन उत्राच । राजन् , मामैत्रह्नि । सर्वेभ्य
प्रथम मयैत्र त्रिपक्षगिरसि रत्नप्रहार क्त्वाव्य । राजोवाच
त्रिय पर त्रि क्रियनाम । स्त्रिय ऊचु । क्व स्वामी शरणागत-
रक्षणाथ सप्राम मगीकृत्य स्वययाग महोत्सवे प्रवृत्तोऽस्मान् वहि
ऋत्तुमिच्छति । क्व प्राणपतेरिना भूतले म्याम्याम । यत —

मा जीवन्तु स्त्रियोऽनाया, वृक्षेण च विनालता ।

माग्नीना चगतिप्राणा पतिप्राणानुगाभिन ॥३॥

ततो वयमेव वीरस्त्री जनोचित हुताशन प्रवेश माचरिष्याम ।

एवम्,—

भटै रगीकृत युद्ध, स्त्रीभिरिष्टो हुताशन ।

राज्ञो हस्मीरदेवस्य, परार्थं जीवमुज्जत ॥४॥

तत प्रभाते युद्धे वत्तमाने हस्मीरदेव स्तुरगारूढ कृत सन्नाहो
निज समट माथ महित पराक्रम कुवाणो दुगान्निस्तृत्य रत्नधारा-
प्रहारै विपक्षराजिन पातयन् कुञ्जरान् घातयन् रथान निपातयन्
क्वधान नर्त्तयन् रथिरधारा प्रवाहेणमेदिनीमलकुर्वन् शरशक-
लित सचाङ्गस्तुरगपृष्ठे त्यक्तप्राण समुत्त्र, सप्रामभूमौ निपपात
सूगमण्डल भेत्तीच उभूव । तथाहि —

ते प्रसात्ता निरूपमगुणास्ता प्रसन्नास्तरुण्यो,

गज्य तम द्रविण बहुल ते गजास्ते तुरङ्गा ।

त्यक्तु यत्र प्रभवति नर किञ्चिदेक परार्थे,

सर्वं निपतितो हन्त हस्मीरदेव

॥ श्री दयावीर कथा ॥

—❀:०:❀—

(हिन्दी)

कालिन्दी [यमुना] के किनारे योगिनीपुर नामक नगर है। वहाँ अपने बाहुबल से सारे भूमण्डल को जीतने वाला, शत्रुओं के लिये प्रलय के धूमकेतु के समान, अनेक हाथी, घोड़े तथा पैदल सेना वाला, सभी प्रतिपक्षी राजाओं की रमणियों के नयनों में अश्रु समुद्र लहरा देनेवाला, दीनों का रक्षक अदीन नामक यवनराज हुआ। एक बार किसी कारणवश वह अपने एक सेनानी महिमसाह पर क्रुद्ध हो गया। सेनानी ने बादशाह को क्रुद्ध तथा प्राणों का ग्राहक जान विचार किया, कि “क्रोधी राजा का विश्वास न करना चाहिये।” अतः जबतक मैं स्वतंत्र हूँ (गिरफ्तार न कर लिया जाऊँ) तब तक कहीं जाकर अपनी प्राणरक्षा करनी चाहिये। यह विचार वह सपरिवार भाग गया। भागते भागते उसने सोचा, कि परिवार के साथ मैं बहुत दूर तो नहीं निकल सकूँगा और परिवारको छोड़कर भागा भी नहीं जासकता क्योंकि— अपने ही जीवन के लिये कुल को छोड़ जो बहुत दूर चला जाता है, उसके जीवन का उपयोग ही क्या ?” सो यहीं दयावीर श्री हम्मीरदेव की शरण में जाना चाहिये। यो विचार वह यवन महिमसाहि हम्मीरदेव के पास जाकर बोला—देव, बिना अपराध

ही मेरा स्वामी मुझे मार टालने को उद्यत है। अतः मैं तुम्हारा शरणागत हुआ हूँ। यदि आप मेरी रक्षा कर सकें तो विश्वास दान दें। अन्यथा कहीं और जाऊंगा।” राजा बोला—मेरे शरणागत को स्वयं यम भी पराभूत नहीं कर सकता, तुम निभय होकर ठहरो। राजा के अभय दान से विश्वस्त वह यवन रण-धम्मर किले में निश्चक्र होकर रहने लगा।

जब अतीन राज को इसका पता चला तो क्रोधपूर्वक हाथी, घोड़े और पैदलों की एक विशाल सेना लेकर, जिससे बरती हिल उठे और दिशाएँ बाप उठे, रास्ता तय करता रणधम्मर आ पहुँचा और भयकर धावा बोल दिया। हम्मीर ने किले की खाई और गहरी कर, बुर्जा को शस्त्र मञ्जित और द्वारों को सुरक्षित कर बाण वर्षा से धावे का उत्तर दिया। एक मुठभेड़ के बाद अतीन राज ने हम्मीर के पास दूत भेजा। दूत ने जाकर कहा—राजन, श्रीमान अतीनराज तुम्हें आदेश देते हैं कि मेरे अनिष्टकारी महिमसाहब को छोड़ मुझे सौंप दो। अन्यथा कल प्रातः ही तुम्हारे किले की मिट्टी में मिलाकर तुम्हें महिमसाहब के साथ ही यमपुरी पहुँचा दूँगा।” हम्मीर ने उत्तर दिया—“तब, क्या करूँ, तुम अवध्य हो। इसका उत्तर तो तुम्हारे स्वामी को प्राणी से क्या तलवार की धारा से दिया जायगा। मेरे शरणागत का स्वयं यमराज भी देख नहीं सकता, बेचारा अतीनराज है क्या चीन ? दूत के फटकार पाकर आने का कारण अतीनराज क्रोधपूर्वक युद्ध की तैयारी में लगा। इसप्रकार दोनों आर लगातार तीन घण्टे

तक लड़ाई के चलते रहते हजारों योद्धा हताहत हुए। आर्मी बची सेना को देख और किले को अजंय देखकर, अदीनराज ने लौटाना चाहा। इसके भ्रमन को देख हम्मीर के दो विश्वासवादी मंत्री गयमल और रामपाल बादशाह में आकर मिले और बोले—बादशाह! कल परनों तक किला हाथ में आजाएगा, क्योंकि किले में अकाल पड़ गया है। ‘आप कहीं न जाएं।’ अदीनराज ने उन विश्वासवातकों को पुरस्कृत कर किले की नाकेबन्दी कर डाली। उस भीषण संकट को देख हम्मीर अपने सैनिकों को बोला—रे मेरे जाजमदेव आदि योद्धाओ! मेरी शक्ति मीमित है पर शरणागत की रक्षा के लिए काफी सैन्य शक्ति वाले अदीनराज के साथ लड़ूंगा। भले ही यह नीति के विरुद्ध है। अतः तुम सब लोग किले से निकल अन्य स्थानों पर चले जाओ। वे बोले—राजन! निरपराध होकर भी आप तो कर्णापूर्वक शरणागत की रक्षा के हेतु युद्ध स्वीकार करें और आपकी दी हुई आजीविका खाने वाले हमलोग आपका साथ छोड़ कायर कैसे बनें? हम भी कल आपके शत्रु को मारकर आपकी मनोरथ सिद्धि में सहायक बनेंगे। हाँ, इस बेचारे यवन को छोड़ दीजिये, ताकि रक्षा के योग्य रक्षा हो सके, क्योंकि उसी की रक्षा के लिये यह सब कुछ किया जा रहा है। यवन महिम-साहि बोला—‘देव, मुझे अकेले और विदेशी के लिए आप अपने परिवार और राज्य को नष्ट क्यों कर रहे हैं? मुझे जाने दें, राजा बोला—‘ऐसा न कहो। हा, यदि तुम किसी निरापद स्थान पर जाना चाहो तो हम अयश्य पहुंचा देंगे।’ यवन बोला—‘नहीं

देव, यह नहीं हो सकता। सबसे पूर शत्रु के मस्तक पर मेरा ही खड्ग प्रहार होगा। राजा ने कहा—किन्तु स्त्रियों को तो बाहर कर देना चाहिये तो स्त्रिया ने उत्तर दिया—स्वामिन हमारे स्वगयात्रा महोत्सव में आप बाधा क्या डालना चाहते हैं? अपने प्राणपति के बिना हम यहाँ कैसे रह सकती हैं। क्योंकि इस मसारा में वृशा ने बिना लतायें और नाग ने बिना स्त्रीगण कैसे जियें? पतिव्रताओं के प्राण तो पति के प्राण के अनुगामी होते हैं।' इसलिये हम भी जौहर करेंगी। या परोपकार हेतु प्राण विसर्जन करने वाले राजा हम्मीरराज के सुभट युद्ध में चले गये और स्त्रियों ने जौहर कर डाला।

तब प्रातः काल युद्ध शुरू होने पर अग्यारोही हम्मीर अपने सैन्य सहित वीरतापूरक किले से निकल शत्रुओं पर टूट पड़ा। घाड़ा को गिराता हुआ, हाथियों को मारता हुआ, रथों को ताड़ता तथा कत्रधा का नचाता और धरती पर सून की नदी बहाता हुआ हम्मीर युद्ध में घोड़ की पीठ पर ही वीरगति को पा सूर्यलोक गया।

हा, सबसे छोड़ हम्मीर युद्ध में काम आया। ये महल अनुपम गुणवाले हैं, वे रमणियां प्रसन्न हैं, वह राज्य धनधान्यपूर्ण है, हाथी घाड़ा से भरा है, जिसे मनुष्य शत्रु के लिये नहीं छोड़ देना चाहता।

पश्चिम (४)

भाट खेम रचित राजा हम्मीरदे कवित्त

[वान]

राजा हम्मीरदे जैतमीयोत, जैतनी उदसीयोत रौ ।
चोहवाण गहरिणशंभोर साको कियो तिणरी माख रा
कवित्त भाट खेम कहं —

मैं किता अन्याव माह मारण फुरमाया ।

मेहैं का नवलख, फोरा दिल्ली धर आया ॥

तुरक कसवैं प्रोल, डंड हिंदु उपकठा ।

उलुखा अम भाग तास वंदै दस वखा ॥

जहं लग उगै अथम कहौ राय कोई सर ।

मंगोल कहै हंमीर सुनि हम तुम मरण उगरैं ॥१॥

जाम स गढ रणथम, सीस जव लग धर ऊपर ।

जाम स ह्वैं भुज डंड, चलण ह्वैं चलु विचत्तर ॥

जाम जैत वीरम, जाम जाजा बड गुजर ।

जाम स हय गय तुरी, मग नहि करुं अचित डर ॥

गरथ देह गढ अग्निहुं, अव किम मंथौ जाहि मोहि ।

हमीर कहै मंगोल सुमन, ताम न कहु आफि तोहि ॥२॥

[वात]

पतिसाह मोलण वाणीया उपर घनं मेल्हीयो छ ।

- कवित्त -

मोलण कीयो सलाम, निमट सै सात तुसारा ॥

चढे पे हिंदु तुरक चट, सत्र सैभरवाग ।

इम पृछै रावि हमीर, कहा तै मोल्हण आया ॥

पतिसाह दिली नरेम, तुम पास पठाया ।

उलटा समद जग प्रलं हुय हकि राय कोप्पा घणा ।

रखिन गय रखिन सकै, में रिणथभवर बुटाति सुण्या ॥३॥

रे मोलण बसीठ, काय तू अणगल भरै ।

जै वर मारु तो माहि, त तौ कुण सरणै रखे ॥

जे निली पतसाहि त तौ हु सभर राजा ।

जाहि फेर चक्यै, माहि के लु सत्र बाजा ॥

अमरार समेत विगह अरु, जुम्नू नू समुहौ भिर ।

कै होय घोर सुरतान की, कै हमीर जूझैव पर ॥४॥

निली आलम साह कुमर तिस कारण दीजै ।

धारु नारु पातुर, अवर महिमा जु भणीजै ॥

लग्न टका किन दहि, देहि किनि लग्न तुसारा ।

अष्ट धार किनि दहि, जियो चाहै इ हा वारा ॥

जीव विशारै वार है, श्रग कहा पाकी चोर है ।

मालण कहै हमीर मुनि, मति है मरै पतग है ॥

मोहि देहु गजनौ , साह मो सेवा आचौ ।
 उलखा मो देह , पकर कर वाम कटाचौ ॥
 तुसरतखा मो देहु, पकर कर चेडी मेल ।
 थटा तिलग मोहि देह, नार मरहठी खेलुं ॥
 सुनि मोलण कहियो साहि सूं, रामायण भाग्य भिरु ।
 कै घोर होय सुरतान की, कै हुं हमीर भूमव पर ॥६॥
 उस नव लग्न तुग्वार, तुम घर एक न पूजे ।
 उस असी श्रहम पायक, साहि सूं कहि किम भूमै ॥
 उस चवदहमै मद्गलित, तुम घर अठै गैवर ।
 सुनि हमीर चकवै, करै क्या मेघाडवर ॥
 मोलन पृछै वाहि दे, सायर थाह न बुडि है ।
 सुरतान सिचाना नू चिरा, कहि हमीर किम उड है ॥७॥

[वात]

यू कहिनै मोलण पतिसाह आगै जाय हकीकति कही ।

—। कवित्त :—

दे न डड मानै न सेव, लेनि ढिली नित धावै ।
 ग्रहै मुंछा करवर कसै, राव साम गण न्यावै ॥
 सागै उलखान . नार मंगौ मरहठी ।
 अरु मंगौ गजनौ , रहौ चहुवाण जु हठी ॥
 असवार समेत विग्रह अरै, भुभुन कुं समहौ भंसै ।
 गढ उपर राव हमीरदे, हुलै चंवर हर हर हसै ॥८॥

गिड्यौ गोट गवनौ सिड्यौ ढिली ममानौ ।
 गिड्यौ उच मुलतान , गिड्यौ खोरखर सुरसानौ ॥
 गिड्यौ बग तिलग , गिड्यौ उवह नाल देसा ।
 गिड्यौ कद कात्ररू, गिड्यौ ईडरउ पदेसा ॥
 इतरा सिड्यौ अलावदी , रणधभौर मझड अड्यौ ।
 हमीर राउ विकसै हमै , तिकर एक नडौ पड्यौ ॥६॥
 देवगिर म म जान , जान म म जादु नरवै ।
 गुजगत म म जान , कण चालुक न यह है ॥
 माडोरर म म जान , सु तौ हेला स प्रह्यौ ।
 चीत्रोड म म जान , सुतौ कूडै कर प्रह्यौ ॥
 त् अलावनीन हमीर ह , द्विद कपाट आडौ भरौ ।
 रणधभ द्रुग लागत ही, सु अत्र जानवौ पदतरौ ॥७॥
 ठयौ हमीर पेखनौ तरण नचै राय अगण ।
 सीम धुनै अलावनीन , आवटै गिण रिण ॥
 पग नेपुरै ऋण मुणै , फान सात्रन तर कयर ।
 हय गय परयर पटिग चड्यौ चाहै नरवै नर ।
 करि ग्रह कमाण गलि प्रज कर छत्र बेह समुहौ तरगि ।
 उडा न सीह पातुर हनिग, तार दत खरहर परिग ॥११॥
 छत्रधार नहि भईय, साग वय्यौ सिर उपर ।
 कर ग्रह रहियन टड, जानि गोरग्य ध्यान धर ॥
 राव गन भगि हरिग, अमर सुरतान पणठ्यौ ।
 आन तीर वच्यौ, लिख्यौ महिमा माय लिख्यौ ॥
 मन धरन रोस धारु घर, नही हमीर भोजन ज्यौ ।

ता करण असपति राय हो, तीर महम सुकीर्यौ ॥१२॥
 जुद्ध राम रामनह, जुद्ध वालिह सुग्रीवहि ।
 जुद्ध करन अर्ज्वनह, जुद्ध दुसासन भीमहि ॥
 पुहिमराय मुनि जुद्ध, काल वीती चहुवानहि ।
 धीर एम कटियहि, छत्र ऊपर सुरतानह ।
 पर हसै ण्ह चित्र धरि अरीयन जिम पडर रयन ।

भगडौ पुरानौ उवडौ अडि नरिंद हमीर सुन ॥१३॥
 जु सिर कनक मणि रयण, मोर माणंकह मुंड्यौ ।
 जु सिर वास कुसमह निवास, छिन इक न छ ड्यौ ॥
 जु सिर सिरानहि नयव, तास सिर छत्र वचठौ ।
 जु सिर पंच भोआल, माहि उदवंतौ दिठौ ॥
 हमीर राउ गाढौ कृपन, देन राम जिम देउगिर ।
 पाहन वहंत घठेव कर, सु परीया चंद सुरतान सिर ॥१४॥

[व्रात]

जाजौ वड गुजर प्राहुणौ थकौ आयौ हुतौ तिण नू
 राजा हमीर आपरी वेटी देवलदे परणाई थी । सु
 परण मोड वाधे हिज काम आयो । देवलदे राणी होद
 माहे बुड मुई ॥

॥ वूहा ॥

जाजा तू चाल जाहि, तू परदेसी प्राहुणौ ।
 म्हे रहस्या गढ माहि, गढ जीवन्ता न देवस्या ॥१॥

जाजौ कहै सु जाय, जे नर जाया तिहु जाणा ।
माल परायौ राय, माई मेल्है साकडै ॥२॥

— कवित्त —

मिलौ गणौ रायपाल, मिलौ बाहुड विकसतौ ।
भाजदेव पिण मिलौ, मिलौ भोज रातू रतौ ॥
रीरमद पिण मिलौ, मिलौ बट राउत जाजौ ।
चन् सूर पिण मिलौ हीन नहि भरित राजा ॥
तेतीस कोट ऊबै पिण मिलौ, अवर मिलौ महिपत दियो ।
हमीर कटै ए मत मिलौ स कर करमरहै भरहियौ ॥१५॥

॥ दूहा ॥

सिंध विमन मापुगस बचन, फेल फलति इन्वार ।
त्रिया तेल हमीर हठ, चटै न दूजी वार ॥१॥

— कवित्त —

घायस विक्रम राय, बुद्धि विन सद्ध बयारह ।
अनुहु मुज कराड, रलै दछिन भ डारह ॥
मटल कद भलै, सीह गुजर रै अगणे ।
ग ग बुट जैचंद मुओ, भिडीयौ न भयगम ।
हमीर मरस हमीर न्रिय, कर कल्ल रणयभ छल ॥
अंसै करै न काहु करहै न कोई मु कोई राय रविचव्रतल ॥१६॥
तेरह से तेपने, माह मुद ग्यार [स] मगल ।
अलाप्रनीन छत्रपती, लीयै रणयंभ करि कल ॥

सुणि मध्यान हमीर, चित्त हर चरणै लायै ।
 दरवाजे सत प्रोल, ईस कूं सीस चढायौ ॥
 जैत सुतन जुग जुग अमर, कहै 'खेम' जस निमिल पढ्यौ ।
 खग ग्रान भेदव कालकै, सु पातिसाह गढपर चढ्यौ ॥१७॥

संवत् १७०६ रा फागुन सुदि ६ शुक्र गढ रणथंभोर री
 तलहटी भाट सुखानंद ग्यासा लखाउत रा वेटा कानै
 लिखायौ ।

सोलह सै पचीस गिन, नवमी वदि गुरवार ।
 जेठ मास रिणथंभ गढ, लियो अकबरसाह जलाल ॥ १ ॥

॥*॥ समाप्त ॥*॥

हम्मीरायण के — पाठान्तर

गाथा १२८ से उदयपुर की प्रति प्रारंभ होती है ।

(एक गाथा का अंतर है)

१२६ मेल्हाणउ न्यिउ, निसि नी त्रलि हुउ धारधार ।

१२७ भउ सहु , अघरिज , लोक तणइ उछन अपार पुण्य
उपरि तिह कीध अचार ।

१२८ यधावा, देगइ गोयरइ ।

१२९ (हउ) घरि ऊपनउ भलइ चहुआग, रिणभउर ऊपनउ
राउ ।

१३० धरइ, आपइ, समापइ, सिणगारियउ, भलइ, पाहुणउ,
अम्ह तणउ जन्म ति आज सुधय ।

१३१ रिणभउरि, कोमीमे कोमीने ।

१३२ पउलि, त्रिनर ।

१३३ धरियइ, अरि पइ पराण, वाचइ दरघू रिणराहली,
गदि उपरि चालइ ढीरुणी ।

उदयपुर की प्रति में १३६ वां छं —

अत्र समन्वया भूमण भली, त्रेय सहु आव्या जावा भणी ।

गदि गात्त कीधउ उछाह सिणगारियउ रिणभउर मादि ॥१३६

- उद्यपुर की प्रति मे नं० १३७, १३८, १३६ तीन पद्य नहीं हैं ।
- १४० आसिस द्वियड, जेत्र हुडे, ग्विमड तृ ह्मीरडे चहुयाण ।
- १४१ सहुअड मिली, वयावड आपणड, भरी भरी अंखियाण
- १४२ सुलितान, परधाना नड जुगती जाण ।
- १४३ तेड्ड सुलितान, चड, साभलि राउल तीरइ जाड, पूछुड,
- १४४ ंगयड गढ साहि. भेटियड उछाहि, ंकीषड पाहुणा
पणड ।
- १४५ जायड, जेत्र, इतु=तू, रक्ष्या ।
- १४६ निसुणि=इहा ।
- १४७ जे चेरुं तरणि, सइवर, ती ।
- १४८ राव, वारहट नड, आविस्यड, विदेसि ।
- १४९ मोल्ह, कही सुणी न ।
- १५० घणा, तोनड, अधिकड वड मंडाव्य, साभरि तूं कणि ।
- १५१ मोल्ह, हुंत ।
- १५२ जड इन, होम्यड ।
- १५३ मोल्ह । वरी, तड लेइ, अग्नि जो ।
- १५४ तड ।
- १५५ बोलावियड, भाट जाइ नड ।

इसके बाद की गाथा उद्यपुर वाली प्रति में नहीं है :—

१५६ चालुक न नु हड, गाढिम, नि=रि, नड, रिणधम दुग्ग
लगातयह, हिव लम्भड पट्ट तरउ ।

१५७ रिणिधमडरि हम्मीग्ने रेणि ।

१५८ वेउ, (डम) कहड राय हम्मीर ।

१५९ तो सरिया म्हारड घणा, सेव कग्ड निमत्तीस ।

हू हमीर कलियड डमउ, तोड नमामउ सीम ॥१५६॥

१६० नड मांचियउ, राय चहुआण, करां ।

१६१ आगलि, घणउ, तुम्ह=अम्ह, तणउ ।

१६२ तणउ, न्हाल ।

१६३ चौपाई उदयपुर जाली प्रति मे नहीं है —

१६४ ढाल, ज नी, तडि=तिहा

१६५ छड, डम लोहेके उत्तराद्र के बटले मे उदयपुर की प्रति
मे इससे उपर वाले लोहे का उत्तराद्र लिया है ।

१६६से १७३ तक पद्धडी छत्र के बटले उदयपुर जाली प्रति
मे 'चग्पई' लिया है, तथा पाठान्तर भी अशुद्ध है पर
५ के बटले ४ छत्र यहाँ लिये जाते हैं उदयपुर की प्रति
मे १७० यां पत्रांक नहीं है ।

सिद्धा, चिंदा मदिमा जाणि, कछुचाहा भारी मकुआण ।

चारड घोटाणा अति म्भार, चाला यघेला मिन्हा अपार १६०

भाडिया गूडर तुंअर असंख, सुभट अनेरा आया असंख ।
 गुहिलउत गुहिलाणा उराह, पंवार पधास्या अति उद्दाह ॥१६३
 मालकी सींधल अति मडाणि, चदेला चाउड़ चाहुआण ।
 राठउड़ मेवाड अनड कु भ. छत्रिस कुली मिलि तिणि आरंभ १६४
 हस्मीर राउ हरखियउ अपार, दीठा भलेरा अति भूकार ।
 मंडलीक मउड़धा राणो राणि, सहु मिली आव्या तिणि ठाणि॥
 १७१ दिया, ठाह=उद्दाह. वंडायुध दीया, महिमासाहि
 उताच्या ।

१७३ जत्र, राय चहुआण, उद्दाह=सुजाण ।

१७४ कोलाहल हूअउ, दियउ दमामउ, लिया, चडियउ ।

१७५ नड हुवा=देवड, तिणि, फिरणा ।

१७६ पठाण=पाला. गढि चिडिया धणी स्यउं जुता ।

१७७ जे, भाखरि=तापरि, हुवा ।

१७८ लेहु वे लेहुवे करड अयार ।

१७९ जिम देखउ ।

१८० नउ, हुंती, राणि, मंडाणि ।

१८१—१८२, पद्यांक उदयपुरवाली प्रति मे नहीं है ।

१८३ आलम ऊभो=रिणि ऊपरि ।

१८४ पड्या हलोल, इसका त्रुटक चतुर्थ चरण उदयपुर की
 प्रति से पूरा किया गया है ।

- १८५ महुअरी, त्याड नादि जरी कइवार न=तेन ।
 १८६ अणीमार, विछटड, इम जेजड ते भिडड सरीर ।
 १८७ सुभटा नट, मडगल अयार, लियड ।
 १८८ वूणी धरा हडवर, घणा=भला, जणा, द्विज अतर दाखड
 आपणा ।
 १८९ हुयड, सार दुहेली धार ।
 १९० ग्रहियड, वाम=ठाम ।
 १९१ जेडत्र हुइ रणधभउर-धणी ।
 १९२ गी=नी, सटड=नुटा, इक, मलिक खान=कटक
 मिलि ।
 १९३ प्राणड, पुरावड खुन्कार, तिणि धार ।
 १९४ रिण उपरि जोत्रइ चढिं, मडाण=विनाण, सड=साम्हड
 १९५ कखड, आन्या, पाटड =मारड ।
 १९६ इम, विम भाजमि ।
 १९७ तिणि पाड्या=पाड्या एकणि, चमक्यड आलम,
 प्राण ।
 १९८ पूरथड, तिणि वरे, हुड, नांसड आवड
 १९९ मूथणी ।
 २०० मन माहि ।
 २०१ दुगा द्वि =सही गड ।

- २०२ जल वाल्या, स्यउ गडे. टाली थर्ड ।
- २०३ नित पाउल. हड़हड़हड़, धारु वारु नाचट पात्र. पृठि
दिखालइ वे वेम्या गात्र ।
- २०४ भल्ला, मारड=वेऊ. नड मीर, सोई=तीर ।
- २०५ तिसउ. काकउ=काई, एज=गरि ।
- २०६ ऊआरा भलउ, तेऊ=कोड, तुम्हि=जे ।
- २०७ तो नड. वेउ, ड्य=यार, सीगणि ।
- २०८ सीगणि, दड, खाचइ तिम कुटका हुइ सात, सीगणि ।
- २०९ राड, तिणि, नाचइ ।
- २१० ०वेमारी पात्र, ०पडिया वे गात्र ।
- २१२ ०विग्रह नी सीम हुवा. आधी. काड साहिव तडं मांड्यउ
वास (चतुर्थपाद) ।
- २१३ साभरिवाल, न दड तो नड मुरिताण. किमइ पराण,
०सरावइ कारणि कवणि ।
- २१४ त्या नड ।
- २१५ सवि. देइ=कहइ ।
- २१६ तउ. राड, पातिसाह ।
- २१७ मोनडं धरि मुकलावड सही, आयउ पाहुणउ, महत देइ
मोनडं ताजणउ ।

- २१८ गढे, रामचंद्र ।
- २१९ तउ रहियउ रि अभाग, चलायि ष चडलाइ ।
- २२० कदे = वली ।
- २२१ विमासी ज्या तेडगा राय = मोकल्या, रउपाल देव ते
मोकल्या, ठामि ।
- २२२ हउणहार इम जोइ मनि कृडा पेउ तणा जोउइ ।
- २२४ छइ, अन्ह, वेसाडइ तामु ।
- २२५ अन्ह शउ परधान, घरि मोकलड देइ उहुमान ।
- २२६ किया गड लीधा विणु [किम] जाइसि मिया ।
- २२७ तउ गड द्या तुन्ह त्रिण पग्माणि, हमी हमी चँ लिखि
फुरमाण ।
- २२८ हन्ह विचि, [इन लो गाथाओं में २ पत्र नुटक को
उत्पत्तपुर की प्रति से पूर्ति किया गया है] ।
- २२९ मनि भूला नइ चृका मान त्या मूरिख पीमसियड
कीम ।
- २३० ते, आल्या छ इहा, हरिख्यउ ।
- २३१ पातिसाहि तुन्ह कहियउ कियउ, मागी कू यगी, मना वी
- २३२ जाणी, वी ।

- २३३ हमीर = ईह. पिरथउ. रउपाल, करइ > कह ।
- २३४ बोलह. थन नखावि सहुवइ पूरउ हुउ, तो नइ प्रधानउ ।
- २३५ मवि नीचा, रउपाल - नइ मिलिया, निवसी ।
- २३६ परिघाउ, करता, जिउं तुरकां ।
- २३७ क्रीयउ. राजा द्रोह मिल्या पतिसाहि ।
- २३८ कोसीसा थी जोवइ ।
- २३९ अणर्चीतवी हुवइ, दासि देवि कुण कीधी घात, प्रथाने,
ले गया ।
- २४० को, जियांरइ, दियइ, वंका, जीतइ जाइ न को ।
- २४१ गाढउ, दिन्ह मइ, देसु, जिस्यइ, करेसु ।
- २४२ मरण नीड़उ वेगउ अछइ. किणही, उवारि ।
- २४३ रइ = नइ ।
- २४४ जे नवि = जेह, नीभागियउ न रेवि, ति, वले. वि ।
- २४५ राय चहुआण, वउलावडं ।
- २४७ पाहुणउ ।
- २४८ तिहुं, पराया खांहि ।
- २४९ जेम = कई ।
- २५० भगतावीउ = ओलग्यउ, महिमा सह हस्मीर, हुवउ इसउ,
इम बोलइ हस्मीर [चतुर्थ पाद] ।

- २११ यह गाथा उज्यपुर की प्रति म नहीं है ।
- २१२ तीरड, तिमकरि, हुउ ति ।
- २१३ हमीर = चहुआण, मीर = पठाण ।
- २१४ गना, विणठड वाण्यइ रिग्याडिया, लेवि ।
- २१६ गाडउ = रोमारउ रिणमलि रियउ समाधान, अधिक
दुग कोठार रियउ, जउहर, रागि ।
- २१७ तउ, ज्यउ धंस ज्यउ ।
- २१८ तीणड टीकउ, दियउ, रिणथभउरि तुम्हि होज्यो नाथ ।
- २१९ नेज्यो वृमान, महेमरी = वाणिया, जाति सूरमा
वाधउ फान ।
- २२० सिरामणि, त्यांकी मा साधिइ, जाताव्या घोडा,
मुकलाव्या वापइ बे पूत ।
- २२१ मीरा, ०सहु तिणि समड, मारइ ठाणि ।
- २२२ तोरार, तीणड, लोवे नहर किया, रावल गनि उल्ल
पोलड तिया ।
- २२३ जमहर मांडरा वारु भला, बलण ।
- २२४ का ३ ना, तेउ ।

- २६५ तिहा, उपमा तिहा, चुड़ला भलकइ निला ।
- २६६ सोवन, रं, कठि, उर, पाअे, हण भुणकार ।
- २६७ आपणड़ा उजाड प्रिया, वे पख उजवालड ते त्रिया ।
- २६८ अतेवरि तिसी, राजकुमरि तीसी ।
- २६९ पड़ियउ पलउ, साजति समुदाउ ।
- २७० मोनडं वित, ढोल कमखा = ढोलिया खाट, तंवाल् ।
- २७१ गरथड भरी बलइ ते भली, कृंकृ तणी कतीफा जूजा
पट्टकूल, सउड़ तुलाई ।
- २७२ इकवीस भूमि, हणुमत, प्रजाली, इसउ वीतग वीतउ
रिणथ्रुभि ।
- २७३ कोइ न उगरियउ तिणि ठाड, उत्त्यम, लहउं, ०नउ हुवउ
सघार ।
- २७४ सघलउ मुकलावउ, पउलि, करड, ०तुं गढ पृठि ज देइ
चाहुआण गढि वहिला आणेजि ।
- २७५ रा > ना, देउ, कोठारिड, मोकलावइ ।
- [उदयपुर की प्रति के पद उलट-पुलट हैं] ।
- २७६ रहि जोवइ = रहियउ जाड, वीसइ > मोटा, वीरसदे
जाजउ मीर, राखस्यां तउं ।

- २७७ या कुण - वधव सुणि, ठाड, हिय जीवी नड करस्या काड
- २७८ प्राहुणो > देवडड ।
- २७९ हुअड, चहुआण, न्चिड > हाथि ।
- २८० उभट ल्यड पहु ईस ।
- २८१ हि था, तिहा - जिरे ।
- २८२ माहि, चडड, जोहार ।
- २८३ जवव, गहगहियड, तिणि > यड ।
- २८४ करी, मीर, वावव ।
- २८५ भणणिन पेसेवि ।
- २८७ जिहाकड, लिखमी ।
- २८८ लेना छरमी लाभ, इस्यड, दे वाला नाह ।
- २८९ गजा, मान, घाल्यावे त्रिन्हड, इसड ।
- २९० धसमसड, म्दारड ।
- २९१ सहीयड = हुवड, नमियड, पुणि, जड, वारा मूग उर
माकल करा ।
- २९२ जेवड, घणा - जेड ।
- २९३ सुणड - नड, प्राक्रम त्रिमाडर, आपहणी जाइस्यारड
गलड ।
- २९४ यह तोहा उत्रपुग की प्रति मे नहीं र ।

- २६५ थारा पीठ ग्वड्यउ हम्मीर, तिहि तीर. भिरि सिरि,
कीयउ = पड्यउ, ईसर ।
- २६६ रा माथा हेठि, जाड, कुल रखवालउ राख्यउ भाउ ।
- २६७ प्रभान तव मेली ।
- २६८ सुरिताण, ग्वायड, रणमल, पूछ्यउ पातिसाहि, तुम्हारउ,
इणि ।
- २६९ आगेहि, आया ज्या बंध, दिग्वाइड ।
- ३०० यउ, मूअउ, इणि ठाई, साभरिवाल, कुण हिंदू हॉन्ग्यइ
इणि कली ।
- ३०१ तव साहिव, खान नड कह्यउ, वाहि ।
- ३०२ श्लोक—भाट करड कडवारो, बोलइ चिरद अप्पारो ।
धन जणणी हम्मीरो, सरणाई विजइ पंजरो सूरु २६२
- ३०३ सभारि, उचित्य देड खुदिकार ।
- ३०४ सिरि ऊपरि देखी करी, पूछइ, कहि न. जो हूअउ ।
- ३०५ जि, वडठउ, = जउ, वडजल दे = जिणिकुलि ।
- ३०६ इस दोहे के अंतिम ३ चरण और ३०७ वें दोहे का एक
चरण मिलाकर एक दोहा उदयपुर वाली प्रति मे कम है ।
- ३०७ मूउ = हुअउ, भुआल ।
- ३०८ केम = काथ. महियलि अविचल जा लगड. सूरिज वू
अरु जाम ।
- ३०९ की = नी, करउ समाधउ भाट ।
- ३१० नालह = भाट, वड मुक = आपउ, मोकलावि नड
कड = रड ।

- ३११ मनि गमड = छड हियड ।
- ३१२ देस मंडार = गडि घर गाम, फ्यामि, तूठइ, द्रोह
कियउ ते ।
- ३१३ बेसासघातकी जे नर होइ, मारी जट - नारी जाड ।
- ३१४ जेहनड ण हुता, प्राम - आम, पीडा लेता, गउ
दिराडइ ।
- ३१५ गउ, पास किराड > वाणिअे, नागियउ > खराड ।
- ३१६ रउपाल, धकी - तणी ।
- ३१७ भाट कहइ प्रभु दे निषाय रिणमल रिउपाल - ग्या,
नहि को - नवि कोई ।
- ३१८ जयइर > जेड, प्राम - मान, त्याह भाहि कीधा ण काम,
दीयउ, खाल, कहावड तीणड ठामि ।
- ३१९ आचडिया आप, कियउ, सगापुरि ।
- ३२० राजपूत, प्रवाहाउ, गय, कीयउ ।
- ३२१ धन पीता, मात्र = पिता पक्ष अजुआलउ आपणड,
धन धन ।
- ३२२ जिह > ज्यांरी, जग उपहरा हुआ तिणि ठामि ।
- ३२३ नीधउ भाट नइ घणउ ज मान, मामि, वडर ।
- ३२४ गमाइण, साभल, होड ।
- ३२५ त्रिण हुअइ समड भातमि, त्रिनिकही = त्रिनड ।
- ३२६ गजिनी, युगि, काया, भुणता ।

सादृल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के प्रकाशन

राजस्थान भागती (उच्चकोटि की शोध-परिचय)

भाग - आँ ३, ८) प्रत्येक

भाग ४ में ३, ६) प्रति भाग

भाग २ (केवल एक अंक) २) मय

नेम्बिनोरी विशेषांक—५) मय

पृथ्वीराज राठोड जयन्ती विशेषांक ५) मय

प्रकाशित ग्रन्थ

१. कल्याण (कृतकाव्य ३) २. वरमगाठ (राजस्थानी कहानिया ३॥)
३ आर्भ पटकी (राजस्थानी उपन्यास) २॥)

नए प्रकाशन

- | | |
|----------------------------|-------------------------------|
| १, राजस्थानी व्याकरण | १३, मलयवल्चवीर प्रबन्ध |
| २, राजस्थानी मय का विकास | १४, जिनराजमूरि कृति कुमुमाजलि |
| ३, अचलदान गीर्वाणी वचनिका | १५, विनयचन्द्र कृति कुमुमाजलि |
| ४, हम्मीरायण | १६, जिनहर्ष ग्रन्थावली |
| ५, पद्मिणी चरित्र चौपाई | १७, धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली |
| ६, दलपत विलास | १८, राजस्थानी दूहा |
| ७, डिगल गीत | १९, राजस्थानी वीर दूहा |
| ८, परमार वंश वर्णन | २०, राजस्थानी नीति दूहा |
| ९, हरि रम | २१, राजस्थानी व्रत कथाएँ |
| १०, पीरदान लालस ग्रन्थावली | २२, राजस्थानी प्रेम-कथाएँ |
| ११, महादेव पार्वती बेल | २३, चदायण |
| १२, सीतारामजी चौपाई | २४, दम्पति विनोद |
| | २५, समयमुन्दर रासपञ्चक |

पता :—सादृल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर

विशेष नाम सूची

भंदीनराज	५७, ५३, ५४	कोठारी	२७, २९
भलावदान	७, १०, ११, १५, १८, ६, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ६३, ६५	कोल्ह	६
भलोखान	४५	खीम	६
भट्टखान, उडुर्खा	५, ७, ८, ९, ११, १२, ६०, ६२	खेतल	६
भट्ट	१२	येम भाट	६०, ६६
भहमद	१२	गजनौ गजतपा	४७, ६२
भालाखान	१२	गवड	१९
भासड	६	गामरु	४, ९, ३५
इतरउ	८३	गहिल	२०
दच	६३	गुहिलत्र	२०
ऊज्जिषि	१७	गोहिल	२०
उर्दसी	६०	गोड	४७, ६३
कटवाहा	१९	गुन्नरान, गुजगरा	१८ ४० ४६, ६३
कमपातुकर	१८, ६३	कन्नकोट	४६
कनडा	२१	चैल	२०
कामदी	८	चन्द्र	१२
कालु मलिक	७	चहुभाणा	१, २, ४ ५, ७ ८, ९
कावर	११	चहुयाणा	१४, १५, १६
कुध	२१	चाहवाण	१८, २०, २५, २८
केनठ	७	चहुवाण	३०, ३१, ३२, ३६, ४७, ५१, ६०, ६२
		चीत्राड	६३
		चाल	४०

छाहड दे	४७	निलग	६२, ६३
जजजल	३९, ४०	नुर	१९
जयतिग दे, जैतभी २, ८, ६०, ६६		तेजमी	६
जलालदीन	१८	नोन्हण	६
जाफरखान	११	यट्टा	१७, ६२
जाजा, जाज देवदंड }	८, २८, ३१,	दाफर	१२
जाजमदेव (बड़गूजर) }	३२, ३३, ३४,	दाहिमा	१९
	३५, ३६, ४९,	दिली	४१, ६१
	५१, ६१, ६४, ६५,	देन्हण	६
जाह (ण)	६,	देवदंड	देसो-जाजद देवदंड
जिहर मलिक	१२	देवगिरि	१८, ४६, ४९, ६३, ६४
जैमिष	७०	देवलदे	१७, २७
जैचन्द	६५	धरमली	६
जामिय	१९	धार	१७, २४, ४५, ४८, ६१, ६३
जाडिय	१९	धाधट	६
जाहड	६	धीर	६
जोडीयभाण	१९	धुधट	६
टेली, टेली ७, ११, १३, १४	२४,	नयणड	७
	४०, ४८, ६२, ६३,	नरवद	७
डोर नामद	८७	नरमी	७
जाजखान	११	नाह	१६, ३४, ३५
जातरखान	१२	निकुंज	११

निरोज	११	महिमामाहि }	४ ६, ९, १०, २३,
निसरतखान	११, ६०	महिमसाहि }	२४, २८, २९, ३२,
पद्मसा	६		३५ ३६, ४४, ५२
परमार	२०	महमद	५३, ६३
पानल	६	माडव	१२
पाण्डण	६	मलधार	१७
पासड	६	मलभगिरि	३७
पाथल	६	महेसरी	४०
पुडिमराय	६४	माफर	३०
पूनड	६	मालव	११
प्रमधउ	६	मुलवान	४०
प्रोर्थ राज	४७	मुज	४७, ६३,
बङ्गुजर	६४	मुकिआण	६५
बारडड	१९	मुगल	१९
बोडाणा	१९	मेरा	४४
बाजुर्लाखान	१२	मेलउ	१९
बुँदी	३, २६, २७, ३६	मोमूमाहि	७
भाड भाट्ट यास	१, ६, ७ १२		४४, ४६, ४८
	१३ २०, २६, २८, ३३ ३७	भोटहण मोहन,	६, ६१, ६२
भाटिय	१९	भोटहट (भाट)	१६
भाम	६	मुहिमद मीर	११
भोजडव	६७	मल्ल	१२
भडावर	१८, ४६, ६३	योगिनीपुर	५२
यन्लकवि माल	४५, ४७		

रणधर्मवर, रणधर्मि, रणधर्मोर	१, ६,	धीरमठे	२, ८, २७, २९, ३०, ३२,
रिणधर्मोरठ,	७, ८, ९, १०, ११,		३३, ३४, ३५, ३६, ६०
रिणधर्मरि, रणस्तम	१३, १४, १५,	मंगरि, मंगर	५, ६, १०, १७, ३२,
	१८, २२, ३०, ३१,		४५, ६१
	३५, ४४, ४५, ४६,	मदा	१९
	४९, ५०, ५३, ६०,	मादठ	६
	६१, ६३, ६६	मिन्त	२०
रणमल, रिणमल	३, २५, २६, २७,	मुवानन्द माठ	६६
	२६, ३४, ३६, ४७।	नोलेकी	२०
रठपाल, रायपाल	३, २५, २६, २७,	मयालात	५, १७
	३६, ५४	न्युवलिक	१२
रायमाल	५१, ५४	हवमी	२३
रामपाल	६५	हम्मोर, हम्मोरठे	१, ४, ५, ६, ७,
रुक्मदीन	१२	हमीरि, हम्मीरा	८, ९, १०, १४, १५,
रामचंदि	२५	हम्मीर देव	१६, १७, १८, २१,
लखाउन	६६		२३, २६, २७, २८,
वस्तु	६		२९, ३०, ३१, ३२
वदा	१९		३४, ३५, ३६, ३७,
वाधेला	१९		३८, ३९, ४०, ४१,
वारु	१७, २४, ४५, ६१		४२, ४३, ४४, ४५,
विक्रम	६५		४६, ४७, ४८, ४९,
विजकीरति	३७		५०, ५१, ५३, ५४,
वीरम	६, ४४, ४७		५५, ६०, ६१, ६२,
वीसल	६		६३, ६४, ६५,
वीलहण	६	हाजी काल	१२
वीरु	६	हामल दे	३
वेलउ	७	हीरापुर	८
वैजल	५०		

शुद्धा-शुद्धि पत्र

दो शब्द —

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	८	हमर हठ	हमीर हठ
११	१६	एव	एव
११	२०	उपयुक्त	उपयुक्त
भूमिका —			
४	४	हम्मीर पर	हम्मीर पर आक्रमण किया ।
५	१५	की	कि
७	६	रणक्षेत्र	रणक्षेत्र
७	१६	करन	करने
८	५	रोशनी डाली है,	रोशनी डाली है कि तु
६	११	लें ।ता	लें, तो
१०	२	अस्पष्ट	अस्पष्ट
१०	१५	इस्लीम	इस्लामी
१०	१७-१८	राज्य माग	राज्य-माग
१४	१३	पटातर	पटातर का
१५	३	दृष्टव्य	द्रष्टव्य
१५	१०	मारा	मारा तो
१८	१	छटा	छठा
२०	४	निश्चष्ट	निश्चेष्ट

२८	२१-२२	खाई सामान	खाई का सामान
२६	१	उस	इस
२६	२४	पूछा तो	पूछा तो अत्मायो ने
३३	६	चारा	चारो
३३	१३	रविवार था	रविवार थी
३३	१६	स्वामि	स्वामी
३६	२	प्रयोग	उपयोग
३६	२२	उसमे	उसे
३६	८	सेना विनाश	सेना का विनाश
३६	१३	हम्मीरायण	तो हम्मीरायण
३६	१६	मे से	मे से है,
४०	७	शम्भु	शम्भु,
४४	११	एक सा ।	एक सा है ।
४६	७	सूहम्मदशाह	सुहम्मद शाह
६२	१५	किन्तु हम्मीर	हम्मीर
८६	६	भी	भी हैं
८७	३	गणेशचन्दन	गणेशचन्दन से
८६	१४	अपूर्व युद्ध	अपूर्व युद्ध के पश्चान्
६२	१०	व्य वहाँ	वह वहा
८८	४	अवतार की ।	अवतार लिया ।
१०४	६	बुद्धि.	बुद्धि
१०४	६	हेतीरिव	हेतोरिव
१०५	६	भटाः शतं	भटा शत
१०४	१३	मुखापगा	मुखापगा
१०८	१२	आर्यावर्त	उसने आर्यावर्त

१११	१०	अमीर खुसरो	अमीर खुसरो ने
११७	१८	पराजित होके	पराजित हो कर
११६	२०	दृष्टव्य	दृष्टव्य
१३४	११	उद्धरणादि	उद्धरणादि द्वारा हमने

हम्मीरायण —

१३	१४	सभलि	सभलि
२८	१	मू हउ,	मू, हउ
२६	१७	मालावउ	म लावउ
३१	६	भूमिया	भूमिया
३०	२०	१८४	२८४
३४	६	मेलडइ	मेलडइ
३६	१८	कविला	कविता
५१	१४	हमीरा	हमीर रा
५३	१५	०गगन	०गगन
५३	१६	हमीर देव	हमीर देव
५५	१०	भटे रगीकृत	भटरगीकृत
५७	१५	सौप	सौप
५८	०	लौटाना	लौटना
५६	१	सबसे पूव	सबसे पूर्व
५६	६	जिये	जिये
५६	१७	सवस्थ	सर्वस्थ
८०	१२	राजस्थानी	राजस्थानी
८०	अतिम	सादूल	सादूल
८०	अतिम	चीकानीर	चीकानेर